बोनी, निराई, छँटाई, छिड़काव, कटनी और अँगूरों का चुना जाना।

हमेशा वही का वही। कभी कोई परिवर्तन नहीं। ढेरों वर्ष आये और चले गये, जवान बूढ़े हुए और बूढ़े मर गये। बोनी, निराई, छँटाई, छिड़काव, कटनी और खेती होती रहती। और उसके बाद ? बस वही का वही क्रम। और बाद में भी कभी कोई परिवर्तन नहीं। प्रत्येक वर्ष पिछले वर्ष की तरह, प्रत्येक मौसम पिछली मौसम की-सी और प्रत्येक पीढ़ी अपने से पिछली पीढ़ी जैसी होती थी।

जब मौसम खराब होता देहाती कौटुम्बिक मामलों में लगे रहते, यानी मुक़दमे लड़ते। फाण्टामारा में ऐसा एक भी परिवार नहीं है जो एक दूसरे से सम्बन्धित न हो। छोटे गाँवों में, जैसा कि नियम है प्रत्येक परिवार एक दूसरे से सम्बन्धित होता है और इसलिए उनके स्वार्थ भी आपस में एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। इन स्वार्थों को लेकर वे उन्हीं पुराने-धुराने, कभी फ़ैसला न होनेवाले झगड़ों के बारे में पीढ़ी-दर-पीढ़ी कभी समाप्त न होनेवाली मुक़दमेबाजी करते हैं। और इन झगड़ों और मुक़दमेबाजियों का एक मात्र उद्देश्य रहता है किसी कँटीली झाड़ी पर अपना स्वामित्व स्थापित करना। झाड़ी जला दी जा सकती है, पर उससे कुछ मुक़दमे का अन्त नहीं हो जाता।

कोई चारा नहीं था। प्रतिमास बीस सॉल्डी (एक सिक्का), तीस सॉल्डी, गर्मियों में सौ सॉल्डी महीना तक बचाया जा सकता था, जो वर्ष के अन्त तक लगभग तीस लीरा (सिक्का) तक पहुँच जाता। पर तब कोई बीमारी या कोई दुर्घटना आ पड़ती और दस वर्ष की बचत चट कर जाती। फिर से बीस सॉल्डी, तीस सॉल्डी, सौ सॉल्डी महीना करके शुरु करना पड़ता। फिर कुछ गड़बड़ हो जाती और तब फिर से थोड़ी थोड़ी जोड़ने की शुरूआत होती।

इस बीच नीचे मैदान में कई परिवर्तन हुए पर फाण्टामारा पर उनका कोई असर न हुआ। वहाँ की धरती ऊसर, खुश्क और पहाड़ी थी। छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटवारा की हुई उस ऊसर जमीन का बन्धकों द्वारा भीषण दोहन हो रहा था। दो-चार एकड़ से किसी भी किसान के पास ज्यादा जमीन न थी।

अस्सी वर्ष पूर्व फ़ुचिनो झील के सुखाये जाने से मार्सिका का जलवायु स्थायी रूप से इस हद तक उग्र हो गया था कि पास-पड़ोस की पहाड़ियों पर

होनेवाली खेती नष्ट हो गई। जैतून के कुञ्ज बुरी तरह से बर्बाद हो गये। अंगूरों को बिमारी लग गई और उनका पूरी तरह से पकना रुक गया। हिमपात प्रारम्भ होने से पहले ही, अक्तूबर के अन्त में उन्हें चुन लेना पड़ता था। ये अंगूर एक खट्टी, और तेजाब जैसी तेज शराब बनाने के काम में आते थे। और दुर्भाग्यवश यह शराब इसे पैदा करनेवाले अभागे किसान ही को अधिकाश में पीना पड़ती थी।

फ्युसिनो झील सुखाकर जो जमीन खेती के काम में लाई गई थी वह इटली की सर्वश्रेष्ठ और उपजाऊ जमीनों मे से थी; परन्तु उस पर होनेवाले शोषण से इन हानियों की क्षति पूर्ति नहीं हो पाती। सारा इलाका बिलकुल गुलामी की दशा को पहुँच गया था। प्रति वर्ष इससे उत्पन्न होनेवाली विशाल सम्पत्ति उत्पादन क्षेत्र में न रहकर राजधानी पहुँच जाती थी। रोमन कम्पाना और टस्कानी प्रान्त के एक विशाल हिस्से के साथ ही फ्युसिनो की ८००० एकड़ जमीन पर एक कथित राजकुमार (प्रिन्स) टोर्लोनिया का अधिकार था।

यह राजकुमार, पिछली शताब्दि के प्रारम्भ में एक फ्रान्सिसी रेजीमेण्ट के साथ रोम आनेवाले टोर्लोन नामक किसी 'औवरनाट' का वशज था। पहले उसने युद्ध पर और तब शान्ति पर सट्टा किया। तब उसने नमक का सट्टा लिया। उसने १८४८ और १८५९ की लड़ाइयों और उनकी सुलहों पर, तथा बोअरबॉन्स वंश के उत्थान पतन पर भी सट्टा किया। १८६० के बाद वह फ्युसिनो झील को खाली करने के लिए मुहाना बनानेवाली एक फ्रेंको स्पेनिश-नैपोलिटन कम्पनी का अधिकार पा गया। बहुत ही सस्ते दामों उसने हिस्से खरीदे। नेपुल्स के बादशाह द्वारा कम्पनी को प्रदान की गई सुविधाओं के अनुसार टोर्लोन को नई जमीन की उत्पन्न नब्बे वर्ष तक उपभोग करने का अधिकार मिल गया। लेकिन पिडमोण्टेसी वश को राजनैतिक सहायता देने के उपलक्ष मे यह अधिकार अनन्त कालीन कर दिया गया और उसे ड्यूक की और बाद मे राजकुमार की उपाधि प्रदान की गई। इस तरह पिडमाण्टेसी वश ने उसे वह दिया जो स्वय उनके अधिकार मे भी नहीं था।

अपनी ईश्वरीय सम्पत्ति की रक्षा के लिए इन दिनों कथित राजकुमार टोर्लोनिया के पास निजी हथियारबन्द रक्षकदल है। एक चालीस मील लम्बी नहर

उसकी विशाल जागीर को घेरे हुए है। उस पर पहुँचने के लिए एक पुल पर होकर जाना पड़ता है, जो रात मे उठा लिया जाता है।

लगभग दस हजार ग़रीब किसान इस पर काम करते हैं। कथित राजकुमार टोलोनिया अपनी जमीन समीपवर्ती बैरिस्टरों, डॉक्टरों, सॉलिसीटरों, अध्यापकों और अमीर किसानो को किराये पर उठा देता है, जो या तो बाँटे पर या स्वय ही ग़रीब किसानो को रोज-मजूरी पर रखकर खेती करते हैं। फ्युसिनो तलहटी के सभी प्रमुख स्थानों मे, हर सवेरे किसानों का एक बाजार लगता है, जहाँ पर खेती करानेवाले किसान दिन में एक मर्तबा अपने मजूर नियुक्त करते हैं। किसानों को अपने काम पर पहुँचने के लिए नित्य तीन से आठ मील तक चलना पड़ता है।

फ्युसिनो से राजकुमार टोलानिया को मिलनेवाली अपार सम्पत्ति और किसानों की विपत्ति मे चौंका देनेवाला वैषम्य है। फ्युसिनो से प्रतिवर्ष चालीस हजार टन मीठा चुकन्दर, पन्द्रह हजार टन नाज और दो हजार टन सब्जियाँ उत्पन्न होती हैं।

फ्युसिनो का चुकन्दर यूरोप के एक अति प्रमुख शक्कर बनानेवाले कारख़ाने के लिए कच्चा माल है, परन्तु इसे उत्पन्न करनेवाले किसानों के लिए तो शक्कर एक विरल सुखोपभोग की वस्तु ही रहती है। वह उनके घरों मे, वर्ष में केवल एक बार ईस्टर-केक्स के रूप में पहुँचती है। फ्युसिनो का लगभग सभी अनाज शहर में डबल-रोटियाँ, केक और बिस्कुट बनने चला जाता है। वहाँ कुत्ते और बिल्लियाँ तक उसे खाते हैं, लेकिन अनाज पैदा करनेवाले किसानों को तो वर्ष मे अधिकतर दिन मक्का की रोटी ही खानी पड़ती है। फ्युसिनो से उन्हें अधपेट मजदूरी भर मिलती है, इतनी मजदूरी जिससे वे अपने आपको किसी तरह टिकाये रख सकें।

एक समय था जब किसान अमेरिका जा सकते थे। युद्ध से पहले फाएटामारा के कुछ निवासियों ने सचमुच अर्जेण्टाइन और ब्राजिल में क़िस्मत आजमाई थी। जिन्हें सफलता मिली वे फिर फाएटामारा नहीं लौटे और पड़ोस मे ही, जहाँ उनकी बचत से लाभ होने की सभावना थी, बस गये। जो असफल रहे फाएटामारा लौट आये और फिर से वहाँ की पशुतुल्य गुरबी के आधीन हो

गये। उनके पास समुद्र-पार बिताये हुए सुखमय जीवन के सपने लुप्त स्वर्ग-दृश्य की तरह बचे रह गये थे।

कई वर्षों से यहाँ का जीवन स्थिर होते हुए भी, पिछले साल कुछ सप्ताहों में एक के बाद दूसरी लगातार होनेवाली घटनाओं ने फाएटामारा को जड़-मूल से हिला दिया। ये घटनाएँ उसी समय समाचार-पत्रों तक नहीं पहुँचीं। कुछ महीनों के बाद ही इटली और विदेश में इसके सम्बन्ध में अफवाहें उड़ने लगीं।

फाएटामारा, जो गाँव नक्शे तक पर न था, शीघ्र ही सार्वजनिक चर्चा का विषय बन गया। कई लोग तो इसे इटली के एक बड़े हिस्से का—खासकर दक्षिणी इटली का—प्रतीक समझने लगे।

मैं कह ही चुका हूँ कि मेरा जन्म फाएटामारा के पड़ोस में ही हुआ था और बीस वर्षों तक मैं वहीं रहा था। परन्तु कई वर्षों तक दूर रहने के कारण मैं इस विचार को रोक न सका कि फाएटामारा में हुई कही जानेवाली ये घटनाएँ बिलकुल बेसिर-पैर की हैं। कि वे हुई ही नहीं हैं, और कि दूसरी कई कहानियों की तरह इस या उस कारण से महज गढ़ी जाकर, इस एकाकी गाँव से संलग्न कर दी गई हैं, ताकि उनका पता लगाना और भी कठिन हो जाय। मैंने उसी समय वहाँ से सीधे समाचार पाने की कोशिश की, पर मेरे सभी प्रयत्न निष्फल रहे।

यह सब कुछ मैं भूलने ही लगा था कि एक अप्रत्याशित घटना हुई। एक रात जब मैं देर से घर लौट रहा था मैंने अपने मकान के प्रवेश द्वार पर तीन किसानों को जिनमें दो पुरुष और एक स्त्री थी, एकत्रित बैठे देखा। उनके शिरोवस्त्र और सन के थैलों से मैंने उन्हें एकदम पहचान लिया। वे फाएटामारा के रहनेवाले थे। जैसे ही मैं पहुँचा वे उठ खड़े हुए। गैस के उजाले में मैंने उनके चेहरे देखे। हाँ, वे फाएटामारा ही के थे।

भूरे, ठूँठ से, डरे हुए चेहरे और रीछ-सी धीमी गतिवाला एक लम्बा, पतला बेहद बूढ़ा आदमी मेरे सामने खड़ा था। उसके पीछे, उसी की छाया में, उसकी स्त्री और बेटा खड़ा था। वे भीतर आये, बैठे और अपनी कथा प्रारम्भ की।

आरम्भ बूढे ने किया। तब उसकी स्त्री कहने लगी। फिर बूढा सुनाने लगा, तब उसकी स्त्री, फिर बूढा तब उसकी स्त्री और तब उनका लड़का। समाप्ति भी फिर बूढे ही ने की।

जब उसने समाप्त किया सवेरा हो चुका था।

उन्होंने जो कुछ कहा वह इस पुस्तक मे है।

लेकिन सबसे पहले दो बातों का स्पष्टीकरण आवश्यक है। इस कहानी में और दक्षिणी इटली के लोकमगत साहित्यिक वर्णन में जमीन-आसमान का अन्तर है। सभी जानते हैं कि पुस्तकों में दक्षिणी इटली एक सुखी और रम्य प्रदेश है, वहाँ के किसान मगल-गीत गाते हुए प्रसन्नतापूर्वक काम पर जाते हैं, सुन्दर और स्थानीय परम्परागत पोशाक पहने देहाती लड़कियाँ उनके राग में राग मिलाती हैं, पास-पड़ोस के वन-प्रदेश में बुलबुल गाती रहती है।

लेकिन फाएटामारा में ऐसा कभी नहीं हुआ।

इस कहानी में 'स्थानीय रग' ढूँढनेवाले को निराश होना पड़ेगा। उसे न तो फाएटामारावालों की परम्परागत पोशाक के बारे मे कोई शब्द मिलेगा और न स्थानीय बोली के बारे मे ही। फाएटामारा मे जगल है ही नहीं। वास्तव मे, सारा पहाड़ी-प्रदेश एप्पिनाइन्स के अधिकाश भाग की तरह सूखा और उजाड़ है। चिड़ियाँ बहुत थोड़ी हैं और बुलबुल तो बिलकुल ही नहीं। स्थानीय बोली में बुलबुल के बारे मे एक शब्द तक नहीं है। किसान न तो मिलकर गाते हैं और न अकेले ही। नशा करने पर भी वे नहीं गाते, और काम पर जाते हुए तो बिलकुल ही नहीं।

वे गाते नहीं, कसमें खाते हैं। क्रोध हो या प्रसन्नता, किसी भी बलशाली भावना को प्रदर्शित करने के लिए वे कसम खाते हैं। उनके सौगन्ध खाने मे भी किसी तरह की कोई विचित्रता नहीं है। वे इस दिशा मे फ्लोरेण्टाइन्स-वालों की अलकारिक कल्पना से भी शून्य हैं। वे सदा अपने दो तीन परिचित सन्तों के नाम की ही और सदा उन्हीं-उन्हीं शब्दों में सौगन्ध खाते हैं।

मेरी जवानी के दिनों फाएटामारा में गानेवाला केवल एक ही व्यक्ति था। वह मोची था और एक ही गीत जानता था, जिसका सम्बन्ध एबिसीनिया की लड़ाई से था। गीत यों शुरू होता था .

ओह, बाल्डीसेरा,

कालों से रहना होशियार ।

साल के बारहो महीने, सवेर से साँझ, मोची की उम्र के साथ ही निरन्तर बढ़ती जाती, एक शोक सूचक ध्वनि मे दुहराई जानेवाली इस सलाह से फाण्टामारा में यह भय फैल गया था कि अंत में कहीं मूर्खता, अन्यमनस्कता या महज बेपर्वाही से ही जनरल बाल्डीसेरा का अन्त न हो जाय। कई वर्षों के बाद हमें मालूम हुआ कि हमारे जन्म से पहले सचमुच ही यह दुर्घटना घट चुकी थी।

दूसरी बात है भाषा सम्बन्धी। मैं किस भाषा में यह कहानी कहूँ ?

क्षण भर के लिए भी यह न सोचा जाय कि फाण्टामारावाले इटालियन बोलते होंगे। हमारे लिए इटालियन लैटीन, फ्रेञ्च या एस्पेरेण्टो की ही तरह स्कूल में सीखी हुई एक भाषा है। इटालियन विदेशी भाषा के समान है, एक मरी हुई भाषा, एक ऐसी भाषा जिसके शब्द-भण्डार और व्याकरण की उन्नति से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है और न कोई सम्बन्ध है हमारी विचार-शैली या भाव-प्रकटीकरण से ही।

मुझसे पहले भी अवश्य ही अन्य दक्षिण वासियों ने इटालियन भाषा बोली और लिखी है। यह ठीक वैसा ही है जैसा कि शहरों में जाते समय हम साफ़ जूते, कॉलर और टाई पहनते हैं। लेकिन हमारी ओर एक दृष्टिपात ही हमारा कष्ट प्रकट करने के लिए काफी है।

इटालियन ज़बान हमारे विचारों को निर्बल और कुरूप बना देती है। अनुवाद से भावों की मौलिकता नष्ट होकर वे ओजहीन तथा नीरस हो जाते हैं। यदि अनुवाद करना पड़े तो आदमी अपने आपको ठीक से व्यक्त नहीं कर सकता। अगर यह सच है कि किसी भी भाषा में विचार प्रकट करने से पहले उस भाषा में सोचना सीखना चाहिये, तो हमें इटालियन बोलने में होनेवाली कठिनाई से यह स्पष्ट है कि हमें उसमें सोचना नहीं आता। दूसरे शब्दों में, इटालियन संस्कृति हमारे लिए विदेशी संस्कृति है।

परन्तु चूँकि हमारे पास दूसरों को अपनी दशा समझाने का और कोई साधन न होने से और अपने बारे में समझाने का यह प्रश्न हमारे लिए

जीवन-मरण का प्रश्न होने से—हमें स्कूल में सीखी भाषा में अनुवाद करने का अच्छा से अच्छा उपयोग करना चाहिये। दर अस्ल हम चाहते यह हैं कि सभी फाएटामारा का किस्सा जान जाएँ।

यद्यपि हम एक उधार ली हुई भाषा में अपनी कहानी कहते हैं, परन्तु उसे कहने का ढग हर हालत में हमारा अपना ही रहेगा। और कम से कम यह फाएटामारा की कलाओं में से एक है, जिसे बचपन की लम्बी रातों में करघे की तालबद्ध गति के साथ हमने सीखा है।

कहानी कहने की कला, एक शब्द के बाद दूसरा, एक लकीर के बाद दूसरी और एक वाक्य के बाद दूसरा वाक्य रखने की कला, बुनने की प्राचीन कला के सदृश है· उस पुरानी कला के समान जिसमें एक धागे के बाद दूसरा धागा और एक रंग के बाद दूसरा रग सफाई से, सलीके से, सँभाल कर रखा जाता है, ताकि सब साफ-साफ देख सकें। पहले गुलाब का तना दिखाई देता है, फिर पत्तियाँ, तब कली, और अन्त में पँखुड़ियाँ। आरम्भ से ही दीख जाता है कि यह गुलाब का फूल होनेवाला है, और इसी कारण से शहराती हमारी कृति को भद्दी और असस्कृत समझते हैं। परन्तु क्या कभी शहर में जाकर हमने उसे उनके हाथ बेचने की कोशिश की है? कभी उन्हें बाजार में भी रखा है? कभी शहरातियों को हमारी तरह बोलने के लिए कहा है? नहीं, कभी नहीं।

तो, प्रत्येक आदमी को अपनी बात अपने ही ढग से कहने का अधिकार रहे।

ज्यूरिच, ग्रीष्म, १६३०

इग्नाज़ियो सिलोनी

—एक—

पिछले साल एक जून को फाएटामारा में पहली बार बिजली नहीं जली। दूसरी, तीसरी और चौथी जून को भी फाएटामारा बिना बिजली के ही—अँधेरा—रहा।

ऐसा कई दिनों और महीनों तक जारी रहा। अन्त में फाएटामारा फिर से चाँदनी रात का अभ्यस्त हो गया। चाँद के उजाले से बिजली के उजाले तक आने में पूरे सौ वर्ष लगे थे : इन सौ वर्षों में तेल और पेट्रोल का जमाना भी था। परन्तु हमें बिजली के उजाले से फिर चाँद के उजाले में ले जाने के लिए केवल एक ही साँझ काफी थी।

जवानों को यह किस्सा नहीं मालूम, पर हम बड़े-बूढे जानते हैं। पिड-माएटेसी शासन के पूरे सत्तर वर्ष हम दक्खिनी किसानों के लिए जो नये परिवर्तन लाये वे कुल दो थे बिजली और सिगरेट। बिजली तो उन्होंने फिर से ले ली, और रही सिगरेट सो उन्हें पीनेवालों का दम घुटे, हमारी बला से। हमारी चिलम भली और हम भले।

पहले-पहल बिजली का कट जाना हमारे लिए कोई अचम्भा नहीं होना चाहिये था, फिर भी वह अचम्भे से कम नहीं था।

फाएटामारा में, चूँकि कभी किसी ने बिजली के लिए कुछ खर्च नहीं किया, वह भी एक प्राकृतिक देन की तरह ही समझी गई थी। महीनों किसी ने उसका बिल नहीं चुकाया। सच तो यह है कि उगाही करनेवाला ही मासिक बिल और हिसाब न चुकानेवालों के नाम नोटिस तामिल करवाने नहीं आया था। कागज के जो टुकड़े वह बाँट जाता उनका उपयोग हम पाइप—चिलम—साफ करने के लिए करते थे। पिछली बार जब वह आया तो किसी तरह बहो-सलामत बचकर निकल गया। यह उसका सौभाग्य ही था कि बस्ती के बाहर उसे गोली न लगी।

वह वीरता की अपेक्षा विवेक को ही ज्यादा ठीक समझता था। फाएटामारा में वह उस समय आता जब कि आदमी काम पर चले जाते और केवल स्त्रियाँ और बच्चे ही घर रह जाते थे। वह बेहद विनम्र था। एक मूर्खतापूर्ण और मनानेवाली मुस्कराहट के साथ वह अपने कागज के टुकड़े बाँट जाता।

'यह ले लो,' वह कहता—'इससे तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। घर-गृहस्थी में कागज का टुकड़ा हमेशा काम ही आता है।'

लेकिन खाली विनम्रता काफ़ी नहीं थी। एक दिन नीचे, हमारे स्थानीय शहर में—फाएटामारा में आना तो उसने बहुत पहले से ही छोड़ दिया था—एक गाड़ीवान ने उसे बिलकुल साफ-साफ कह दिया कि यदि एक गोली उस पर छोड़ी गई तो वह इन्नोसेंजो ला-लेग्गी—यह उसका नाम था—पर व्यक्तिगत न होकर आमतौर से करों पर होगी। लेकिन यदि गोली निशाने पर ठीक लगी तो खात्मा होनेवाली चीज कर न होकर वह, इन्नोसेंजो ला-लेग्गी ही होगा। इसलिए उसने आना ही बन्द कर दिया था और किसी को उसका अभाव न खटका। फाएटामारावालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करना उसने बेकार समझा।

उसने कहा—यदि जुएँ पकड़नी सम्भव हों तो क़ानूनी कार्रवाई निश्चय कारगर हो सकती है। परन्तु ऐसा करने का कोई क़ानूनी साधन न होने से बिजली काट देना ही एक मात्र उपाय है।

बिजली पहली जनवरी को काटी जानेवाली थी। तब बढ़ाकर पहली मार्च कर दी गई, फिर पहली मई और तब पहली जून तक बढ़ाई गई। अन्त में पहली जून को बिजली काट दी गई।

स्त्रियों और बच्चों के ध्यान में, जो कि घर पर रहते हैं, यह बात बहुत देर में आई। लेकिन काम पर से घर लौटते समय हम आदमियों का ध्यान इस ओर अवश्य गया। हम में से कुछ कारखाने गये थे और बड़ी सड़क से घर लौट रहे थे, कुछ कब्रिस्तान गये थे और पहाड़ की ओर से घर आ रहे थे, कुछ बालू खोदने गये थे और नाले की ओर से आ रहे थे, और दूसरे, जो दिन मजूरी के लिए गये थे, सब ओर से घर लौट रहे थे। अँधेरा बढ़ता

जा रहा था। पड़ोस के गाँवों की बिजलियाँ हमने जलती देखीं। लेकिन फाएटामारा वृक्षों, झाड़ियों और घूरों में एक रूप हो अन्धकार में खो रहा था। हम एकदम समझ गये कि माजरा क्या है। अचम्भा होते हुए भी यह अचम्भा नहीं था।

बच्चों के लिए यह अच्छी खासी मनाक़ थी। हमारे बच्चे मजा लूटने के अवसर बहुत कम पाते हैं, इसलिए जब कभी मौका मिलता है वे उसे नहीं छोड़ते, जैसे—किसी मोटर साइकल का गुजरना, गधों की प्रणय-चेष्टा या किसी चिमनी का जल उठना

जब हम लौटे तो बेचारे जनरल बाल्डीसेरा को निराश पाया। गर्मियों में देर तक वह अपने घर के सामने सड़क की बिजली के उजाले में जूते दुरुस्त किया करता था। बच्चों के एक झुण्ड ने उसकी टेबल घेर ली, उसकी कीलें, और रांपी और बटार, उसका मोम और सन और चमड़े के टुकड़े बिखेर दिये और गन्दे पानी की बाल्टी उसके पावों पर उलट दी। वह पास-पड़ोस के सभी सन्तों—देवी-देवताओं के नाम ले लेकर जोर शोर से शाप दे रहा था। और जानना चाहता था कि इस उम्र में उसने ऐसा क्या किया है कि आधा अन्धा बेचारा वह सड़क की रोशनी से भी वंचित कर दिया जाय, और कि बादशाह हम्बर्ट इस उपद्रव के बारे में क्या सोचेंगे?

यह अनुमान लगाना कि बादशाह हम्बर्ट इसके बारे में क्या सोचेंगे, कठिन था।

हाँ, बहुत-सी स्त्रियाँ भी थीं जो जोर जोर से शिकायत कर रही थीं। नाम लेने से कोई फायदा नहीं। वे या तो अपने घरों के सामने जमीन पर बैठी थीं, या बच्चों को दूध पिला रही थीं या खाना पकाने में लगी थीं, और उनमें से कुछ इस तरह बिलख रही थीं मानो हाल ही कोई मर गया हो। वे बिजली कटने पर रो रही थीं मानो अन्धकार ने उनकी विपत्ति अधिक दयनीय बना दी हो।

मैं और माइकेल ज़ोम्पा नेरीटा सोर्छानेरा के शराबखाने के बाहर टेबल के पास आकर रुके ही थे कि ग्यासोर्वा लोसुर्डो अपनी गधी के साथ जिसे वह थान पर चरने ले गया था, आया। और थोड़ी ही देर बाद पॉञ्जियो पिलाटो अपनी पीठ पर गन्धक की पिचकारी लटकाये आया, और तब ऐन्टोनियो-रनाल्लो और बाल्दोविनो स्कारपा, जो कलम कर रहे थे, और ग्वासिंटो

बारलेट्टा, वेनेडॉ सेएटो, सिरोली रोएडा, पेपासिस्टो और दूसरे वे जो बालू खोदने गये थे आ पहुँचे। आते ही हम सब वही पुरानी बातें दुहराकर, जिन्हें पहले सैंकड़ों बार कह चुके थे, क्योंकि ये बातें नहीं बदलतीं—बिजली के बारे में और नये करों, पुराने करों, जिला करों, सरकारी करों—सभी तरह के करों के बारे में बातचीत करने लगे। एकाएक हमारा ध्यान एक अजनबी की ओर गया, जो बाइसिकल लिये हमारे बीच खड़ा था। उसके बारे में यह अन्दाज लगाना कठिन था कि ऐसे समय वह अजनबी कौन हो सकता है।

वह बिजली कम्पनी का आदमी नहीं था, और न जिला-अफ़सर ही था, न वह पुलिस थाने ही का आदमी था। अच्छी तरह हजामत बने हुए उत्कृष्ट चेहरे और छोटे से गुलाबी मुँहवाला वास्तव में वह एक बहुत ही चपल युवक था। उसका हाथ, जिससे वह अपनी बाइसिकल का हत्था पकड़े था, छोटा और छिपकली के निचले हिस्से जैसा चिपकनेवाला था। वह सफेद स्पैट्स* पहने था।

हमने बातचीत बन्द कर दी। अवश्य ही वह नाटा आदमी किसी नये कर की घोषणा करने आया था। इसमें किसी तरह का कोई सन्देह हो ही नहीं सकता। न इसमें कोई सन्देह था कि वह अपना समय पूरी तरह से बर्बाद करेगा और यह कि उसके कागज के टुकड़े भी इर्नासेक्सो ला-लेग्गी के कागजों का ही अनुसरण करेंगे। अनिश्चय केवल इस बात पर था कि दुनिया में ऐसा क्या बाक़ी बचा है जिस पर नया कर लगाया जा सके? हमने बहुत सिर खपाया पर किसी के खयाल में कुछ न आया।

इसी बीच आगन्तुक ने दो-तीन बार एक मूर्खता-पूर्ण और बकरी की-सी आवाज़ में पूछा कि कोई उसे वीर सॉर्सानेरा की विधवा के घर का रास्ता बतला सकता है।

वीर सॉर्सानेरा की विधवा वहीं थी। वह शराबखाने का दर्वाज़ा अपने शरीर द्वारा, जो गर्भ-धारण से बेढंगा हो रहा था, रोके खड़ी थी। उसके पति की मृत्यु के बाद से यह उसका तीसरा या चौथा गर्भ था। उसका पति उसके लिए चाँदी का तमगा और एक पेन्शन छोड़ गया था, पर ये तीन-चार गर्भ उसने नहीं ही छोड़े थे। एक वीर पति की विधवा होने के कारण सॉर्सानेरा

* स्पैट्स—पाँवों को गर्म रखने के लिए जूतों पर पहिना जानेवाला एक मोटा कपड़ा।

को अक्सर महत्त्व-पूर्ण व्यक्तियों से व्यवहार करने के मौके आते रहते थे। एक बार, स्थानीय नगर में एक पवित्र राष्ट्रीय उत्सव के समय, मॉर्सानेरा को मन्च पर बिशप (धर्माध्यक्ष) के पास जगह दी गई थी। उसकी सन्तानों की शक्ल सदा मनहूस और डरावनी हुआ करती थी। धर्माध्यक्ष अन्धा नहीं था।

जब उसने उससे पूछा कि क्या उसने फिर से शादी कर ली है तो उसने इन्कार किया और बोली कि नहीं, शादी नहीं की। धर्माध्यक्ष ने साश्चर्य उसके गर्भ की ओर जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता था, सकेत किया। मेरीटा ने असावधानी से उत्तर दिया—यह मेरे मृत पति का उत्तर-दान है।

इससे यह तो स्पष्ट है कि मॉर्सानेरा महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ व्यवहार करने में कुशल थी। उसने अजनबी को मेज के पास बैठने की जगह दी। अपनी जेब से कागज़ों का एक बड़ा पुलिन्दा निकालकर उसने मेज पर फैला दिया।

कागजों को देखकर हमारा रहा-सहा सन्देह भी दूर हो गया। वे कागज कर सम्बन्धी ही थे। पर यह सवाल अभी रह ही गया था कि कर कौन सा था?

अजनबी ने बोलना शुरू किया। सुनकर हम एकदम समझ गये कि वह शहर का रहनेवाला है। यहाँ वहाँ से कुछ शब्द हमने समझ भी लिये, पर हमारी समझ में यह नहीं आया कि वह कौन-से कर के बारे में बोल रहा है।

देर हो रही थी। हम अपने-अपने औज़ारों सहित—कुदाली और फावड़े और दन्ताली (जड़ा) और बेलचे और गन्धक की पिचकारी और ग्यासोनी लोसुर्दो की गधी सहित—वहाँ थे। हममें से कुछ चले गये। वेनेर्डो सेप्टो, ग्यासिन्टो वालेंटा और पेपासिन्टो चले गये थे। वाल्डोविनो स्पारपा और पर्साग्निनो स्नोक्च्या भी थोड़ी देर तक उसका भिनभिनाना सुनकर चले गये, ग्यासोनी लोसुर्दो ठहरना चाहता था, लेकिन गधी ने जो थकी हुई थी, उसे घर जाने को बाध्य किया।

उस शहराती के सिवा वहाँ हममें से तीन और रह गये थे।

वह बोलता रहा, लेकिन एक शब्द भी किसी की समझ में नहीं आया। मेरा मतलब है कि यह किसी के पल्ले न पड़ा कि नया कर किस पर लगा है या ऐसी क्या चीज है जिस पर कर लगाया जा सकता है।

अन्त में वह आदमी चुप हो गया। वह मेरी ओर—क्योंकि मैं ही उसके सबसे अधिक समीप था—मुड़ा और एक पेन्सिल तथा कोरा कागज बढ़ाकर बोला :

'कृपया, दस्तख़त कीजिये।'

वह हमारे दस्तख़त क्यों करवाना चाहता था ? हम उसकी बात के कुल जमा दस शब्द भी नहीं समझे थे, और अगर समझे होते तब भी ऐसा था ही क्या जिसके लिए हम दस्तख़त करते ?

उसने मेरे पासवाले आदमी की ओर कागज-पेन्सिल बढ़ाई और फिर एक बार कहा :

'कृपया, दस्तख़त कीजिये।'

मेरे पासवाले ने भी कोई जवाब नहीं दिया। शहरवाला तीसरे आदमी की ओर मुखातिब हुआ और फिर एक बार कागज पेन्सिल बढ़ाकर बोला .

'पहले तुम दस्तख्वत करो। यदि तुम दस्तख़त कर दोगे तो दूसरे भी कर देंगे।'

वह मानो पत्थर की दीवाल से बोल रहा था। किसी ने हूँ-चूँ तक न की। हमें यह जरा भी नहीं मालूम था कि यह सब किस बारे में है, इसलिए हमें क्या पड़ी थी, जो अपने दस्तख्वत करते ?

वह आदमी जरूर ही गुस्सा हो गया था। उसकी आवाज पर से हमें लगा कि वह हमारा अपमान कर रहा है। लेकिन उसने करों के बारे में कुछ नहीं कहा। हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह नये कर के बारे में बोलना शुरू करे, लेकिन वह दूसरी चीजों के बारे में ही बोलता रहा। एक बार उसने अपनी बाइसिकल मे बँधा चाबुक खोला और उसे मेरे चेहरे के सामने हिलाते हुए चिल्लाया .

'बोलते क्यों नहीं हो ? क्या तुम बहरे हो ? जब तुमसे कुछ कहा जाता है तो जवाब क्यों नहीं देते ? दस्तख्त क्यों नहीं करते ?'

मैंने उसे समझाया कि हम मूर्ख नहीं हैं। हमारी समझ में नहीं आया कि वह कह क्या रहा है, और यह कि, बावजूद उसके बोलने के हम निश्चय-पूर्वक जानते हैं कि वह एक नये कर के बारे में आया है।

मैंने उससे कहा—'हम इसके बारे में पहले से ही जानते हैं। हम इसके बारे में काफी अच्छी तरह से जानते हैं। पर हम यह कर नहीं दे सकते। पहले से ही मकान पर कर है, और अंगूरों के बगीचों पर कर है, और गदहे पर कर है, और कुत्ते पर कर है, और चरागाह पर कर है, और सूअर पर, और गाड़ी पर और शराब पर कर है, और इतना बहुत है। अब और किस नई चीज पर तुम कर लगाना चाहते हो?'

उसने मेरी ओर इस तरह से देखा मानो मैं फारसी भूँक रहा हूँ। वह हतप्रभ हो गया और बोला :

'हम बोल रहे हैं पर एक दूसरे को समझ नहीं रहे हैं। हम एक ही भाषा बोलते हैं और फिर भी वह भाषा एक नहीं होती।'

यह बिलकुल सच था। यह सम्भव नहीं कि शहराती और किसान एक दूसरे को समझ सकें। वह शहरवाले की तरह बोलता है, शहरवाले की तरह बोले बिना वह रह ही नहीं सकता, वह और किसी तरह से बोल ही नहीं सकता। और हम किसान थे। हमारे ढंग में, यानी किसानों की रीति से हम प्रत्येक बात समझते थे। अपने जीवन में मैंने हजारों बार देखा है कि शहरवाले और किसान बिलकुल भिन्न-भिन्न हैं। अपनी जवानी के दिनों में अर्जेण्टाइन में पम्पास* पर था। वहाँ मैं स्पेन-वासियों से लेकर इण्डियन्स तक सभी जातियों के किसानों से बोलता था, और हम एक दूसरे को इतनी आसानी से समझ जाते थे मानो फाण्टामारा ही में हों। शहर से आनेवाले एक इटालियन ने, जिसका सम्बन्ध कॉन्सुलेट कौन्सिल से था, मैं हर रविवार को बात करता था। बिना एक दूसरे को समझे और कई बार तो बिलकुल उलटा मतलब समझे ही हम बातें करते थे।

इसलिए जब उस अजनबी ने फिर से अपनी दास्तान शुरू की तो मुझे कुछ भी आश्चर्य न हुआ। उसने हमें समझाया कि वह करों के बारे में नहीं बोल रहा है, करों से उसका कोई भी सम्बन्ध नहीं है, और वह फाण्टामारा एक दूसरे ही मतलब से आया है, और पैसा देने की तो कोई बात ही नहीं है।

---

* पम्पास—दक्षिण अमेरिका के वृक्षहीन समतल मैदान।

देर हो गई थी और इस समय तक अँधेरा बढ़ गया था इसलिए उसने दियासलाइयाँ जलाना शुरू कीं। एक-एक करके उसने हमें कागज दिखलाये। वे सचमुच कोरे थे। और कर-वसूली सम्बन्धी नहीं थे। वे सारे के सारे बिलकुल ही कोरे थे। केवल एक कागज के सिरे पर कुछ लिखा था। हमें वह बतलाने के लिए उस आदमी ने दो काड़ियाँ जलाईं।

"उपर्युक्त बात के उत्साह-पूर्ण समर्थन में नीचे दस्तखत करनेवालों ने माननीय कप्तान पेलिनो के हक़ में अपनी राजी-खुशी से दस्तखत किये हैं।"

उस आदमी के कहने से हमें मालूम हुआ कि वही स्वयं माननीय पेलिनो है और दस्तख़त हो जाने पर सब काग़ज सरकार को भेज दिये जाएँगे।

माननीय पेलिनो को ये काग़ज अपने उच्चाधिकारियों से मिले थे। ये केवल फाण्टामारा ही के लिए खास तौर से नहीं थे। सभी गाँवों के लिए थे। ऐसे ही और काग़ज लेकर उसके अन्य सहयोगी दूसरे गाँवों में भी गये थे। दरअसल उनका सम्बन्ध सरकार को भेजे जानेवाले एक प्रार्थना-पत्र से था, जिसके लिए कई दस्तखतों की आवश्यकता थी। यह ठीक है कि प्रार्थना-पत्र उसके पास नहीं था और न उसे यही मालूम था कि उसमें क्या लिखा है। प्रार्थना-पत्र उसके उच्चाधिकारियों द्वारा ही लिखा जानेवाला था। उसे खाली दस्तखत इकट्ठे करना थे, और किसानों को खाली दस्तखत करने थे।

उसने हमें बतलाया कि देहातियों को तुच्छ समझने और उनकी बात न मानने का जमाना बिलकुल लद गया है। आजकल तो किसानों की राय की क़द्र करनेवाली और उन्हें प्रतिष्ठित समझनेवाली नई सरकार का राज्य है। इसलिए मैं आपसे अपने दस्तखत मुझे देने की प्रार्थना करता हूँ। आपकी राय जानने के लिए एक अफ़सर भेजकर सरकार द्वारा किये गये सम्मान की आप उचित ही क़द्र करेंगे।

हमें थोड़ा सन्देह अभी था ही कि इसी बीच जनरल बाल्डीसेरा वहाँ आ गया और उसने अफ़सर के अन्तिम शब्द भी सुने। उसने बिना अधिक बखेड़े के (इन मोचियों को तो तुम जानते ही हो) कहा—बहुत अच्छा। यदि श्रीमान मुझे आश्वासन देते हैं कि पैसे-कौड़ी देने का कोई मामला नहीं है, तो मैं पहले दस्तखत करता हूँ।

पहले उसने दस्तखत किये। तब मैंने दस्तखत किये, और तब मेरे पास खड़े पॉञ्जियो पिलाटो ने, और तब माइकेल जोम्पा और मेरीटा ने। लेकिन दूसरों के बारे में कैसे क्या करते? रात में उस वक्त दस्तखत कैसे लिये जा सकते थे? घर-घर जाकर इतनी रात बीते दस्तखत करवाना असम्भव ही था। माननीय पेलिनो को एक बात सूझी। हम फाण्टामारा के सभी किसानों का नाम उसे लिखवा दें। और हमने ऐसा ही किया। सिर्फ बेरार्डो वॉयला का नाम लिखवाते समय ही एक गरमागरम बहस हुई। हमने माननीय पेलिनो को समझाने की कोशिश भी की कि बेरार्डो कभी दस्तखत न करता, परन्तु उसका नाम भी लिख लिया गया।

दूसरा कागज भी नामों से भर चुका था और अजनबी तीस या चालीस दियासलाइयाँ जला चुका था कि उसने मेज पर कोई चीज देखी। उसे देखकर वह चकित और भयभीत हो गया। लेकिन उसमें भयभीत या चकित होने जैसा कुछ न था। एक आग-काड़ी जलाकर उसने सावधानी से मेज का निरीक्षण किया। वह इतना झुका कि लगभग उसकी नाक ही उस चीज से छू गई। तब मेज की ओर अँगुली से संकेत करते हुए अपनी बकरी की-सी आवाज में वह जोर से चीखा

'यह क्या है? यह गन्दी चीज़ किसकी है? किसने उसे मेज पर रखा है?'

साफ तौर पर वह आफत मोल ले रहा था। किसी ने जवाब नहीं दिया। जनरल बॉल्डीसेरा ने पहले ही समझदारी से काम लिया और घर चला गया। अजनबी ने तीन-चार बार अपनी बात दुहराई और भरपूर उजाले के लिए एक साथ तीन सलाइयाँ जलाईं। तब हमने मेज पर हिलती हुई कोई चीज़ देखी।

पहले पाञ्जियो पिलाटो उठा, टेबल पर झुका, सावधानी से देखा और बोला

'यह मेरी नहीं है।'

मैंने भी ऐसा ही किया। मैंने उसे देखा, छूआ और अपने पाइप की नली से इधर-उधर घुमाया। मेरी जवानी की क़सम, वह सचमुच मेरी नहीं थी। माइकेल ज़ोम्पा ने ऐसा बहाना किया मानो वह कुछ समझा ही न हो

और आसमान में ताकता हुआ तम्बाकू पीता रहा। मेरीटा भी टेबल पर झुकी, और कीड़े को, जो अब इस समय तक नाम लिखे हुए कागज पर बीचोबीच पहुँच गया था, गौर से देखने के बाद अपनी हथेली पर लेकर सड़क में फेंक दिया।

'कितनी अद्भुत !' वह बोली। 'बिलकुल ही अद्भुत ! लम्बी, मटमैली और पीठ पर क्रासवाली एक नई तरह की जूँ '

सुनते ही माइकेल जोम्पा उछल पड़ा और चिल्लाया :

'क्या ! क्या सचमुच उसकी पीठ पर क्रास था ? और तुमने उसे फेंक दिया ? क्या तुम्हारा यह मतलब है कि तुमने सचमुच ही पोप की खास अपनी जूँ फेंक दी ? शान्ति की जूँ ? तुम्हारा बहिष्कार किया जाना चाहिये, पवित्र वस्तुओं का निरादर करनेवाली ए निकम्मी औरत, तू . '

हममें से कोई इस चीख-पुकार का कारण न समझा, इसलिए माइकेल ने खुलासा किया .

'मुझे पिछली शरद् में एक सपना आया था। वह सपना मैंने डॉन अबाक्च्यो को सुनाया और उन्होंने मुझे मना कर दिया कि वह मैं और किसी से न कहूँ। लेकिन, यदि मेरीटा का कहना सच है, तो वह अब प्रकट हो गई है। और चूँकि वह प्रकट हो गई है इसलिए मैं तुम्हें सुना सकता हूँ। सपना यह था

"पोप और सरकार में सुलह हो जाने के बाद, तुम्हें याद होगा, डॉन अबाक्च्यो ने मन्दिर में एक प्रवचन में कहा था कि किसानों के लिए अच्छा समय आनेवाला है। पोप को ईसा से यह वर मिला था कि वह किसानों को जो कुछ भी वे चाहें दे सकते हैं। मैंने पोप को सपने में ईसा से बात करते देखा था।

"ईसा ने कहा—शान्ति होने के उपलक्ष में फ्युसिनो की जमीन उस पर काम करनेवाले किसानों में बाँटनी ठीक होगी।

"पोप ने जवाब दिया—स्वामिन्, राजकुमार टोलानिया इसके लिए राजी न होंगे आप यह न भूलें कि राजकुमार टोलानिया सेण्टपीटर्स की निधि में काफी दान देते हैं।

"ईसा ने कहा—तो इस शान्ति के परिणाम-स्वरूप किसानों को सब तरह के करों से मुक्त कर दिया जाय।

"पोप ने जवाब दिया—स्वामिन्, इसके लिए सरकार राजी न होगी। आप न भूलें कि किसानों से दिये जानेवाले करों की बदौलत ही सरकार से सेएटपीटर्स की निधि को दो अरब लीरा मिलता है।

"ईसा ने कहा—तो फिर इस शान्ति के परिणाम स्वरूप सभी किसानों और छोटे बड़े खेतीहरों को एक अच्छी फसल प्रदान की जाय।

"पोप ने जवाब दिया—स्वामिन् यदि फसल खूब हुई तो नाज के भाव गिर जाएँगे। आप यह न भूलें कि हमारे सभी धर्माध्यक्ष और धर्माधिकारी बड़े जागीरदार हैं।

"ईसा दूसरों को किसी तरह की हानि बिना पहुँचाये किसानों के लिए कुछ न कर सकने के कारण बहुत दुःखित हुए। और इसलिए किसानों को अत्यन्त प्रेम करनेवाले पोप ने कहा :

" 'स्वामिन्, हम स्वयं चलकर देखें। किसानों के लिए शायद ऐसी कोई सम्भावना निकल आये जिसमें प्रिन्स टोलोनिया, सरकार, धर्माध्यक्ष और धर्माधिकारियों को अप्रसन्न न होना पड़े।'

"इसलिए सुलह की रात को ईसा और पोप सारे फ्युसिनो और मार्सिका के सभी गाँवों पर आकाश में उड़े। आगे-आगे अपने कन्धों पर एक बड़ा थैला लिये ईसा थे और उनके पीछे पोप जिन्हें थैले में से, किसानों के लिए वह जो कुछ भी उपयोगी समझें, लेने की अनुमति थी।

"प्रत्येक गाँव में उन पवित्र दर्शकों ने एक-सी बातें देखीं। सर्वत्र किसान असन्तुष्ट होकर बड़बड़ा रहे थे, गालियाँ बक रहे थे, लड़ रहे थे और निरन्तर व्यग्र हो रहे थे और उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि अन्न-कपड़े का प्रबन्ध कैसे किया जाय। यह सब देखकर पोप का हृदय व्यथित हो उठा। इसलिए उन्होंने थैले में से जुओं का एक भारी बादल का बादल यह कहते हुए मार्सिका पर बिखेर दिया :

" 'मेरे प्यारे बच्चो, यह लो और खुजलाओ। ये फुरसत के समय तुम्हारे विचारों को पाप की ओर जाने से रोकेंगी।' "

माइकेल जोम्पा का यह स्वप्न था। प्रत्येक अपने ढग से स्वप्नों का अर्थ लगाते हैं, और कई ऐसे भी हैं जो स्वप्नों को बिलकुल महत्त्व नहीं देते। कई उनपर से भविष्य वाणियाँ करते हैं। मैं उन्हें नींद लाने के बारे में उपयोगी समझता हूँ। लेकिन धार्मिक वृत्तिवाली मेरीटा सॉर्सानेरा का विचार और तरह का था। कुछ भी हो, वह बहुत ही करुण विलाप करने लगी और सिसकियों में बोली

'सच है, बिलकुल सच है। हमारे लिए यदि प्रार्थना करने को पोप न हों तो हमें पापों से कौन बचायेगा? विनाश से हमारी रक्षा कौन करेगा?'

लेकिन माननीय पेलिनो ने इसका और ही अर्थ लगाया। जोम्पा और सॉर्सानेरा की ओर चाबुक हिलाते हुए वह चिल्लाया :

'तुम मुझे लेकर हँसी कर रहे हो। तुम अधिकारियों की खिल्ली उड़ा रहे हो। तुम सरकार और पवित्र चर्च की—गिर्जा की—खिल्ली उड़ा रहे हो।'

और इसी दौर में वह बोलता चला गया। हमारी समझ में कुछ न आया कि उसका मतलब क्या है।

वह बोला—सरकार तुम्हारा बन्दोबस्त कर देगी। वह तुम्हें सजा देगी। अधिकारी तुम्हें इसका मजा चखाएँगे।

हमने सोचा कि वह थोड़ी देर बोलता रहेगा और अन्त में चुप हो जायगा। लेकिन वह बोलता रहा। वह चुप होता ही न था।

उसने माइकेल को डाँटा—क्या तुम नहीं जानते कि यदि मैं तुम्हारी रपट-रिपोर्ट—कर दूँ तो तुम कम से कम दस वर्ष के लिए धर दिये जाओ? क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि जो कुछ अभी तुमने कहा है उससे कम विद्रोहात्मक और कम हानिप्रद बातें कहने के लिए कई दस-दस साल के लिए चक्की पीस रहे हैं? भले आदमी, तुम रहते किस दुनिया में हो? तुम यह भी जानते हो या नहीं कि इन पिछले सालों में कितनी घटनाएँ हो गई? तुम्हें नहीं मालूम, आजकल स्वामी कौन है? नहीं जानते कि राज्य किसका है?

जोम्पा ने उसे चुप करने के लिए शान्ति से जवाब दिया :

'देखो, शहर में बहुत-सी बातें होती हैं। कम-से-कम, शहर में, एक घटना रोज होती है। रोज अखबार आते हैं और उनमें कुछ नहीं तो एक घटना तो

ज़रूर ही छपी रहती है। इस हिसाब से साल के अन्त में कुल कितनी घटनाएँ होंगी ? कई सौ। बेचारा ग़रीब किसान सब घटनाओं को कहाँ से जान सकता है ? लेकिन घटनाएँ एक बात हैं और राज्य करनेवाले दूसरी। दोनों में अन्तर है। राज्य अधिकारियों के हाथ में है। कभी-कभी वे अपना नाम बदल लेते हैं, पर रहते वे हमेशा अधिकारी ही हैं।

'और पुरोहिताधिपत्य (धर्माधिकार) ? पुरोहिताधिपत्य के बारे में क्या ?' उस शहराती ने पूछा। जो शायद स्वयं भी एक पुरोहिताधिपति था। अब देखो, कि हम इस शब्द का अर्थ अभी तक नहीं जानते। उस आदमी ने इसे बार-बार दुहराया और भिन्न भिन्न तरीकों से समझाया। अन्त में माइकेल ने जवाब दिया :

"सब के ऊपर स्वर्ग का स्वामी ईश्वर है।

"ईश्वर के बाद धरती का मालिक राजकुमार टोलोंनिया है।

"उसके बाद राजकुमार टोलोंनिया का सशस्त्र रक्षा-दल है।

"उसके बाद राजकुमार टोलोंनिया के सशस्त्र रक्षा-दल के कुत्ते हैं।

"उसके बाद कुछ नहीं है। उसके बाद कुछ नहीं है। उसके बाद कुछ नहीं है। तब किसान हैं। और बस।"

'और अधिकारी, वे कहाँ से आये ?' शहराती ने बेहद गुस्सा होकर पूछा।

पोन्जियो पिलाटो इसे समझाने के लिए बीच में ही बोला—पेतन के अनुसार अधिकारी तीसरी और चौथी श्रेणी में विभक्त हैं। चौथी श्रेणी (याने कुत्ते) ज्यादा तादाद में हैं।

माननीय पेलिनो उठ खड़ा हुआ। वह गुस्से से काँप रहा था। वह बोला : 'तुम्हें इसका उचित जवाब मिलेगा।' और चलता बना।

—दो—

दूसरे दिन सवेरे एक असाधारण घटना हो जाने से फाएटामारा भर में कोलाहल मच गया।

फाएटामारा के प्रवेश पथ पर पत्थरों के ढेर में से जो छोटा-सा-नाला निकलता है उसका पानी एक गन्दे तालाब में इकट्ठा होता है। कुछ ही क़दम

आग उसका पानी पथरिली जमीन के अन्दर बह कर ग़ायब हो जाता है और फिर आगे पहाड़ी के नीचे एक बड़े नाले में निकल आता है। वह नाला कई बल खाता है और अन्त मे फ्युसिनो की ओर बहने लगता है। फाण्टामारा के किसान सदा इसी के पानी से पहाड़ी के नीचे अपने कुछ खेतों को, जो उनकी एकमात्र सम्पत्ति है, सींचते हैं। हर ग्रीष्म मे पानी के बँटवारे को लेकर भयकर झगड़े होते हैं। अनावृष्टि के सालों तो ये झगड़े खून-खच्चर तक पहुँच जाते हैं।

दूसरी जून को सबसे जल्दी पहाड़ी के नीचे काम पर जानेवाले फाण्टामारा के किसानों को शहर से आनेवाली सड़क पर कुदाली और फावड़े लिये सड़क दुरुस्त करनेवालों का एक झुण्ड मिला। वे (या उन्होंने हमसे ऐसा ही कहा) नाले को खेतों और बग़ीचोंवाले उस रास्ते से जिन्हें पानी और धरती के आरम्भ काल से ही वह सींचता आ रहा था बदलकर अगूर के कुछ बग़ीचों के किनारों से होता हुआ ऐसी धरती की ओर मोड़ने आये थे जिसका फाण्टा-मारा से कोई सम्बन्ध न था। उस जमीन का मालिक स्थानीय शहर का डॉन कार्लो माग्ना नामक एक मालदार जमींदार था। वह डॉन कार्लो माग्ना इसलिए कहा जाता था कि दिन में कभी भी कोई उससे मिलने जाता और पूछता कि 'क्या डॉन कार्लो घर पर हैं?' तो दासी सदा यही उत्तर देती, 'डॉन कार्लो माग्ना, वह तो भोजन कर रहे हैं, लेकिन यदि आप चाहें तो श्रीमतीजी से मिल सकते हैं।'

क्षणभर तो हमने यही सोचा कि सड़क सुधारनेवाले हमसे मज़ाक़ कर रहे हैं, क्योंकि हमारी मजाक उड़ाना स्थानीय शहरवालों का एक अति प्रिय मन-बहलाव था। पिछले कुछ वर्षों मे उन्होंने हमारी जितनी मजाक की हैं उनका वर्णन करने के लिए एक पूरा दिन भी काफी न होगा। गदहे और पुरोहित-वाली कहानी से उनके द्वारा की जानेवाली मजाकों के बारे में एक अच्छा अन्दाज लगाया जा सकता है।

गिर्जाघर की आमदनी इतनी कम थी कि फाण्टामारा मे कोई पादरी नहीं रखा जा सकता था। गिर्जाघर खाली उत्सवों और व्रत-दिवसों पर ही, जब कि डॉन अबाक्च्यो स्थानीय शहर से इञ्जिल बाँचने या मास-प्रार्थना कहने आते, खोला जाता था।

दो साल पहले फान्टामारावालों ने धर्माध्यक्ष के पास गाँव में एक पादरी भेजने के लिए खास तौर से एक प्रार्थना-पत्र भेजा। कुछ दिनों बाद हमें सूचना मिली कि हमारी अर्जी मंजूर हो गई है और हमें गाँव के सर्वप्रथम पादरी के स्वागत की तैयारियाँ करनी चाहिये। उसके उचित स्वागत का हमने पूरा प्रबन्ध किया। गिर्जाघर की अच्छी तरह से सफ़ाई की गई। फान्टामारा में आनेवाली सड़क सुधारी गई और कई जगह चौड़ी भी कर दी गई। गाँव में घुसने की जगह एक बड़ी शानदार मेहराब बनाई गई। गाँव में सभी मकानों के दरवाजे हरी पत्तियों की वन्दनवार से सजाये गये। ऐन दिन सारा गाँव नये पादरी का स्वागत करने गाँव से बाहर निकला। पन्द्रह मिनट तक चलने के बाद हमने आदमियों का एक बड़ा समूह हमारी ओर आते देखा। भजन गाते और जप करते हम स्वागत के लिए आगे बढ़े। सबसे आगे जनरल बाल्डीसेरा था, जो एक छोटा-सा भाषण देनेवाला था, उसके पीछे गाँव के बड़े-बूढे और उनके पीछे स्त्रियाँ और बच्चे थे।

शहरवालों के समीप पहुँचकर अपने पादरी का स्वागत करने हम सड़क की दोनों ओर दो कतारों में खड़े हो गये। अकेला जनरल बाल्डीसेरा ही आवाजें लगाता हुआ आगे बढ़ा :

'ईसा की कृपा हो! कुमारी मेरी की कृपा हो! गिर्जा की कृपा हो!'

उसी समय शहरवालों का झुण्ड भी बीच से दो भागों में बँट गया और पवित्र आभूषणों से सजे एक बूढ़े गदहे के रूप में नया पुरोहित लातें और पत्थर खाता हुआ आगे बढ़ा।

शहरवाले यद्यपि हमेशा कुछ न कुछ नई गढ़ते ही रहते हैं, तो भी इस तरह की मजाक आसानी से नहीं भुलाई जा सकती। इसलिए हमारा यह सोचना स्वाभाविक ही था कि नाले का बहाव बदलना भी एक क्रियात्मक मजाक ही है। पर, हवा और पानी जैसी दैवी वस्तुओं के मार्ग में, जिसे परमात्मा ने बनाया है यदि आदमी दखल देना और बदलना शुरू करे तो प्रलय ही हो जायगा। यह एक ऐसा आश्चर्य है जैसा कि गदहे उड़ना सीख रहे हों, या राजकुमार टोर्लोनिया अब राजकुमार न रहे हों, या कि किसान अब भूखों न मरते हों, दूसरे शब्दों में, ईश्वरीय नियम हो अब जैसे ईश्वरीय न रहे हों।

लेकिन सड़क-सुधारनेवाले कोई स्पष्टीकरण किये बिना ही कुदाली-फावड़े उठा नाले का नया रास्ता खोदने लग गये। ऐसा लगा कि मजाक कुछ गंभीर होती जा रही है। एक किसान खतरे की सूचना देने फाण्टामारा की ओर भागा।

"दौड़ो, जल्दी करो। पुलिस को खबर करो। मेयर को खबर करो!" वह चिल्लाया।

आदमी नहीं जा सकते थे। जून के महीने में खेतों में बहुत अधिक काम रहता है। इसलिए औरतों को जाना पड़ा। अब आगे जो कुछ हुआ वह मेरी औरत सुनाएगी।

अच्छा, यह तो तुम जानते ही हो कि औरतें कैसी होती हैं। हुआ यह कि हमारे रवाना होने से पहले ही सूरज काफी ऊँचा चढ आया।

पहले तो चलने को कोई राजी ही नहीं होती थी। एक को मुर्गी के बच्चों की रखवाली करनी थी तो दूसरी को सूअर की। कोई इसलिए नहीं जा सकती थी कि कपड़े धोने थे। किसी को अंगूर की लताएँ छिड़कने का घोल तैयार करना था, किसी को मँडाई के लिए थैले तैयार करने थे, किसी को बकरों के लिए घास काटनी थी। पहले तो कोई भी जाने के लिए खाली न थी। अकेली सार्सानेरा स्वेच्छा से तैयार हुई, क्योंकि वही अधिकारियों से बोलना जानती थी, या ऐसा उसका कहना था।

साथ जाने को उसे एक औरत और मिल गई। नाम लेने से कोई फायदा नहीं। उसके भी पेट था। उसके आदमी को अमेरिका गये दस वर्ष हो गये थे और यह विश्वास करना, कि वह उतनी दूर से भी बच्चे पैदा कर सकता है, कठिन था।

मैंने ज़ोम्पा की घरवाली से कहा—एक ऐसे मामले में जिसका हम सभी से सम्बन्ध हो दो ऐसी औरतों को क्या हम फाण्टामारा का प्रतिनिधित्व करने दे सकती हैं, जो सच पूछा जाय तो, दो छिनालें हैं?

हम ऐसा कभी नहीं होने दे सकती थीं। इसलिए दोनों लिन्नावेत्ता लिमोना और मेर्या ग्रेज़्या के यहाँ उन्हें साथ चलने को राज़ी करने गईं। मेर्या

ग्रेज्या अपने साथ सियामारुगा को लेती आई और सियामारुगा फानारोलो की लड़की को और वह लड़की अपने साथ फिलोमेना क्वातेर्नी को बुलाती लाई।

हम रवाना होने ही वाली थीं कि पौंज़ियो पिलाटो की घरवाली, चूँकि हमने उसे साथ चलने को नहीं कहा था, गुल मचाने लगी

'तुम इसे हमारी पीठ पीछे निपटाना चाहती हो, अरी तुम? दूसरों को पीछे रखकर खुद आगे रहनेवाली अरी तुम! क्या हमारे खेत को पानी की जरूरत नहीं है?'

इसलिए उसके कपड़े पहिनने तक हमें रुकना पड़ा। लेकिन कपड़े पहिनने की बजाय वह फिलोमेना कास्टाना, रेक्ल्युटा, गिडिटा सारपोन और फॉर्नारा को बुला लाई और साथ चलने को राजी कर लिया। अन्त में बाल्डीसेरा की दुकान के आगे हम कोई पन्द्रह औरतें जाने को तैयार खड़ी थीं। हमें थोड़ी देर और रुकना पड़ा क्योंकि सॉर्सानेरा अभी कपड़े ही पहन रही थी। गले में मूँगों की माला पहने, छाती पर चाँदी का तमग़ा लगाये, अपनी सबसे बढ़िया पोशाक में, एक नया एप्रन डाले वह बाहर निकली।

बाल्डीसेरा ने मुस्कराते हुए कहा—एक बढ़िया नये पेट पर एक बढ़िया नया एप्रन। वह कम दिखने का बहाना करता था परन्तु जब उसके मतलब की बात होती तो उसे साफ दिख जाती थी। मेरीटा खुद भी मुस्कराई।

जब हम रवाना हुईं तो सूरज बहुत ऊँचा उठ आया था। मारे गरमी के दम घुटा जा रहा था।

सड़क सुधारनेवालों ने हमें देखा तो डर कर अगूंरों के बगीचों की ओर भाग गये।

सिक्कावेच्चा लिमोना ने यह देखकर यहीं से लौट जाने की सलाह दी क्योंकि उसकी राय में हमारा मतलब हल हो गया था। लेकिन नये एप्रनवाली सॉर्सानेरा बोली—हमें चलना ही चाहिये क्योंकि वे आदमी कुछ अपनी इच्छा से काम नहीं कर रहे थे, वे तो हुक्म की तामील कर रहे थे। हम बहस करने लगीं कि अब आगे क्या किया जाय। परन्तु मेरीटा ने जल्दी में मामला ख़तम कर दिया। वह बोली .

'यदि तुम डरती हो तो हम अकेली जाएँगी।' यानी स्वयं वह और पवित्र आत्मा द्वारा गर्भवती वह दूसरी औरत, और वे दोनो स्थानीय शहर की ओर चल पड़ी।

हमने एक दूसरे से कहा कि दो ऐसी औरतों को जो सच पूछा जाय तो दो छिनालें हैं हम कभी फाएटामारा का प्रतिनिधित्व नहीं करने दे सकतीं। और हम सब सोर्सानेरा के पीछे हो लीं।

जब हम शहर में पहुँची दोपहर हो गया था। टाऊन हॉल चौक में हमारे पहुँचते ही एकदम आतंक छा गया। निश्चय ही हमारा दिखावा भी कुछ ऐसा ही भयप्रद था। दुकानदार अपनी दुकानों से बाहर निकल आये और अपनी खिड़कियाँ बन्द कर लीं। चौक में खड़े कई फलवाले सिर पर अपनी टोकनियाँ उठाकर भाग गये। लोग-बाग खिडकियों और छज्जों में जमा हो गये। कुछ डरे हुए कारकून टाऊनहाल के दरवाजे पर दिखाई दिये। सब लोग यही समझ रहे थे कि हम टाऊनहाल पर चढ दौड़ेंगी। हर नतीजे के लिए तैयार हम निस्तब्धता-पूर्वक आगे बढीं।

उसी समय एक नगर-रक्षक ने खिड़की से सिर निकालकर चिल्लाना शुरू किया.

'इन्हें भीतर मत आने दो। ये सब जगह जूएँ कर देंगी!'

सब लोग ठठाकर हँस पड़े।

वे सब जो थोड़ी देर पहले विमूढ हो भागने लगे थे, और जिन्होंने एक क्षण पहले ही अपनी दुकानें बन्द कर दी थीं या टोकनियाँ सिर पर रख भाग गये थे, ठहाके लगाने लगे। सब हँस रहे थे। हम टाऊन-हाल के दरवाजे पर इकट्ठा हो गईं। नगर-रक्षक, बहादुरी का सेरा बाँधे, हमारे और हमारी जूओं के बारे में अविश्वसनीय कहानियाँ सुनाने लगा। चौक में सब कोई हँस रहे थे। छज्जे पर हमारी ओर मुँह किये खड़ी एक औरत के पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गये। एक घड़ीसाज जो अपनी दुकान की खिड़कियाँ बन्द कर रहा था इतना हँसा कि उसकी आँखों में आँसू आ गये। टाऊन-हॉल के दर्वाजे पर और भी कई कारकून और टाइपिस्ट आ खड़े हुए थे और वे भी सब जोर-जोर से हँसने लगे।

हमारी यह समझ में नहीं आ रहा था कि अब आगे क्या किया जाय। रास्ते में मारिनेरा ने कहा था कि वह सब देख लेगी, परन्तु जब इतने सारे हँसते हुए आदमियों से सामना पड़ गया तो उसकी अकल भी गुम हो गई। अकेला नगर-रक्षक ही होता तो उसे जवाब देना आसान था क्योंकि कभी उस पर भी जूएँ रेंगी होंगी। लेकिन वे इतने सारे दूसरे आदमी भी तो थे।

एक क्लर्क ने पूछा—तुम क्या चाहती हो? और किससे मिलने आई हो?

'हम मान्यवर मेयर—नगरपति—से मिलना चाहती हैं।' मेरीटा ने जवाब दिया।

फाटक पर खड़े कारकूनों ने अचरज से एक दूसरे की ओर देखा। उनमें से कुछ ने फिर प्रश्न किया:

'तुम किसे चाहती हो?'

हममें से चार-पाँच एक साथ बोलीं—हम मेयर से मिलना चाहती हैं।

कारकुन फिर से पागलों की तरह हँसने लगे। हमारा जवाब उन्होंने इतनी ऊँची आवाज़ में दुहराया कि जिसे सुन चौक में, खिड़कियों, बरामदों और पास के भोजन गृह में (इस समय तक दोपहर के खाने का वक्त हो गया था) उपस्थित सभी व्यक्ति ठहाके लगाने लगे।

चूँकि दोपहर हो गया था इसलिए सब कारकुन टाऊन-हाल में से बाहर निकल आये और उनमें से एक ने फाटक बन्द कर दिया।

जाते जाते वह हमसे बोला—क्या तुम सचमुच मेयर से मिलना चाहती हो? तो यहीं प्रतीक्षा करो। तुम्हें थोड़ी देर तक इन्तज़ार करना पड़ेगा।

हम बाद तक नहीं समझ सकीं कि उसके कहने का मतलब क्या था। इसी बीच हमारा ध्यान पानी पीने के एक नल की ओर, जो चौक के एक कोने में था, गया। हम सब उस ओर झपटीं। एक घमासान लड़ाई छिड़ गई। हम सब प्यासी थीं पर एक ही साथ सब पानी नहीं पी सकती थीं। यह किसी ने मंजूर नहीं किया कि गर्भवती होने से मेरीटा को सबसे पहले पानी पीने का अधिकार है। काफी खींचा-तानी के बाद हमने पानी पीने का क्रम निश्चित किया। सबसे पहले गिडिटा स्कारपोन ने और उसके बाद ओठ पर घाववाली एक स्त्री ने पानी पिया। हम उसे उसके बाद में पीने देना चाहती थीं,

लेकिन उसने टोटी पकड़ ली थी और छोड़ती ही न थी। उसके बाद मेरीटा की बारी आई, वह जैसे ही शुरू करनेवाली थी कि पानी बन्द हो गया।

जरा-सी रुकावट आ गई होगी, यह सोचकर हम रुकी रहीं। लेकिन पानी चालू नहीं हुआ। नल बन्द हो गया था। हम जा ही रही थीं कि पानी वापिस आने की आवाज सुनाई दी, हम फिर लौट आई। खींचा-तानी और झगड़ा फिर शुरू हुआ। दो छोकड़ियाँ एक दूसरे के बाल खींचने लगीं।

हमने फिर से पानी पीने का क्रम निश्चित किया। पर पानी एक बार फिर रुक गया। हमने थोड़ी देर राह देखी पर वह चालू नहीं हुआ।

पानी का यह बर्ताव बिलकुल हैरान करनेवाला था। फाएटामारा के बाहर वाले नाले में ऐसा कभी नहीं हुआ था। घड़ीसाज और नगर-रक्षक चौक के दूसरी ओर से हँसते हुए हमें देख रहे थे।

तुम्हें यह सब सुनाकर व्यर्थ समय गँवाना मूर्खता होगी जब कि बाद में इससे भी कहीं अधिक बुरी घटनाएँ हुई थीं। लेकिन पानी का वह अजीब व्यवहार, हमारी प्यास से पहले ही ग़ायब हो जाना, मैं कभी नहीं भूल सकती। हर बार यही हुआ। जब पानी आता नहीं दीखता तो हम हट जातीं, पर हमारे हटते ही पानी आ जाता था। ऐसा चार-पाँच बार हुआ। जैसे ही हम पास पहुँचीं कि पानी रुक जाता और तत्काल ही नल बन्द हो जाता। हमारे वहाँ से हटते देर न होती कि तत्परता से पानी आ जाता। प्यास के मारे हमारे गले सूख रहे थे पर पानी पीना असम्भव था। पास पहुँचते ही पानी ग़ायब हो जाता।

चार बार ऐसा हो गया तो एक दर्जन कड़ाबीन*वालों ने आकर हमें घेर लिया और पूछा कि हम क्या चाहती हैं।

'हम मेयर से मिलना चाहती हैं,' हमने जवाब दिया।

'मेयर? मेयर!' सारजेएट चिल्लाया—क्या तुम नहीं जानतीं कि अब कोई मेयर नहीं रहा? तुम्हारे खोपड़े में यह कब आयेगा कि अब मेयर को 'पॉडेस्टा' कहते हैं?

वह किसी भी नाम से पुकारा जाय, हमारे लिए तो सब एक ही बात

* कड़ाबीन—चौड़ी नली की एक छोटी बंदूक जो फौजी सिपाहियों के काम आती है।

थी। लेकिन पढ़े-लिखे लोगों के लिए निश्चय ही यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात थी, अन्यथा पोडिस्टा की बजाय मेयर से मिलने की बात कहने पर कारकून हँसते ही क्यों और सारजेण्ट भी क्यों गुस्सा होता? लेकिन पढ़े-लिखे लोग चिड़चिड़े होते हैं और न कुछ सी बातों पर क्रोधित हो उठते हैं।

सारजेण्ट ने चार कड़ाबीनवालों को हुक्म दिया कि वे हमें अपने साथ पोडेस्टा के यहाँ ले जायँ। दो कड़ाबीनवाले हमारे आगे हो गये और दो पीछे। राहगीर हमपर आवाजें कसते और हमें चिढ़ाते थे। बड़े शहरवालों को और खासकर मजदूरों और नौसीखियों को तो सदा ही देहाती किसानों का उपहास करने में मजा आता है।

कड़ाबीनवाले हमें मुख्य सड़क और ऐसी कई दूसरी सड़कों से ले गये जिनसे हम अपरिचित थीं। जब पुराने मेयर डॉन सर्कोस्टान्ज़ा का घर निकल गया और कड़ाबीनवाले न रुके तो हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। और हमें यह जानकर भी कुछ कम अचरज न हुआ कि डॉन सर्कोस्टान्ज़ा अब मेयर नहीं रहा। तब हमने सोचा कि अब ये हमें डॉन कार्लो मागना के यहाँ ले जाएँगे, पर कड़ाबीनवाले उसके घर पर भी बिना रुके चलते ही रहे। हम आगे बढ़ते गये और शीघ्र ही एक बार फिर गाँव से बाहर खेतों में आ गये।

हम आपस में बोलीं कि कड़ाबीनवाले हमें बेवकूफ बना रहे हैं। डॉन सर्कोस्टान्ज़ा के सिवा और कोई मेयर हो ही नहीं सकता। लड़ाई के पहले और लड़ाई के समय और लड़ाई के बाद भी वही मेयर था, और बीच में थोड़े समय के लिए जब वह मेयर न था तो डॉन कार्लो मागना था। लेकिन कड़ाबीनवाले उन दोनों घरों के आगे से जब बिना रुके निकल आये हैं तो इसका साफ मतलब है कि वे हमारे साथ कोई बेहूदा छल करना चाहते हैं।

अब कड़ाबीनवाले हम इमारती सामान—ईंट, चूने, रेती, गाडरों और कड़ियों से घिरे एक रास्ते से ले जाने लगे। इस रास्ते पर चलना हमारे लिए बहुत ही कठिन हो रहा था। अन्त में हम शान ही से बने एक बँगले के फाटक पर पहुँचीं, जिसका स्वामी फाण्टामारा में ठेकेदार के नाम से मशहूर, एक सज्जन था। बँगला झण्डियों और रंगीन कागजों के छोटे झण्डों से सजा हुआ था। कई औरतें आँगन में [illegible] रही थीं। कड़ाबीनवाले

बँगले के फाटक के ठीक सामने रुक गये।

हम सब मारे आश्चर्य के चिल्ला उठीं—क्या! क्या उस लुटेरे को मेयर बना दिया? उसके जैसे परदेशी को! यह असम्भव है।

कड़ावीनवालों ने हमसे कहा—कल ही उसकी नियुक्ति हुई है। उसे 'पॉडेस्टा' नियुक्त करनेवाला तार रोम से कल ही आया है।

तीन साल हुए, जब ठेकेदार पहले पहल रोम से आया तो उसके बारे में यह कोई नहीं जानता था कि वह कौन है और कहाँ का रहनेवाला है? उसने एक सराय में डेरा डाला और मई के महीने में जब कि सेव दरख्त पर ही थे और किसानों को पैसों की जरूरत थी, उन्हें ख़रीदना शुरू किया। उसके बाद उसने प्याज, सेम, मसूर और टमाटर खरीदना शुरू किये। जो कुछ वह ख़रीदता, रोम भेज देता था। तब उसने सूअर और बाद में घोड़े पालना शुरू किये। अन्त में वह हर तरह के व्यापार में हाथ डालने लगा; वह खरहे, शहद, चमड़ा, जमीन, शहतीर और ईंटें बनाने का व्यापार करता था। शुरू-शुरू में पुराने जमींदार उसे हलकी निगाहों से देखते और उसके साथ किसी तरह का लेन-देन नहीं करते थे। लेकिन एक-एक कर वह उन सब पर हावी हो गया। ऐसा एक भी व्यापार न बचा जिसमे उसने उन्हें मात न किया हो। अन्त मे जब उन्हे शक हुआ तो उन्होंने सचमुच ही उसे जालसाजी के लिए दोषी ठहराया। सरकारी जाँच हुई और एक नोट बनानेवाली बैङ्क का पता चला जो उसके सभी उद्योगों के लिए पैसा जुटाती थी। नोट जाली नहीं थे क्योंकि कारखाने का सम्बन्ध एक बैङ्क से था।

फाएटामारा मे इस विचित्र सत्य के बारे म, जिसे कोई मानने को तैयार न था, काफी वहस-मुबाहसा हुआ। हम अपने निजी अनुभव और जो कुछ लोगो से सुना था उस पर से जानती थीं कि बैंक का उपयोग पैसा सुरक्षित रखने, या रुपए अमेरिका से इटली भेजने या दूसरे देश के सिक्के बदलने मे किया जा सकता है। लेकिन बैङ्क का व्यापार से क्या सम्बन्ध? किसी बैङ्क का सूअर पालने या मकान बनाने या ईंटे बनाने या चर्मोद्योग से क्या सम्बन्ध हो सकता है?

जाँच के बाद ठेकेदार की इज्जत बहुत ज्यादा बढ़ गई। वह बैंक का

प्रतिनिधित्व करता था। एक टकसाल उसके हाथ में थी। पुराने जमींदार उसके आगे काँपने लगे। तो भी हमारी समझ में यह नहीं आता था कि उन्होंने उसे मेयर बनने ही कैसे दिया।

हमें देखते ही आँगन में काम करनेवाली औरतें ठेकेदार की स्त्री रोजालिया को बुला लाईं। वह बाहर आई तो क्रोध से आग-बबूला हो रही थी। वह प्रौढ़ उम्र की और शहरवाली औरतों की तरह कपड़े पहिने थी। उसका सिर शिकारी चिड़िया जैसा और शरीर लम्बा तथा झुर्रियोंवाला था।

वह चिल्लाने लगी—जाओ! हटो! निकलो! तुम क्या चाहती हो? क्या हम अपने घर के मालिक भी नहीं रहे? तुम्हें मालूम नहीं कि आज हमारे यहाँ भोज है? एक घण्टे में तो मेरे पति की नियुक्ति के उपलक्ष में भोज शुरू होनेवाला है, तुम्हें किसने बुलाया? मेरे पति घर नहीं हैं और लौटने पर उन्हें तुम्हारे साथ समय खराब करने की फुर्सत भी न होगी। यदि तुम्हें उनसे मिलना हो तो जाकर ईंटों के भट्ठे पर मिलो।

कराचीनवाले हमें ईंटों के भट्ठे का रास्ता दिखला कर चले गये।

कई बार रास्ता भूलकर हम भट्ठे पर पहुँचीं। वहाँ लगभग बीस मज़दूर थे और कुछ गाड़ीवान ईंटें भर रहे थे, परन्तु ठेकेदार नहीं था। उन्होंने कहा कि उसे यहाँ से गये थोड़ी ही देर हुई है। वह एलेक्ट्रिक सॉ-मिल—बिजली के आरे—पर हो, पर शायद वहाँ से भी चला गया हो। अच्छा हो कि तुम तमाशा लगाने की जगह जाओ। लेकिन वह जगह वहाँ से बहुत दूर थी।

हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि अब आगे क्या करें इसलिए बिना कुछ निश्चय किये ही, हम धूलवाली सड़क पर चल पड़ीं। गर्मी से दम घुटा जा रहा था और धूल हमारी आँखों में घुस गई थी। हमारे बाल, मुँह, नाक और आस्तीनें धूल से गन्दी हो गई थीं और हम आसानी से पहिचानी नहीं जा सकती थीं। भूख और गर्मी से हम निढाल हो रही थीं।

'यह सब तेरा कुसूर है, तेरा नाश जाय, तेरा!' निकोलायेवना सिमोना रोजालिया पर बिगड़ उठी।

यह सबके लिए लौटने का संकेत था। [illegible] मुझसे [illegible]

'मुझे तूने घसीटा। मैं आना नहीं चाहती थी। घर पर मुझे बहुत काम है, गली-गली भटकने के लिए मेरे पास फालतू समय नहीं है।'

गिडिटा सारपोन और कानारोजो की लड़की आपस में एक दूसरे के झोंटे उखाड़ने लगी और अन्त में सड़क पर लोट-पोट हो गई। मेर्या ग्र्ज्या कानारोजो की लड़की की मदद पर गई तो रेक्युटा उस पर झपटी और चारों धूल में लोटने लगीं। मारा-पीटी की अपेक्षा उनका गाली-गलौज ही ज्यादा जोरदार था। जोम्पा की घरवाली और लिजावेत्ता लिमानो के बीच म सॉर्सानेरा इस तरह चीख रही थी मानो उसका गला ही काटा जा रहा हो लेकिन थोड़े से बाल उखड़ने और उसका नया एप्रन फटकर धज्जियाँ हो जाने से अधिक उसे कुछ हानि नहीं पहुँची थी। भट्ठे में काम करनेवाले मज़दूरों के बीच-बचाव करने पर ही झगड़ा बन्द हुआ।

शान्ति हो जाने पर लिजावेत्ता बोली—इस डाइन के साथ (उसका मतलब सॉर्सानेरा से था) आकर हमने ग़लती की। मेरी समझ से तो ठेकेदार का नाला बदलवाने से कोई सम्बन्ध नहीं, फिर हमें यहाँ आने की आवश्यकता ही क्या थी?

माइकेल जोम्पा की घरवाली ने सुझाया—हमे चलकर डॉन कार्लो माग्ना से मिलना चाहिये। नाला उसकी जमीन की ओर मोड़ा जा रहा है। हो सकता है कि यह उसकी धींगा-धींगी हो।

हम दो तीन विरोधी झुण्डों में फिर शहर की ओर रवाना हुई। हम डॉन कार्लो माग्ना के घर पहुँचीं तो हमेशावाली दासी ने दरवाजा खोला। सदा की तरह हमने पूछा

'थोड़ी देर के लिए क्या हम डॉन कार्लो से मिल सकती हैं?'

सदा की तरह ही हमें जवाब मिला .

'डॉन कार्लो? माग्ना, वह हाल ही भोजन करने बैठे हैं। क्या तुम श्रीमतीजी से मिलोगी?'

श्रीमतीजी जो हमें अच्छी तरह पहिचानती थी, ठीक उसी समय बाहर आईं। वह हमसे इस तरह मिली मानों हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। वह हमें बड़े रसोई-घर में ले गई, जिसकी छत ने लहसुन, प्याज, सेब के गुच्छे,

सुअर की चर्बी भरी थैलियाँ, लगूचे, नमक मिला सूखा गोश्त और पुट्ठे लटक रहे थे। दोना जिजोला सदा पुराने ढंग के कपड़े, एक काली टोपी और जमीन पर घिसटनेवाला एक लम्बा काला साया पहनती थी। वह बोलती थी तो ऐसा लगता था मानो रो रही है। बिना कराहे उससे बोला ही नहीं जाता था। हमारे ज़मींदारों की औरतें लेन-देन के मामले में आदमियों की तरह ही कुशल होती हैं। जायदाद और विरासत के मामले में उनकी राय आदमियों से अधिक मान्य होती है। वे ही पारिवारिक सम्पत्ति की रक्षा करती हैं, नौकरों की देख-रेख करती हैं, मजदूरों की मजदूरी चुकाती हैं और अपने खेतों में होनेवाली उपज उचित मूल्य में बेचने का प्रबन्ध करती हैं। औरतों की बदौलत ही, जो दहेज में मिली जमीन की प्राणपण से रक्षा करनेवाली होती हैं, जमींदारों की पारिवारिक सम्पत्ति का एक अंश सट्टे और कर्ज से सुरक्षित रहता है।

सभी जानते थे कि यदि पत्नी का प्रभावशाली नियन्त्रण न होता तो डॉन कार्लो मागरा जैसे शराबी, मौजी, जुआरी और चटोरे की जायदाद बहुत पहले ही छिन्न-भिन्न हो जाती। डॉन कार्लो से मिलने आनेवाले सभी लोगों को दासी जो निश्चित उत्तर देती थी उसे कई वर्ष पहले गृहस्वामिनी ने एक बहाने के लिए, जिससे वह अपने पति के सभी कामों पर नियन्त्रण रख सके, खोज निकाला था।

हमसे नाले के बारे में सुनकर दोना जिजोला इस तरह पीली पड़ गई मानो बेहोश ही हो जाएगी। आँसू रोकने का एक भी प्रयत्न उसका दुर्बल, ज़र्द चेहरा इससे छिपा न सका।

'वह लुटेरा! वह बदमाश!' वह मन ही मन बड़बड़ाई। उसका मतलब अपने पति से नहीं, ठेकेदार से था।

'यह आदमी सचमुच लुटेरा है।' उसने हमसे कहा—कोई भी कानून उसके लिए बाधक नहीं है। यदि वह यहाँ कुछ वर्ष और ठहर गया तो हमें और हमारे मकानों, और जीवन, और वृक्षों और पहाड़ों तक को निगल जाएगा। वह हम सबका नाश कर डालेगा। वह और उसकी पैशाचिक पेट हमें घर से भिखारी बना छोड़ेगी—और जब हम गली-गली भीख माँग रहे होंगे तो वह हमें मिलनेवाली भीख तक चुरा लेगा।

'जमीन का वह टुकड़ा, जिधर फाएटामारा का नाला मोड़ा जानेवाला है, कुछ सप्ताह पूर्व ही ठेकेदार ने हमसे सस्ते दामों खरीद लिया था। वह निश्चय ही उस जमीन को उपजाऊ बनाकर महँगे दामों में बेचेगा और काफी मुनाफा कमायेगा।

'और अब उन्होंने उसे पॉडेस्टा बना दिया है। नई सरकार ने उसे पॉडेस्टा बना दिया। नई सरकार एक लुटेरे गिरोह के हाथ में है। वे अपने आपको बैंकर्स और देश-भक्त कहते हैं, पर वास्तव में वे लुटेरे हैं, जिनके दिलों में पुराने जमींदारों के प्रति कुछ भी ख्याल नहीं है। इस लुटेरे को पॉडेस्टा बने चौबीस ही घण्टे हुए हैं और टाऊनहाल से टाईपराइटर गायब हो गये। एक महीने के अन्दर तो वहाँ के दरवाजे और खिड़कियाँ भी चली जाएँगी। सड़क झाड़नेवालों को तन्ख्वाह पञ्चायत से मिलती है, लेकिन काम वे कल से ठेकेदार के कारखाने मे इमारती मजदूरों की हैसियत से करेंगे। सड़क सुधारनेवाले, जिनकी मजदूरी करों से वसूल की जाती है, उस जमीन पर, जिसे इस लुटेरे ने मेरे पति से उड़ा ली है, पानी ले जाने के लिए खाई खोद रहे हैं। जिले का हरकारा इन्नोसेन्जो ला-लेग्गी ठेकेदार की औरत का नौकर हो गया है। आज सवेरे ही उस औरत के पीछे कुत्ते की तरह सिर झुकाये, तरकारियों की एक बड़ी टोकनी लेकर जाते हुए वह मुझे मिला था। और यह तो केवल आरम्भ है। शीघ्र ही वह लुटेरा हम सबको निगल जायेगा।'

उसकी उत्तेजित बात पर से हमें लगा कि पुराने जमींदारों के अन्तिम दिन भी आ लगे हैं। जैसी की पुरानी कहावत है, खोदनेवालों के लिए गड्ढे तैयार हैं।

तो एक बार फिर हम पॉडेस्टा के बँगले की ओर रवाना हुईं। चलते-चलते मेरे पाँव इस कदर दुखने लगे जैसे कि वे गुड फ्राइडे के दिन घुटनों पर जब मैं क्रॉस रखती हूँ और दुखने लगते हैं।

राह में हमें फाएटामारा का गड़रिया एण्टोनियो लापा मिला, जो खुद भी ठेकेदार की तलाश में था। वह रोज की तरह जब सार्वजनिक चरागाह में अपनी बकरियाँ ले गया तो चौकीदार आया और यह कह कर कि चरागाह का उतना हिस्सा ठेकेदार के अधिकार में है, उसे निकाल दिया।

गड़रिया बोला—यदि चरागाह ठेकेदार के अधिकार में है तो जिस हवा में हम साँस लेते हैं वह भी उसी के अधिकार में होनी चाहिये। एएटोनियो लापा कोई बहुत होशियार छोकड़ा नहीं था, लेकिन इस बार उसने बात बिलकुल ठीक कही थी। चौकीदार सिर्फ उसे बना रहा होगा। हमारे पहाड़ से लेकर अपुलिया तक चरागाह सदा सार्वजनिक सम्पत्ति रहे हैं। मई के महीने में कपड़ों के मेले के बाद, कोई एक करोड़ भेड़ें हमारे पहाड़ पर गर्मियाँ बिताने आतीं और ठेठ अक्तूबर के अन्त तक वहीं रहती थीं। कहते हैं कि ईसा के जन्म के पहले से भी यह चला आ रहा है। उसके बाद कितनी ही लड़ाइयाँ और हमले हुए, कितने ही पोप और बादशाह बदल गये, पर चरागाह सदा सबके उपयोग के लिए खुले रहते आये। हमने कहा—ठेकेदार का विचार यदि चरागाह को हथियाने का हो तो वह पागल ही होना चाहिये। या शायद यह उसका पागलपन न हो और चौकीदार ही हमें बना रहे हों।

जब हम पॉलेन्टा के बँगले के फाटक पर पहुँचीं तो वहाँ दासी बिलकुल हताश खड़ी थी।

वह बोली—पॉलेन्टा अभी तक नहीं आये। मेहमानों को खाने पर बैठे आधा घण्टा हो चुका है और खुद गृह-स्वामी का अभी तक पता ही नहीं।

जहाँ हम खड़ी थीं वहाँ तक पक्वान्नों की सुगन्ध आ रही थी। दासी ने विस्तारपूर्वक हमें भोज के बारे में बतलाया। डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने एक बढ़िया भाषण दिया था। तब उसने हमें प्याज और चटनी और कुकुरमुत्ते और आलू और उनके स्वाद और महक तक के बारे में—भोज के लिए पकाई हुई प्रत्येक वस्तु के बारे में बतलाया।

भोज समाप्त ही होनेवाला था क्योंकि शराब का असर रंग दिखाने लग रहा था। सब आवाज़ों के ऊपर डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। भीतर के वार्तालाप का कुछ अंश खुली खिड़कियों की राह कभी-कभी बाहर सुनाई दे जाता था।

एक बार सर्वशक्तिमान्—ईश्वर—के बारे में बहस छिड़ गई। डॉन अबा-क्यो और दवा बेचनेवाला वर्मिन्ट एक दूसरे के विरुद्ध थे। डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा की राय पूछी गई।

उसने जवाब दिया—सर्वशक्तिमान् ? क्यों बिलकुल स्पष्ट है ! सर्वशक्तिमान् एक विशेषण है।

सब मान गये और फिर शान्ति हो गई।

तब हमने डॉन अबाक्च्यो की मतवाली आवाज सुनी :

"रोटी, चटनी और बढ़िया सफेद शराब के लिए तथास्तु !"

एक क़हक़हे से इस दिल्लगी का स्वागत हुआ।

फिर शान्ति। तब डॉन अबाक्च्यो बिलकुल अपनी पण्डिताऊ आवाज़ मे लय से गुनगुनाया . "उत्तर पूजाऽहकरिष्ये !"

यह उठने का संकेत था।

मेहमान लोग 'नाड़ा छोड़'—मल-मूत्र त्याग—करने के लिए बग़ीचे में आने लगे।

पहले डॉन अबाक्च्यो निकला। वह चर्बी से फूल रहा था। उसके गले की नसें तनी हुई और उसका लाल चेहरा सूजा हुआ था। उसकी आँखें सूअर के-से अलस आनन्द की अभिव्यक्ति मे आधी मूँद रही थीं। वह शराब के नशे मे लड़खड़ा रहा था। गिरने से बचने के लिए अपना सिर एक वृक्ष के सहारे से टिका, खुली ब्रीचेर्स—पायजामा—हमारी ओर किये वह उसी पर पेशाब करने लगा।

बाद में, कंडार्बीनवालों के सार्जेण्ट के साथ जिसने उसे थाम रखा था, वकील डॉन पॉम्पोनियो निकला। कम से कम उसने मकान के पीछे जहाँ उसे कोई नहीं देख सकता था जाने की सुशीलता दिखाई।

बाद मे केमिस्ट, कलक्टर, डाकबाबू और दस्तावेजों का जाँच अफ़सर निकले, वे ईंटों के एक ढेर के पीछे पेशाब करने बैठे।

उसके बाद एक जवान आदमी का सहारा लिये वकील डॉन सिकोन निकला। उसका जी मतला रहा था। इसलिए वह डॉन अबाक्च्योवाले वृक्ष के पीछे पेशाब करने लगा, जब कि वह युवक उसके सिर को एक हाथ से थामे रहा।

बाद में टाऊनहाल का बूढ़ा कारकून निकला। वह विद्यार्थी के नाम से मशहूर था, क्योंकि बीस वर्ष की उम्र मे वह विश्वविद्यालय मे भर्ती हुआ था

उसने बँगले की ओर मुड़कर आवाज दी—रोजालिया ! सुनते ही उसकी पत्नी बरामदे में निकल आई।

'क्या राज नक़्शे ले आया ? नहीं लाया ? वह क्या समझता है कि मैं उसे फोकट की तनख्वाह देता हूँ ? क्या स्टेशन मास्टर ने किराये का बिल भेजा ? क्या ? नहीं भेजा ? उसका तबादला काला'ब्रिया करना पड़ेगा। क्या पुलिस अफ़सर आया था ? क्या ? तुमने उसे लौटा दिया ? तुमने उसे लौटा क्यों दिया ?. भोज ! कैसा भोज ? अच्छा, मेरी नियुक्ति के उपलक्ष्यवाला . खेद है कि मुझे फ़ुर्सत नहीं। मुझे अभी जाकर पुलिस अफ़सर से मिलना पड़ेगा क्या ? मेहमान अपना अपमान समझेंगे ? न, नहीं समझेंगे। मैं उन्हें अच्छी तरह से जानता हूँ, उन्हें खूब शराब पिलाना और वे बुरा नहीं मानेंगे. बेकार है। मैं उन्हें पहिचानता हूँ।'

और तब वह अपने साथवाले कारीगरों से बहस करता हुआ हमारी ओर देखे बिना ही बँगले के फाटक के सामने से सफा निकल गया। उसका बोलना और काम करने का ढग रोबीला था।

मैंने मन में सोचा कि सचमुच यदि वह लुटेरा यहाँ दो साल और ठहर गया तो सब कहीं वही-वही दिखाई देगा।

'तुम औरतें यहाँ इन्तज़ार करो।' यह कहता हुआ एण्टोनियो ज़ापा उसके पीछे भागा।

वह एक नये बननेवाले मकान के पीछे ओझल हो गया। हम खड़ी-खड़ी उसका इन्तजार करने लगीं।

इसी बीच पिये हुए अतिथि बरामदे में जमा होने लगे।

ऊँची उभरी हुई बड़ी-सी नाक और बाहर की ओर फैले हुए कानोंवाला डॉन सबैस्टिआओ दूसरे वकीलों के बीच में खड़ा था। उसकी तोंद तीसरे दर्जे पर थी। सभी जानते हैं कि हमारी ओर के वकील भोज में एक विशेष तरह की फैलाई जा सकनेवाली पतलून जिसे कान्सर्टिना या ऐकेडेमिक कहते हैं, पहिनकर शरीक होते हैं। इन पतलूनों में इकहरे बटनों की बजाय तिहरे बटन होते हैं ताकि वे शारीरिक आवश्यकताओं के अनुसार घटाई-बढ़ाई जा सकें। जैसा कि नियम है भोज के आरम्भ में पतलूनें पहली श्रेणी पर, मध्य में दूसरी

श्रेणी पर और अन्त में, फलाहार के समय तीसरी श्रेणी पर पहुँच जाती हैं।

उस दिन डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा, डॉन पॉम्पोनियो, डॉन सिकोन, डॉन लुकासाविओ और विद्यार्थी की कोन्सटिना पतलूनें तीसरी श्रेणी पर थीं।

हम देखते ही डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने शोर मचाकर हमारा स्वागत किया। वह चिल्लाया

'मेरे फाण्टामारा-वासी चिरायु रहें!'

डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा, फाण्टामारावालों की हमेशा विशेष तरफदारी करता था। हमारे सभी मुकद्दमे उसी के पास जाते थे। और अन्ततोगत्वा फाण्टामारा की मुर्गियों के अधिकांश अण्डे बच्चे उसके रसोई-घर में पहुँच जाने का कारण भी यही था। पहले जब केवल लिखना-पढ़ना जाननेवाले ही वोट दे सकते थे, एक बार एक मास्टर ने आकर फाण्टामारा के सभी किसानों को डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा का नाम और गोत्र लिखना सिखा दिया था। इसलिए फाण्टमारा वाले सदा उसे ही दृढ़ता-पूर्वक वोट दिया करते थे, क्योंकि चाहकर भी किसी दूसरे को वोट देने में हम असमर्थ थे। बाद में जब चुनाव बन्द कर दिये गये तो हम में से किसी को उसके लिए खेद भी नहीं हुआ।

लेकिन डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने अभी तक 'जनमित्र' की पदवी नहीं छोड़ी थी।

डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने बरामदे में खड़े अपने साथियों से कहा—फाण्टामारा से पधारी हुई इन भली औरतों की उपस्थिति से राज्य के प्रधान को भेजे जानेवाले हमारे तार की पूर्ति हो जायेगी।

उसने अपनी जेब में से एक कागज़ निकालकर उस पर लिखा और तब ज़ोर से पढ़ा।

"जनता और अधिकारी एक साथ मिलकर नये पोदेस्ता की नियुक्ति पर हर्ष प्रकट करते हैं।"

अब ठेकेदार लौटता नहीं दिखा, और अतिथि हमारी ओर कोई ध्यान दिये बिना ही, उसकी पत्नी से विदा होने लगे तो हम अधीर हो उठीं। हम फाटक के सामने खड़ी हो गईं और यह तै कर लिया कि जब तक हमारी बात न सुनी जायगी और यह आश्वासन न मिल जायगा कि नाला नहीं बदलेंगे हम किसी को बाहर नहीं निकलने देंगी। हम हो-हल्ला करने लगीं।

'ग़रीबों के साथ ऐसा व्यवहार करते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिये। चोर ! लुटेरे ! सवेरे से हम भटक रही हैं और किसी ने हमारी ओर ध्यान तक नहीं दिया। भगवान तुमसे समझेगा। वह तुम्हें दण्ड देगा।'

हममें से दो तीन ने पहली मंजिल की खिड़की पर पत्थर फेंके। काच फूट गया। काच फूटने की आवाज सुनकर हम फाटक के पासवाले ईंटों के ढेर की ओर झपटीं। बाहर जाने के लिए बग़ीचे में निकले हुए शराबी मारे डर के बँगले में जा छिपे। दासी ने शीघ्रता से ऊपरी मञ्जिल की खिड़कियाँ बन्द कर दीं।

यकायक हमने अपने पीछे ठेकेदार की आवाज़, जो बिलकुल शान्त थी, सुनी।

उसने पूछा—तुम मेरी ईंटों से क्या कर रही हो ? ईंटें मेरी हैं और तुम उन्हें उठा नहीं सकतीं, मुझ पर फेंकने के लिए भी नहीं। इसके सिवा मुझ पर पत्थर फेंकने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी हरएक बात का जवाब देने के लिए मैं यहाँ खड़ा हूँ।

हमने ईंटें रख दीं और बँगले के अन्दर बग़ीचे में घुसीं। एक ओर हम खड़ी थीं और दूसरी ओर ठेकेदार तथा उसके शराब पीये हुए अतिथि, जिनका डर अभी तक दूर नहीं हुआ था।

मेरीटा सोर्सानेरा आगे बढ़ी, ठीक तमग़े की ऊँचाई के बराबर पर उसने अपना हाथ छाती पर रखा, और चुने हुए शब्दों में सड़क सुधारनेवालों की दुष्टता का, जो फाण्टामारा के नाले का बहाव बदलना चाहते थे, वर्णन किया।

मेरीटा ने अन्त में कहा—हमारा विश्वास है कि श्रीमान सड़क सुधारनेवालों को उनकी मनमानी के लिए अवश्य सजा देंगे।

ठेकेदार ने जवाब दिया—अगर मनमानी पाई गई तो तुम निश्चिन्त रहो मैं अवश्य ही उसका दमन करूँगा। जब तक मैं पञ्चायत का प्रमुख हूँ कोई मनमानी, खासकर फाण्टामारा के लोगों जैसे कामगारों के खिलाफ़, नहीं होने पाएगी। तुम इसका पूरी तरह से यक़ीन रखो। लेकिन इस मामले में तो मनमानी का कोई सवाल ही नहीं है। कप्तान, इनको समझा दो कि मामला क्या है।

कड़ाबीनवालों का कप्तान अतिथियों के झुण्ड में से आगे आकर कहने

लगा—जबर्दस्ती का कोई सवाल ही नहीं उठता। नई सरकार के शासन में जबर्दस्ती असम्भव है। उलटे, यह तो क़ानूनी कार्रवाई है। वास्तव में देखा जाय तो अधिकारियों ने ऐसा करने का हुक्म देकर फाएटामारावालों पर अनुग्रह किया है।

अपनी जेब से कागजों का एक पुलिन्दा निकालकर वह आगे बोला—फाएटामारा के सभी निवासियों ने इस अर्जी पर हस्ताक्षर किये हैं। इस अर्जी में, जिस पर गाँव के एक-एक आदमी के दस्तखत हैं, सरकार से प्रार्थना की गई थी कि पैदावार अधिक हो इसलिए साधनहीन फाएटामारा वासियों की जमीन पर से नाला शहर के साधन-सम्पन्न और खेती के लिए अधिक पूँजी लगा सकनेवाले जमींदारों के खेतों की ओर बदल दिया जाय।

कप्तान कुछ और भी कहना चाहता चाहता था, लेकिन हमने उसे बोलने नहीं दिया। हमें अच्छी तरह मालूम था कि पिछली रात कैसे एक माननीय कोरे कागजों पर फाएटामारा-वासियों के नाम लिख ले गया था।

हम चिल्लाने लगीं—ठग! जालसाज! धोखेबाज! तुम केवल गरीबों को ठगने के लिए ही क़ानून पढ़ते हो! झूठी अर्जियों का नाश हो!'

ठेकेदार ने कुछ कहने की कोशिश की, पर उसे सफलता नहीं मिली।

हम चिल्लाती ही रहीं—हम कुछ नहीं सुनना चाहतीं। तुम्हारी सब बातें जाली हैं! अर्जियों की जरूरत नहीं। पानी हमारा है और हमारा रहेगा! हम बँगले में आग लगा देंगी! इसे जला दो! भस्म कर दो!

डोन सर्कोन्स्टान्ज़ा ठेकेदार की मदद पर आया।

उसने शुरू किया—ये औरतें ठीक कह रही हैं। ये ठीक हैं, दस बार, सौ बार, हजार बार ठीक हैं . . .

हम एकदम चुप हो गईं। डोन सर्कोन्स्टान्ज़ा हमारा बचाव कर रहा था, और हम जानती थीं कि वह एक बड़ा नामी वकील है।

वह फिर कहता गया—ये औरतें बिलकुल सही हैं, दस हजार बार सही हैं। मैंने हमेशा इनका बचाव किया है और हमेशा करूँगा। आखिर, ये औरतें चाहती क्या हैं? ये इन्साफ चाहती हैं . . .

'सुनो! सुनो!' हम बीच में चिल्लाईं।

'ये सम्मान चाहती हैं और हमारा कर्त्तव्य है कि हम इनका सम्मान करें क्योंकि ये सम्मान के योग्य हैं। ये औरतें ढीठ नहीं हैं। ये जानती हैं कि क़ानून इनके खिलाफ है और ये क़ानून से खिलाफ नहीं जाना चाहतीं। ये पॉडेस्टा के साथ एक मैत्री पूर्ण समझौता चाहती हैं। ये आपकी नेकी के लिए प्रार्थना कर रही हैं। ये पचायत के प्रमुख से नहीं, प्रजा के शुभेच्छु, जन-हितैषी और लोगों के मित्र से प्रार्थना कर रही हैं, जिसने अपने देश को बिना कुछ लिये दिया ही दिया है, क्या इन शर्तों पर समझौता सभव है? हाँ, अवश्य है, '

डॉन सर्कोस्टाञ्जा के चुप हो जाने पर बहुत से समझौते सुझाये गए। एक डॉन अबाक्च्यो ने सुझाया, दूसरा दस्तावेजों के जाँच अफसर ने, तीसरा कलक्टर ने। वे सब गरमुमकिन थे, क्योंकि उनमें सिंचाई के लिए लगनेवाले पानी की तादाद का हवाला नही था।

ठेकेदार कुछ नहीं बोला। उसने दूसरों को बोलने दिया।

डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने सच्चा हल खोज निकाला।

'इन औरतों का कहना है कि इनके खेतों की सिंचाई के लिए आधा नाला काफी नहीं है। यानी, यदि मैं इनकी इच्छाओं का सही अर्थ करूँ, तो यह कि ये आधे से अधिक चाहती हैं। इनका कहना सही और दस बार सही है। एक और केवल एक ही हल है। पॉडेस्टा के लिए नाले का तीन चौथाई पानी छोड़ दिया जाय और बचे हुए पानी का तीन चौथाई फाएटामारावालों के लिए सुरक्षित रखा जाय। दूसरे शब्दों में तीन चौथाई प्रत्येक को मिले, यानी आधे से कुछ ज्यादा। यही एक मात्र उपाय है। मैं महसूस करता हूँ कि 'पॉडेस्टा' के लिए मेरा प्रस्ताव काफी सख्त है, परन्तु मैं उनकी जन-हितैषिता और देश से कुछ न लेते हुए देने की वृत्ति को ध्यान में रखकर प्रार्थना करता हूँ. '

डॉन सिकोन, डॉन सुकावासियो, डॉन तारांदेला, डॉन पॉम्पोनियो जो इस समय तक अपने भय से पीछा छुड़ा चुके थे, ठेकेदार को चारों ओर से घेरकर घिघियाने लगे कि वह हमारे लिए इतना त्याग करे। थोड़ी देर ध्यान करने—सोचने—के बाद विचारक भी उनके साथ हो गया।

काफ़ी मिन्नतों के बाद ठेकेदार राज़ी हो गया।

एक व्यक्ति जाकर कागज ले आया।

दस्तावेजों के जाँच अफ़सर ने समझौते की शर्तें लिख डालीं और उस पर ठेकेदार के दस्तखत करवा लिये। कड़ावीनवालों के कप्तान ने उस पर दस्तख़त किये और डान सर्वोस्टाओ ने भी फाएटामारा वासियों के प्रतिनिधि की हैसियत से उस पर दस्तख़त किये।

उसके बाद हम सब घर की ओर चल पड़ीं।

(वास्तव में हममें से कोई भी यह नहीं समझ सकी थीं कि समझौते में क्या हुआ है।)

आगे जो कुछ हुआ वह मेरा घरवाला तुम्हें सुनायेगा।

—तीन—

हमारे नाले में से ठेकेदार द्वारा ख़रीदी हुई ज़मीन की ओर पानी का एक हिस्सा ले जानेवाली खाई पर जितने दिनों वे सड़क सुधारनेवाले काम करते रहे, उनकी हिफाज़त के लिए दो कड़ावीनवाले सिपाहियों का प्रबन्ध किया गया। लेकिन यह बिलकुल साफ़ नहीं था कि पानी का ठीक कौन सा हिस्सा ले जाया जायेगा।

और न हम यह समझने जितना अधिक पढ़े लिखे ही थे कि नाला तीन चौथाईवाले दो बराबर हिस्सों में कैसे बाँटा जा सकता है। औरतें खुद भी जिन्होंने शर्तें मंजूर की थीं इसके कार्यान्वित होने के बारे में एक मत नहीं थीं। कुछ का ख़याल था कि पानी के दो बराबर हिस्से होंगे और कुछ का यह ख़याल था कि नहीं, फाएटामारा को आधे से अधिक, यानी तीन चौथाई पानी मिलेगा। अनटम्ब बाल्डीसेरा ने दृढ़ता-पूर्वक इस बात का समर्थन किया कि तीन चौथाई का सम्बन्ध बाँट के छोटे-उजले पालों से है। उसके कहने का मतलब यह था कि तीन उजले पालों तक नाला फाएटामारावालों की जमीन सींचेगा और तीन अगले पालों तक ठेकेदार की, और इसी तरह आगे चलता रहेगा।

हममें से प्रायः सभी ने यह महसूस कर लिया था कि ठेकेदार ने झगड़ा करने में हमारी व्यर्थ बरबादी के और कुछ हाथ नहीं लगेगा। हममें से

प्रत्येक, दूसरों का बिना कुछ ख़याल किये, बाक़ी बचनेवाले पानी के ज़्यादा से ज़्यादा भाग पर अपना अधिकार जमाने को कहीं अधिक उत्सुक था। सिंचाई को अभी कुछ सप्ताह की देर थी, परन्तु झगड़े-टटे अभी से शुरू हो गये थे।

उन दिनों हममें से अधिकांश लोग फ्युसिनो पर रोज मजूरी करने जाते थे। हमें तीन बजे उठना पड़ता था और सवेरा होने से पहले स्थानीय शहर के बाजार में पहुँचकर, जब तक कोई दिन-मजूरी के लिए नहीं रख लेता, इन्तजार करना पड़ता था। पहले बहुत ग़रीब किसान ही ऐसा करते थे, लेकिन अब सभी के लिए बुरा समय आ गया था। सभी किसानों के पास जमीन के जरा जरा से टुकड़े थे, परन्तु वे रेहन रखे हुए थे और उनकी उपज इतनी कम थी कि उससे कर्जे का ब्याज चुकाना भी मुश्किल था। बाजार में आनेवाले इन किसानों की ज्यादा तादाद देखकर जमींदार और बड़े खेत मालिकों ने अपने लाभ के लिए मज़दूरी की दर घटा दी थी। मजदूरी की दर कितनी ही कम क्यों न हो, उसे मजूर करनेवाला कोई न कोई भूख-मरा हमेशा निकल ही आता था। उस कम से कम मजदूरी के लिए भी बहुत से लोग इस हद तक उत्सुक रहते कि पहले से बिना कुछ तै किये ही साथ हो लेते थे।

फाएटामारा से शहर तक तीन मील चलने के बाद बाजार से फ्युसिनो तक अपने काम की ठीक जगह पर पहुँचने के लिए पाँच से दस मील तक और भी चलना पड़ता था। साँझ को घर लौटने के लिए भी इतनी ही मंजिल तै करनी पड़ती थी। फाएटामारा से आते-जाते वक्त रोज पानी के बँटवारे को लेकर होनेवाली लड़ाइयाँ अधिक उग्र रूप धारण कर चली थीं।

कई लोग बुरी तरह से घायल हो गये थे। ग्यासोबी लोसुर्डो की कैंची की (क़लम करने की) चोट से माइकेल जोम्पा का क़रीब-क़रीब एक पूरा पुट्ठा उघड़ गया था। बाल्डोविनो स्यारपा तरबूज की तरह अपना सिर ही फुड़वा बैठा था। एएटोनियो रनाक्यो के बहनोई ने उसकी बाँह तोड़ डाली थी। पाक्षियो पिलाटो और मेरे बीच मामला बहुत बेढब हो गया था, क्योंकि हम लड़ते तो नहीं थे पर दोनो के दोनो अपने लड़कों के साथ हर्बा-हथियार से लैस, डींगें हाँकते हुए काम पर जाते थे। मिलने पर आपस में हम एक दूसरे को 'राम-राम' भी नहीं करते थे, परन्तु एक दूसरे की ओर मन ही मन सम-

इस प्रभाव से कोई व्यावहारिक लाभ होने की अपेक्षा अनिष्ट और उत्पात ही अधिक होते थे।

उसे यह निश्चित सूचना मिल जाने के बाद कि वह अमेरिका नहीं जा सकता एक दिन डॉन कार्लो माग्ना के अगूर के एक पूरे बग़ीचे के अगूर तोड़े हुए मिले। गदहे और पुरोहित की प्रसिद्ध मजाक के जवाब में, शहर में पानी ले जानेवाले नल कई जगह से काट डाले गये। एक बार बड़ी सड़क पर आठ मील के घेरे के अन्दर के सभी मील के पत्थर तोड़ डाले गये। मोटरवालों की सहायता के लिए लगाये हुए सकेत—साइनपोस्ट—ज्यादा से ज्यादा तीन दिन अपनी जगह रह पाते थे।

जिस दिन फाएटामारा की बिजली काट दी गई बेरार्डो कुछ न बोला, परन्तु दो दिन बाद पास-पड़ोस के गाँवों से शहर जानेवाली सड़क पर की बिजली-रोशनी के सब गोले फोड़ डाले गये थे।

बेरार्डो वॉयला का सिद्धान्त था "शहरवालों के साथ बहस करने से कोई लाभ नहीं।"

इसका कारण वह यह बतलाता था कि क़ानून शहरवाले बनाते हैं, क़ानून का उपयोग करनेवाले जज शहराती होते हैं और व्याख्या करनेवाले वकील शहराती होते हैं। फिर किसान के लिए न्याय की आशा ही कैसे हो सकती है?

यदि कोई पूछता कि क्या मजदूरी कम देने पर भी बहस न की जाय, तो वह तत्काल उत्तर देता

'ऐसा करना समय की पूरी बर्बादी है। रोज-मजूरी करनेवाले का एक खेत मालिक से बहस करना पूरी तरह से समय की बर्बादी है। हर हालत में उसे मजदूरी कम ही मिलेगी। एक खेत-मालिक अपने फायदे के अनुसार ही काम करता है। मजदूरी कम न करने देने के लिए आवश्यक है कि उसे नुकसान पहुँचाया जाय। यह कैसे हो सकता है? मैं तुम्हें बतलाता हूँ। नाज के खेतों में निराई करनेवाले छोकड़ों की मजदूरी वे पाँच से सात लीरा तक कम करते हैं। छोकड़ों ने शिकायत नहीं की और मेरे कथनानुसार किया, घास जड़ से छीलने की बजाय उन्होंने उसे खाली मिट्टी में दबा दिया। अप्रैल की बारिश के बाद खेत मालिक देखता है कि घास नाज के पौदों से कहीं

ज्यादा ऊँची हो रही है। कम मजदूरी देकर उन्होंने बचत की जितनी आशा की थी कुछ समय बाद मँडाई के वक्त उन्हें इस तरह दसगुने से अधिक हानि उठाना पड़ी। यदि कटनी करने के लिए वे कम मज़दूरी दें तो बहस या शिकायत से कोई लाभ नहीं। कटनी के एक से अधिक तरीके हैं। दसों तरीके हैं। हरएक तरीका मजदूरी की अलग-अलग दरों से सम्बन्धित है। अगर मजदूरी अच्छी है तो कटनी अच्छी होगी, अगर मजदूरी कम है तो कटनी खराब होगी।'

यदि कोई उससे पूछता कि जिस ढंग से ठेकेदार ने हमारा नाला छीन लिया, क्या उसकी भी कोई शिकायत न की जाय, तो वह उसी तरह से जवाब देता :

'चमड़ा पकाने के कारखाने में आग लगा दो और वह बिना किसी बहस-मुबाहसे के तुम्हारा नाला लौटा देगा। और अगर वह इतने पर न समझे तो उसके लकड़ी के गोदाम में आग लगा दो। और यदि यह भी काफी न हो तो ईंटों का कारखाना उड़ा दो। और यदि वह इतना बेवकूफ हो कि तब भी न समझे तो एक रात जब कि वह डॉना रोज़ालिया के साथ बिस्तर में पड़ा हो उसका बँगला फूँक दो। तुम्हारा पानी वापिस पाने का सिर्फ यही एक रास्ता है। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो एक दिन वह तुम्हारी लड़कियाँ ले जाकर उन्हें भी बाजार में बेच देगा। और मैं उसे दोष भी नहीं देता। तुम्हारी लड़कियाँ आखिर हैं ही किस योग्य ?'

बेराडो चोफला का सिद्धान्त इतना कटु था। लेकिन इस तरह की बहस वह सिर्फ इसलिए करता था कि उसके पास कोई ज़मीन नहीं थी, और उसका स्वभाव उसे मन ही मन खटकता था। उसकी यह बहस ऐसे आदमी के समान थी जिसे कुछ खोना न हो। दूसरे किसानों की हालत उससे भिन्न थी।

ज़मींदार बनने के उसके सपने और जमकर काम न करने का उसका ढंग—ज़रूरत के अनुसार कभी मेहनत-मजूरी, कभी लकड़ी काटना, कभी कोयले बनाना, कभी ईंटें पाथना आदि विभिन्न काम—स्पष्ट करते थे कि वह अपनी दशा से सन्तुष्ट नहीं था। और केवल खलिहान और इसीलिए दूसरे किसानों से हीन स्थिति न होने से उसे यह जताने का अधिकार नहीं था कि वह

उसकी सलाह सुनेगा। हर बार जब-जब उसने हमारी बहस में दखल दिया हमारी गड़बड़ी ही बढ़ाई, इसलिए कोई भी दुनियावी आदमी कभी भी उसकी बात पर ध्यान नहीं देता था और न विरोध ही में कुछ कहता था। केवल जनरल बाल्डीसेरा, जिसका दृष्टिकोण सदा उससे छत्तीस पड़ता, अपवाद था। लेकिन मोची होने के कारण उसका बेकार की बहसों में रस लेना स्वाभाविक ही था।

लेकिन अपनी उच्छृंखल बातों और उदाहरण से बेरार्डो ने फाण्टामारा के युवकों का दृष्टिकोण ही बदल दिया था।

फाण्टामारा में पहले कभी इकट्ठे इतने जवान आदमी न थे। एक जमाना था जब कि सोलह वर्ष के होते न होते वे घर छोड़कर परदेश चले जाते थे। कुछ रोमन कम्पाना, कुछ अपुलिया और दूसरे कुछ अमेरिका चले जाते थे। कई अपनी वाग्दत्ताओं को चार, छः या दस वर्ष के लिए छोड़ जाते थे और लौटकर तब विवाह करते थे। कई विवाह के दूसरे दिन, ठीक सुहाग-रात के बाद ही चार, छ या दस वर्ष के लिए परदेश चले जाते थे। घर लौट आकर वे अपने लिए बड़े-बड़े बाल-बच्चे तैयार पाते थे, कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि विभिन्न उम्र के कई बाल-बच्चे हो जाते थे।

लेकिन परदेश जाने के सम्बन्ध में रोक हो जाने से यह सब बन्द हो गया था, और जवानों के सामने फाण्टामारा में रहने के सिवा और कोई रास्ता नहीं था, और फाण्टामारा में प्रत्येक के लिए काम निरन्तर कम पड़ता जा रहा था। परदेश जाने की असम्भवता का मतलब था रुपए कमाने और बचाने की असम्भवता, उस रुपए की असम्भवता जिससे वे रेहन और कर्ज-पीड़ित पैत्रिक सम्पत्ति को बचा सकते, जिससे वे जमीन की उन्नति कर नये ढंग से खेती कर सकते थे, जिससे वे बूढे या मरे हुए गदहे की बजाय एक जवान गदहा खरीद सकते थे, जिस पैसे से वे एक सुअर, दो बकरियाँ या शादी के लिए एक बिस्तर खरीद सकते थे। जवान होने के कारण वे अपना असन्तोष शिकायत और बड़बड़ाहट में प्रकट नहीं करते थे। न अपने भाग्य की असामान्य कठोरता को बाहरी चिह्नों से प्रकट होने देते थे। वे अकसर छुट्टियों के दिनों, अपने से उम्र में बड़े परन्तु बुद्धि में छोटे एक व्यक्ति के प्रभाव में

एकत्रित होते और ऐसी योजनाएँ बनाते और काम करते थे जिसका समझदारी से कोई सम्बन्ध नहीं होता था ।

सर्दियों में सुविधा के लिहाज से वे एण्टोनियो लापा की अस्तबल में, जहाँ की हवा बकरियों की साँस से गर्म रहती थी, एकत्रित होते । एण्टोनियो स्क्वेिएटा और लुइजी देला कोस और पालुम्बो, और राफेल स्कार्पोन, और वेनेडा नेएटो और मेरा लड़का और पॉम्पियो पिलाटो का लड़का और दूसरे कई वहाँ जाते थे । जब कभी किसी उत्पात की आयोजना होती बेराडों वायला भी अवश्य जाता था ।

इस छोटी सी मण्डली में, जिसे फाण्टामारा की लड़कियाँ दुराचार-मण्डली कहती थीं, और कोई शामिल नहीं किया जाता था । पहले-पहल तो यह नाम कुछ अजीब लगा लेकिन एक दिन जब इस मण्डली की असली हकीकत मालूम हो गई तो यह नाम बिलकुल मौजूँ था । बकरियों और खासकर पोन्टेविको ख्वारथा की एक जवान बकरी के साथ, जिसे अपने रंग के कारण रोजेटा कहते थे, जिना करना इन जवानों का अतिप्रिय आमोद था । ऐसा कहते हैं कि यह रोजेटा बकरी एक खास सधे हुए ढंग से प्रसन्नता-पूर्वक आदमी के हवाले हो जाती थी । रोजेटा को लेकर बार-बार झगड़े हुआ करते थे । कई दिनों तक यह घिनौना व्यापार चलता रहा, क्योंकि बकरी के मालिक वान्डोविनो ख्वारथा को, जैसा कि अक्सर ऐसे मामलों में होता है, इसके बारे में बहुत देर से मालूम हुआ । पर इस बदनामी की वजह से जब दूसरे किसानों ने अपनी बकरियाँ एण्टोनियो लापा के सुपुर्द करना बन्द कर दी तो दुराचार मण्डली का भी अन्त हो गया ।

लेकिन सबसे अधिक आश्चर्य का यह था कि बेराडों जैसा तन्दुरुस्त और ताकतवर जवान जो अपनी तीसी में आ रहा था और जिसके मा बाप नहीं थे, [illegible] की [illegible] साथ रहता [illegible] और घर बसाने की कोई [illegible] न करे । [illegible] का नियोग और उसकी [illegible] एक बार [illegible] [illegible] [illegible] कोई [illegible] के बाद बेराडों ने बिना [illegible] । [illegible]

उसे क्रोधित करने का निश्चित उपाय था। सर्दियों की लम्बी साँझों में जब कोई काम न रहता और जब बूढ़े शराब पीते और जब जवान डोरे डालते—प्रेम करते—बेरार्डो देर तक बैठा-बैठा जनरल बॉल्डीसेरा के साथ शहरातियों और देहातियों के बीच पाये जानेवाले अन्तर और तीन कानूनों—पुरोहित का क़ानून, मालिक का क़ानून और रीति-रिवाजों के क़ानून के बारे में बहस करता था। वह टेबल को इतनी जोर से पीटता कि मेरीटा सॉर्सोनेरा का शराबखाना काँप उठता। लेकिन बूढ़ा जनरल अपने विश्वास में, जिसे वह समाज का अपरिवर्तित और अन्तहीन क्रम कहता था, अटल रहता।

यह सोचा जाता था कि बेरार्डो ने एल्वीरा पर का अपना सब हक़ छोड़ दिया है, लेकिन जब एक दिन यह ख़बर उड़ी कि सड़क सुधारनेवाले फिलिप्पो इल बेल्लो ने एल्वीरा की मँगनी की है तो बेरार्डो पागल साँड़ की तरह बिगड़ खड़ा हुआ। वह फिलिप्पो इल बेल्लो के मकान की ओर लपका, पर वह घर न था। यह सुनकर कि वह पत्थर की खदान पर गया हुआ है बेरार्डो उधर भागा और उसे गिट्टी के ढेर पर काम करता पाया। उसके और एल्वीरा के बारे में सच-झूठ की पूछ-ताछ किये बिना ही उसने उसे तिनके की तरह उठा लिया और दस-एक बार गिट्टी के ढेर पर दचीक मारा। तब दूसरे मजदूरों ने आकर उसे रोका।

उस दिन के बाद से, यद्यपि बेरार्डो उसे टालता ही रहा, लेकिन एल्वीरा की मँगनी करने की किसी को हिम्मत न हुई।

एक साँझ, फ्युसिनो से घर लौटते हुए रास्ते में मैंने उससे इस बारे में जानना चाहा।

'एल्वीरा अब पचीस कुछ ऊपर की होगी,' मैंने कहा, 'और हमारे इधर, जहाँ लड़कियाँ बीस वर्ष की उम्र से पहले ही ब्याह दी जाती हैं, यह बहुत ज्यादा है। और कुछ नहीं तो घर-गृहस्थी में मदद के लिए ही उसकी शादी हो जानी चाहिये।'

बेरार्डो ने कोई जवाब नहीं दिया।

'यदि तुम उसे व्याहना ही नहीं करते तो उसे अधिकार है कि वह किसी और के साथ अपनी शादी कर ले।'

बेराडों आग-बबूला हो गया।

'चुप रहो,' उसने इस तरह से कहा कि इस बारे में बातचीत ही बन्द हो गई।

दूसरे दिन फ्युसिनो जाने के लिए मैं उसकी प्रतीक्षा में रुका रहा, पर वह नहीं आया। मैं उसे घर बुलाने गया कि शायद सो रहा हो। वहाँ बुढ़िया आँसू ढार रही थी। वह बोली:

'बेराडों पागल हो जायगा। अपने दादा से भी कहीं अधिक बुरा उसका अंत होगा। कल रात क्षण-भर के लिए भी उसकी पलक न झपी। वह दो बजे उठ खड़ा हुआ। जब मैंने उससे कहा कि अभी फ्युसिनो जाने में कुछ देर है तो वह बोला कि मैं फ्युसिनो नहीं जा रहा हूँ। मैंने पूछा—कहाँ जा रहे हो? वह बोला—कामारीज़। मेरे यह पूछने पर कि जब फ्युसिनो में काम है तो तुम कमारीज़ क्यों जाते हो? उसने जवाब दिया कि कमारीज़ में ज्यादा पैसा मिलता है। मेरे इस सवाल का कि तुम पैसे की कब से परवाह करने लगे हो, उसने कोई जवाब नहीं दिया और चला गया।'

बेराडों के कहीं काम जाने की खबर बिजली की तरह फैल गई, जिसे सुनकर फाण्टामारा के सभी किसानों को अचरज हुआ, यद्यपि कोई कारण नहीं कि रोज़-मजूरी करके कमाने खानेवाला किसान अपना प्रान्त छोड़कर, काम की खोज में कहीं न हो, दूसरी जगह जहाँ ज्यादा पैसे मिलते हों न जाय और अपने प्रांत से ही बंधा रहे। लेकिन जब बेराडों उसी साँझ फाण्टामारा लौट आया तो हमें और भी आश्चर्य हुआ।

[illegible] और बेराडों सहित हम चार-पाँच जीव सड़क में [illegible] के ही आने पर रहे थे। तभी हमने उसे अचानक आते हुए देखा। उसका आना इतना अनपेक्षित था कि क्षण भर तो हमने उसके आने की खबर को एक मज़ाक ही समझा। लेकिन वह अपनी [illegible] और [illegible] था और उसकी [illegible] में एक गठरी थी। वह [illegible] था? उसके एक [illegible] ही [illegible] पैदा करनेवाली [illegible] थी।

वह कहने लगा—[illegible] स्टेशन पर इन्तज़ार कर रहा था।

कड़ाबीनवाले सैनिकों का एक दस्ता आकर प्रत्येक से परवाने के बारे में और यात्रा करने का कारण पूछने लगा। मैंने एकदम सच-सच कह दिया। मैंने कह दिया कि मैं मजदूरी करने के लिए कामारीज जा रहा हूँ। उन्होंने पूछा, 'अच्छा, तुम्हारा परवाना कहाँ है?' 'कैसा परवाना?' मैंने पूछा। लेकिन उनसे कुछ स्पष्ट जवाब देते नहीं बना। वे मुझे टिकिट घर ले गये, मेरे टिकिट के पैसे वापिस दिलवाये और मुझे स्टेशन से बाहर निकाल दिया। तब मैंने दूसरी स्टेशन तक पैदल जाकर वहाँ से गाडी पकड़ने का इरादा किया। वहाँ जाकर मैंने टिकिट खरीदा ही था कि कड़ाबीनवाले दो सिपाहियों ने आकर पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो? मैंने कह दिया कि मैं मजूरी करने के लिए कामारीज जा रहा हूँ। उन्होंने कहा: 'हमे तुम्हारा परवाना दिखाओ।' 'कैसा परवाना? इसका परवानों से क्या सम्बन्ध?' मैंने पूछा। वे बोले—बिना परवानों के तुम काम नहीं कर सकते। देश मे ही प्रवास करने के लिए एक नया स्वदेश प्रवास-क़ानून बना है। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि मेरा कामारीज जाने का स्वदेश-प्रवास से कोई सम्बन्ध नहीं है और मैं वहाँ केवल मजदूरी के लिए जा रहा हूँ। लेकिन उन्होंने एक न सुनी। वे बोले—हमें ऐसे ही हुक्म मिले हैं। हम किसी भी मजदूर को जिसके पास परवाना नहीं दूसरे प्रान्त मे मजदूरी करने के लिए ट्रेन द्वारा नहीं जाने दे सकते। उन्होंने मुझे मेरे टिकिट के दाम वापिस दिलवाये और स्टेशन से बाहर कर दिया। लेकिन वह परवानो की बात मेरी समझ में नहीं आई। मैं एक सराय में गया और वहाँ कुछ लोगों से बातें करने लगा। 'परवाना?' एक गाडीवाले ने मुझसे कहा। 'परवानों के बारे मे तुम कैसे कुछ नहीं जानते? लड़ाई के समय हम सिवा परवानों के शायद ही और कोई बात करते हों।' और इस तरह पूरा दिन बर्बाद कर मै फिर लौट आया।

बेराडो की बात का सबसे ज्यादा असर जनरल बाल्डीसेरा पर हुआ। अपनी जेब से एक छपी हुई गश्ती चिट्ठी निकालकर, जो उसके पास डाक से आई थी, वह बोला

'इसके अन्दर भी उन्होंने परवाने के बारे ही मे लिखा है?'

इसमें कोई शक नहीं था। कामगार-सघ, चमडा विभाग, सूत्रा अपुलिया

ने जनरल बाल्दीसेरा से यह निश्चित माँग की थी कि वह मोचीगिरी का परवाना ले ले।

मेरीटा ने कहा—एल्वीरा के पास भी एक ऐसी ही चिट्ठी आई है। वह बिलकुल डरी हुई मेरे पास आई और मुझसे चिट्ठी का मजमून समझाने के लिए कहा। मेरी समझ में भी कुछ खाक पत्थर नहीं आया। मैं केवल इतना जान सकी कि उन्होंने लोगों की काम करने की आज़ादी छीन ली है। एल्वीरा के दादे-परदादे उससे पहले रँगरेज और जुलाहे थे और कभी किसी ने उनके काम में दखल नहीं दिया—लेकिन अब उन्होंने उसे लिख भेजा है कि वह काम करना चाहती है तो कर दे और परवाना ले।

सरकारी चिट्ठियों का मामला और बेरोज़ों के साथ होनेवाली अजीब घटनाएँ जब एक ही साथ हुईं तो मुझे शक हुआ कि यह सब मज़ाक है।

मैंने कहा—रँगने और बुनने में सरकार को क्या करना है? काम की तलाश में यदि किसान एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जाते हैं तो सरकार हस्तक्षेप क्यों करती? सरकार के लिए दूसरी बहुत-सी बातें सोचने की हैं। ये सब तो बिलकुल निजी मामले हैं। केवल लड़ाई के समय ही सरकारें जनता की व्यक्तिगत आज़ादी में हस्तक्षेप करती हैं।

जनरल बाल्दीसेरा ने टोका—तुम इस बारे में जानते ही क्या हो! तुम्हें क्या मालूम कि हम लड़ रहे हैं या नहीं?

इस बात का सभी पर असर हुआ।

'यदि सरकार लोगों को परवाने लेने के लिए बाधित करती है तो इसका मतलब है कि हम लड़ रहे हैं,' जनरल बाल्दीसेरा ने विषादपूर्ण स्वर में कहा।

मैंने पूछा—लड़ाई किसके साथ हो रही है? इसके बारे में बिना कुछ जाने ही हम कैसे लड़ सकते हैं?

जनरल बाल्दीसेरा ने कहा—तुम इसके बारे में क्या जान सकते हो? यह बिलकुल ठीक है कि तुम्हारे जैसा मूर्ख, [illegible] किसान इसके बारे में कुछ न जाने। लड़ाई की योजना बनानेवाले [illegible] होते हैं; लेकिन [illegible] लड़नेवाले किसान होते हैं। [illegible] पिछली लड़ाई [illegible] फॉन्टामारा

में यह कोई नहीं जानता था कि वह किसके खिलाफ है। पॉम्पियो पिलाटो ने सोचा था कि वह मेनेलिक के खिलाफ है, बिम्बी सियानो ने सोचा था कि तुर्कों के खिलाफ है और अभी कुछ साल पहले ही हमको पता लगा कि दरअस्ल लड़ाई ट्रेन्टिनो और ट्रीस्ट के खिलाफ थी। इतिहास की कुछ लड़ाइयों के बारे में आज तक कोई यह न जान सका कि वे किसके खिलाफ थीं। लड़ाई? क्यों, लड़ाई एक इतनी जटिल चीज है कि उसे समझने की एक किसान से कोई आशा ही नहीं की जा सकती। किसान युद्ध का एक छोटा सा भाग—उदाहरण के लिए परवाने—देखता है और इसका उस पर बड़ा भारी असर होता है। शहराती लड़ाई की बहुत-सी चीजें देखता है—बारकें और युद्ध सामग्री के कारखाने और इससे सम्बन्धित हरएक चीज। बादशाह सारा मुल्क देखता है। सब कुछ देखनेवाला अकेला ईश्वर ही है।

मैंने बाल्डीसेरा से पूछा—अच्छा, तुम अपना परवाना लेनेवाले हो या नहीं?

उसने जवाब दिया—क्यों नहीं, मैं परवाना तो ज़रूर लूँगा, पर उसके लिए कर नहीं दूँगा।

जुदी जुदी बातें करने के बावजूद भी परवानों के प्रति अख्त्यार किये जाने वाले रुख के बारे में हम एकमत थे।

उस रात लड़ाई के बारे में और भी बहुत-सी बातें हुईं। कोई घर ऐसा न बचा, जिसमें इसकी चर्चा न हुई हो। हरएक एक दूसरे से पूछता था—क्यों, लड़ाई किसके खिलाफ है? और यह किसी को भी मालूम नहीं था। सार्सनेरा के शराबखाने के बाहर बैठा हुआ जनरल बाल्डीसेरा अपने पास इस विषय की जानकारी हासिल करने आनेवालों को शान्ति-पूर्वक उत्तर देता था।

वह कहता—मुझे यह बिलकुल नहीं मालूम कि हम किसके खिलाफ लड़ रहे हैं। जो गश्ती चिट्ठी मेरे पास आई उसमें इसके बारे में कुछ नहीं लिखा है। उसमें केवल इतना है कि तुम्हें तुम्हारे परवाने की फीस देना पड़ेगी।

अधिकांश किसान कहते 'देना, देना, देना, हर बार बस पैसा देना।'

इन्नोसेन्जो ला-लेगी के अप्रत्याशित आगमन ने सबकी घबराहट और भी बढ़ा दी।

कोई बहुत गम्भीर कारण ही इन्नोसेन्ज़ो को फाएटामारा लाया होगा। जान जाने के खतरे ने ही उसे इतने महीने तक आने से रोक रखा था। वह स्वेच्छा से तो कदापि नहीं आया था। जब वह सार्सानेरा की सराय के सामने आया तो बेहद डर गया, क्योंकि किसानों ने लपक कर उसे घेर लिया। उसका चेहरा डर के मारे मुर्दे की तरह सफेद पड़ गया। सार्सानेरा ने यदि उसे ठीक समय पर बैठने को चौकी न दे दी होती तो वह गिर ही पड़ता।

वह एक दबी हुई धीमी आवाज में बोला—मुझे माफ करो, मुझे माफ करो। ना, डरो मत, ना, डरो मत, डरने जैसा कुछ नहीं है, नहीं है न! तुम मुझसे नहीं डरते, नहीं डरते न?

'अच्छा, तुम आये किस लिए हो?' बेरार्डो की आवाज अधिक उत्साहप्रद नहीं थी।

'बहुत अच्छा। सीधा विषय पर ही आता हूँ। इसका करों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। सभी पवित्र वस्तुओं की सौगन्ध यदि करों से इसका कुछ भी सम्बन्ध हो तो। करों से इसका कुछ भी लेना-देना नहीं; यदि करों से इसका कुछ भी सम्बन्ध हो तो, परमात्मा करे मैं अन्धा हो जाऊँ।'

कुछ क्षणों तक शान्ति रही। इन्नोसेन्ज़ो अन्धा नहीं हुआ।

'आगे बोलो!' बेरार्डो ने कहा।

'अच्छा, देखो, तुम्हें याद होगा कि एक रात यहाँ एक फौजी अफसर आया था। माननीय पेलिनो उसका नाम था, था न? तुम्हें याद है? बहुत ठीक। अच्छा, तो माननीय पेलिनो ने अधिकारियों को वर्तमान सरकार और गिर्जा के खिलाफ कुछ भाषणों की जो उसकी उपस्थिति में यहाँ दिये गये थे हूबहू रिपोर्ट करते हुए शिकायत की कि फाएटामारा वर्तमान सरकार के विरोधियों की खदान है। डरो मत, इसमें कुछ नुकसान नहीं है, डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। अवश्य ही वह तुम्हारे कहने का मतलब ठीक तौर पर नहीं समझा होगा। परन्तु अधिकारियों ने फाएटामारा के सम्बन्ध में कुछ कार्रवाई करना निश्चित की है। कोई कड़ी कार्रवाई नहीं, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि उसमें तुम्हारा कुछ भी नुकसान नहीं होगा। सब निरर्थक बातें हैं, ऐसी निरर्थक बातें जिन्हें शहर में काफी महत्त्व दिया जाता है और समझदार

किसान जिनकी ओर कोई भी ध्यान नहीं देते ’

अधिकारियों ने फाण्टामारा के सम्बन्ध मे जो कार्रवाइयाँ की थीं उन सबके बारे मे इन्नॉसेन्झो को कुछ भी मालूम नहीं था। वह खाली जिले का हरकारा था और उसे सिर्फ पञ्चायत के निर्णय के बारे मे ही मालूम था, और वह निर्णय उससे सम्बन्धित लोगों तक पहुँचा देना उसका काम था।

इसके सिवा न तो वह कुछ जानता था, और न कुछ जानना ही चाहता था। पञ्चायत का पहला निर्णय जो उसे सुनाना था वह कर्फ्यू —बन्दी हुक्म— के बारे मे था, जिसके अनुसार फाण्टमारा में कोई भी ‘साँझ आरती’ के एक घण्टे बाद से लगाकर सुबह होने तक घर से बाहर नहीं निकल सकता था।

‘और हमें हमारी मजदूरी तो उसी तरह मिलती रहेगी, क्यों ?’ बेराडा ने पूछा।

उसने जवाब दिया—तुम्हारी मजदूरी का भला इससे क्या सम्बन्ध है ?

‘क्या सम्बन्ध है ? क्यों, यदि हम सवेरा होने से पहले घर से बाहर न निकलें तो फ्युसिनो पर जहाँ हम काम करते हैं दोपहर बाद तक नहीं पहुँच सकेंगे। यदि हमें कुछ घण्टों की मेहनत के लिए भी उतनी मजदूरी मिलने वाली हो, जितनी पहले मिलती थी तो कर्फ्यू जिन्दाबाद।’

‘और यदि हम घरों से बाहर नहीं निकल सकेंगे तो रात मे हमारे खेतों की सिंचाई कैसे क्या होगी ?’

इन्नॉसेन्झो ला-लेग्गी क्षणभर के लिए निरुत्तर हो गया।

‘तुम बराबर नहीं समझे।’ वह बोला—या, यदि तुम बुरा नहीं मानो तो मै कहूँगा कि मुझे तग करने के इरादे से तुमने न समझने का बहाना किया है। यह कौन कहता है कि तुम अपना काम करने का ढग बदल दो ? ठेकेदार आज-कल पॉडेस्टा है और तुम उसे अपना काम करने से नहीं रोक सकते। और मैं जिले का हरकारा हूँ और न तुम मुझे अपना काम करने से रोक सकते हो। उच्चाधिकारियों की आपत्तियों और शिकायतों पर ठेकेदार ने तै किया है कि तुम्हें रात भर घर के अन्दर रहना पड़ेगा। मेरा काम खाली इतना है कि उसका हुक्म तुम्हें सुना दूँ। अब तुम्हें जो ठीक लगे तुम करना।’

‘और कानून ?’ जनरल बारडोनेरा बिगड़ खड़ा हुआ। ‘यदि इसी तरह

चलता रहा तो क़ानून और व्यवस्था का क्या होगा ? मैं तुमसे पूछता हूँ कि क़ानून क़ानून है या नहीं ?'

'कृपा करके यह तो बताओ कि तुम रात में सोते कब हो ?'—इन्नोसेंझो ने पूछा।

उस आधे अन्धे मोची ने जवाब दिया—अन्धेरा होते ही।

'और सवेरे उठते कब हो ?'

'क़रीब दस बजे, क्योंकि काम ज्यादा नहीं है।'

इन्नोसेंझो ने कहा—तो बहुत ठीक, क़ानून की बराबर पाबन्दी होती है या नहीं इसकी निगरानी के लिए मैं तुम्हें नियुक्त करता हूँ।

सिवा बाल्डीसेरा के, जिसे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगा, हम सब हँसने लगे। अँधेरा होने लग गया था इसलिए वह घर सोने चला गया। इस अनपेक्षित हँसी से इन्नोसेंझो ने कुछ आत्मविश्वास प्राप्त किया और प्रसन्न भी हुआ। सिगरेट जलाकर वह जिस तरह से पीने लगा, वैसे हमने उसे पहले कभी नहीं देखा था। मुँह से धुआँ छोड़ने की बजाय उसने नाक से, जैसे हम छोड़ते हैं वैसे एक साथ दोनो नथुनों से नहीं लेकिन पहले एक और तब दूसरे नथुने से धुआँ छोड़ा। हमारे प्रशंसा-मिश्रित विस्मय का फ़ायदा उठाकर उसने फाएटामारा के बारे में पॉडेस्टा का दूसरा हुक्म सुनाया। उस हुक्म के अनुसार गाँव के सभी सार्वजनिक स्थानों में निम्न सूचना लगाई जानेवाली थी .

यहाँ राजनैतिक बहसें करने की मनाही है। —बहुक्म

इन्नोसेंझो ने मेरीटा को, उसकी सराय ही फाएटामारा का एक मात्र सार्वजनिक स्थान होने से, पॉडेस्टा की एक लिखित आज्ञा दी जिसके अनुसार फाएटामारा में आगे से होनेवाली सभी राजनैतिक बहसों के लिए वह जवाबदार समझी जायेगी।

'लेकिन फाएटामारा मे कोई नहीं जानता कि राजनीति क्या है। कभी किसी ने मेरी सराय मे राजनीति पर बातें नहीं कीं।' सार्सनेरा का यह कहना सच था।

'तो माननीय पेलीनो यहाँ से इतने नाराज होकर क्यों गये ? तुमने किस विषय पर बातें की थीं ?'

सार्सानेरा ने कहा—अरे, हमने सभी विषय की बातें की थीं। हमने कीमतों के बारे में, और मजदूरी के बारे में, और करों के बारे में, और क़ानूनों के बारे में बातें की थीं। आज हम परवानों, लड़ाई और यात्रा के बारे में बातें कर रहे थे .

'पॉडेस्टा की आज्ञा से अब तुम इनमें से आगे एक के बारे में भी बातें मत करो। यह आज्ञा ख़ासतौर से फाएटामारा के लिए ही नहीं है लेकिन सम्पूर्ण इटली में लागू होती है। सार्वजनिक स्थानों में कीमत, कर, मजदूरी और क़ानून के बारे में बहस करने की बिलकुल मनाही हो गई है।'

बेरार्डो बोला—क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि सब तरह की बहसें बन्द कर दी जायें ?

'यही बात है बेरार्डो, तुम बिलकुल ठीक समझे, किसी भी चीज़ पर बहस न की जाय। पॉडेस्टा के हुक्म का यही अभिप्राय है। किसी तरह की कोई बहस नहीं।'

बेरार्डो की राय अपने साथ मिल जाने से इन्नोसेंझो को बहुत बड़ा सन्तोष हुआ। उसने दिवाल पर लटकाई जानेवाली सूचना में सुधार कर उसे अधिक स्पष्ट करने का बेरार्डो का प्रस्ताव तत्परता से स्वीकार कर लिया। उसने एक सफेद पुट्ठे पर खुद ही लिखा :

पॉडेस्टा की आज्ञा से
सब तरह की बहसें करने की सख्त मनाही की जाती है।

बेरार्डो की देख-रेख में यह सूचना मेरिटा के शराबखाने के बाहर दीवाल पर ऊँची टाँग दी गई। इस काम में बेरार्डो के आज्ञा-पालन ने हमें चकित कर दिया। मानो अपने रुख को और भी अधिक स्पष्ट करने के लिए उसने कहा :

'इस हुक्म को तोड़नेवाला काफी सोच समझकर ही ऐसा करे।'

इन्नोसेन्सो ने हाथ बढ़ाकर उसको गले लगाना चाहा, पर बेरार्डो के स्पष्टीकरण ने उसका उत्साह बहुत कुछ ठण्डा पड़ गया।

बेरार्डो बोला—मैं हमेशा तुम्हें यही कहता था न ? लेकिन पॉडेस्टा के क़ानून बनाने से पहले तुम थोड़े ही सुननेवाले थे ?

'मालिकों से कभी बहस मत करो, हमेशा यह मेरा सिद्धान्त रहा है। बहस-मुबाहसा ही किसानों की विपत्ति का मूल कारण है। किसान एक गधा है, बहस करनेवाला गधा। यही कारण है कि हम सचमुच के गधों से, जो कभी बहस या उसका बहाना नहीं करते, कहीं बुरी दशा में हैं। तुम्हारा गधा पचीस, पचास या सौ सेर वजन ले जायगा, इससे ज्यादा नहीं, पर वह बहस नहीं करेगा। तुम्हारा गधा एक खास गति से चलेगा, उससे तेज नहीं, पर वह बहस नहीं करेगा। तुम्हारे गधे के लिए भूसे की एक तादाद निश्चित है, वह उतना ही लेगा, पर बहस नहीं करेगा। तुम गधे से गाय बकरी या, घोड़े का काम नहीं ही करवा सकते। कोई तर्क वह नहीं मानेगा, कोई बात वह नहीं सुनेगा। वह बिलकुल ही नहीं समझता या समझने का कोई बहाना नहीं करता। किसान, दूसरी ओर बहस करेगा। तुम समझा-बुझाकर उससे उसकी शक्ति से परे काम ले सकते हो। समझाकर तुम उसे भूखा रख सकते हो। समझाकर तुम उसे अपने स्वामी के लिए मरने को राजी कर सकते हो। समझाकर तुम उसे लड़ाई पर भेज सकते हो। तुम उसे यह विश्वास तक दिला सकते हो कि सचमुच नरक नाम की भी कोई जगह है। परिणाम देखो। जरा अपने चारों ओर इससे होनेवाले परिणाम तो देखो।'

बेरार्डो का कहना हमारे लिए कुछ नया नहीं था, परन्तु इन्नॉसेंझो ला-लेग्गी यह सुनकर डर गया।

वह कहता ही रहा—तुम्हारा गधा भूखा रहना बर्दाश्त नहीं करेगा। वह कहेगा, यदि मुझे खाना मिलता है तो मैं काम करता हूँ: यदि खाना नहीं मिलता है तो काम नहीं करता हूँ। या ज्यादा सही तौर पर वह ऐसा कुछ नहीं कहता है, क्योंकि वह बहस नहीं करता, लेकिन स्वभाव से वैसा ही करता है। जरा सोचो तो सही कि फ्युसिनो पर काम करनेवाले छः हजार किसान बहस करनेवाले गधों की बजाय—दूसरे शब्दों में ऐसे गधों की बजाय जो पाले जा सकते हों, समझाये जा सकते हों, कड़ाबीनवाले सैनिकों, पादरियों और जजों द्वारा तंग किये जा सकते हों—बिना बहस करनेवाले सचमुच के गधे होते तो क्या होता? राजकुमार टोर्लोनिया को पेट भरने के

लिए भीख माँगना पड़ती। मेरे प्यारे इन्नोसेंजो, तुम जिस सड़क से आये हो वह कैसी अँधेरी है ? और थोड़ी देर बाद उसी सड़क से तुम घर भी जाओगे। तुम्हें मार डालने से हमें कौन रोक सकता है ? बोलो!

इन्नोसेंजो ने जवाब में कुछ कहने की कोशिश की पर उसके मुँह से बोल नहीं निकला। वह मुर्दे की तरह पीला पड़ गया।

'गधे न होने से हम बहस करते हैं और खून से होनेवाला परिणाम जानते हैं, और यही हमे रोकता है। लेकिन इन्नोसेंजो, तुमने खुद अपने हाथ से लिखकर यह सूचना टाँगी है कि आज से पॉडेस्टा के हुक्म से सब तरह की बहसें बन्द की जाती हैं। तुमने खुद अपना गला काट लिया है ।'

इन्नोसेंजो ने सप्रयास कहा—देखो, मेरी बात सुनो। तुम कहते हो कि तुम बहस करने के खिलाफ हो, लेकिन बुरा मत मानना, मुझे ऐसा दीखता है कि तुम बहुत ज्यादा बहस करते हो। तुम्हारी सभी बातें सिवा बहस के और कुछ नहीं हैं। मैंने इस तरह की गधेपन की बातें कभी नहीं सुनीं।

'अगर सब तरह की बहसें अधिकारियों और मालिकों के पक्ष में हैं तो पॉडेस्टा 'सब तरह' की बहसों की मनाही क्यों करता है ?' मैंने बेरार्डो से पूछा।

थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद बेरार्डो बोला :

'अरे, हाँ, बहुत देर हो गई। फ्युसिनो जाने के लिए मुझे तीन बजे उठना है। अच्छा, राम-राम।'

और वह चलता बना।

बेरार्डो के साथ बातचीत करने का अन्त हमेशा इसी तरह होता था। वह घण्टों उपदेशक की तरह बिना कोई जवाब सुने जो कुछ औंधा-सीधा उसके खोपड़े में आता बोलता रहता था। जब उसका बोलना समाप्त हो जाता और कोई ऐसा सवाल पूछ बैठता जिसका जवाब उससे नहीं बनता तो चुपचाप बिना जवाब दिये चल देता था।

उस रात फिर इन्नोसेंजो ला-लेग्गी लौटकर शहर नहीं गया। शायद बेरार्डो के धमकानेवाले शब्दों की वजह से हो या एकाएक तबियत खराब हो जाने से हो, उसने वह रात मेरीनोसा के यहाँ बिताई।

—चार—

जून के मध्य तक चारो ओर यह समाचार फैल गया कि मार्सिका के किसानों के प्रतिनिधि फ्युसिनो समस्या पर रोम की नई सरकार का निर्णय सुनने के लिए अवेजानो बुलाये जायेंगे।

इस समाचार से काफी सनसनी फैल गई, क्योंकि पहले की सरकारों मे से किसी ने भी फ्युसिनो समस्या को स्वीकार तक नहीं किया था, और चुनाव बन्द हो जाने के बाद से तो हमारे इधर के वकील तक इसके अस्तित्व को भूल गये थे, यद्यपि पहले वे इसके बारे में खूब बातें किया करते थे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि रोम में नई सरकार कायम हो गई थी, क्योंकि हमने बीच-बीच मे इस विषय की बातें सुनी थीं। यह भी इस बात का एक प्रमाण था कि लड़ाई हो रही थी या होनेवाली थी, क्योंकि लडाई के द्वारा ही पुरानी सरकार बदलकर नई कायम की जाती है। हमारे इधर इसी तरह स्पैनिआर्ड्स् को बोअरबॉन्स ने और पिड्माण्टेसी ने बोअरबॉन्स को बदला था। लेकिन फाण्टामारा में इतना भी कोई नहीं जानता था कि नई सरकार कहाँ से आई है और उसकी राष्ट्रीयता क्या है? सरकारें शहरों में होनेवाली घटनाएँ हैं।

जब कभी शासन बदलता है तो किसान केवल इतना ही कह सकता है—'परमात्मा करे हमारे हक़ में यह सरकार अच्छी हो', ठीक उसी तरह जैसे कि गर्मियों में क्षितिज पर उठनेवाले बादलों का वर्षा या ओले-तूफान के अग्रदूत होना गरीब किसान की नहीं ईश्वर की मर्जी पर निर्भर करता है।

जो हो, यह बहुत ही अनूठा था कि सरकारी प्रतिनिधि गरीब किसानों के साथ बिना किसी भेद-भाव के, बराबरी से, बातें करेगा।

जनरल बाल्डीसेरा कहता-फिरता था—पुराना जमाना फिर आ रहा है। पुराने जमाने में आजकल की तरह महल और किसान की झोंपडी के बीच छावनियों और छोटे-बड़े दफ्तरों का घना जगल नहीं था। साल में एक बार शासक गरीब आदमी की तरह भेष बदल कर मेलों में जाते और लोगों की तकलीफें सुनते थे। तब चुनाव आये और शासकों तथा किसानों के बीच एक

दिवाल खड़ी हो गई। लेकिन अब फिर, यदि अफवाहें सच हैं तो, पुराना जमाना आ रहा है। पुराना जमाना, जिसमे हम कभी विलग न हुए होते

माइकेल ज़ोम्पा को भी ऐसी ही आशा थी। वह कहता

'चुनावों पर टिकी हुई सरकार का नियन्त्रण हमेशा अमीरों द्वारा होता है और वे अपने लाभ के लिए चुनावों का उपयोग करते हैं। एक आदमी का शासन—राजा—अमीरों को डरा सकता है। एक राजा और किसान के बीच ईर्ष्या या प्रतियोगिता हो ही कैसे सकती है ? यह विचार ही हास्यास्पद है। लेकिन एक राजा और राजकुमार टोर्लोनिया का एक दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु होना बहुत आसान है।'

विरोध करने की बुरी आदत होते हुए भी बेरार्डो ने दूसरों की राय का इस आशा से विरोध नहीं किया कि फ्युसिनो की जमीन के पुनर्विभाजन में उसे भी शायद एक हिस्सा दे दिया जाय।

बेरार्डो तर्क करता था—सब सरकारें हमेशा चोरों की बनी होती हैं—चोर होती हैं। हाँ, किसानों के लिए पाँच सौ की अपेक्षा एक चोर ज्यादा अच्छा है। एक बड़ा चोर, वह कितना ही ज्यादा भूखा क्यों न हो पाँच सौ छोटे भुक्खड़ चोरों से कम ही खायेगा। यदि फ्युसिनो का बँटवारा फिर से होने जा रहा हो तो फाण्टामारा अपने अधिकारों का उपयोग अवश्य करे।

एक दिन रविवार को सवेरे एक मोटर लॉरी फाण्टामारा आई, और ड्राइवर ने सब किसानों को जो अवेज़ानो जाना चाहते थे, सवार हो जाने के लिए कहा। किराया कुछ नहीं देना पड़ेगा। लॉरी तिरंगे झण्डों से सजी हुई थी। वह अधिकारियों ने भेजी थी और हमें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भाड़ा कुछ नहीं देना पड़ेगा।

मौके से ही हम दस-बारह आदमी फाण्टामारा में रह गये थे। बाकी काम पर चले गये थे। जब काम ज्यादा हो तो गिर्जा हमें सदा गर्मियों में रविवार को भी काम करने की इजाजत दे देता है। लेकिन जून के अन्त में कटनी शुरू होती है इसकी जानकारी न होने के लिए हममें से किसी ने नई सरकार को दोष नहीं दिया। शहरवासियों की सरकार से यह जानने की उम्मीद ही हमें कैसे की जा सकती थी कि यह कटनी का समय है ? लेकिन जिस सभा में

फ्युसिनो-समस्या तै होनेवाली थी उसमें उपस्थित रहने के लिए हम खुशी-खुशी एक दिन का काम छोड़ने को तैयार थे।

हम फाएटामारा वासियों की हमेशा यह माँग थी कि हमें भी फ्युसिनो में जमीन के टुक्ड़े लगान से मिलने का अधिकार होना चाहिये। लेकिन टोर्लो-निया-शासन इसे कभी मजूर नहीं करता था और हमारे परिश्रम का शोषण करनेवाले डाक्टरों, वकीलों, प्रोफ़ेसरों और मालदार खेत-मालिकों को ही प्रधानता देता था। लेकिन हमने फ्युसिनो में कुछ जमीन लगान से मिलने की आशा पूरी तरह से कभी नहीं छोड़ी थी। हमारी एक-मात्र आशा जमीन वापिस मिल जाने की प्रतीक्षा करना ही थी, जिसके बारे में डॉन सर्कोस्टाङ्झा ने हमसे कई बार, खासकर चुनावों के समय, कहा था।

डॉन सर्कोस्टाङ्झा का नारा था—'फ्युसिनो की जमीन उसे जोतनेवालों की'

उसका कहना था कि फ्युसिनो राजकुमार टोर्लोनिया और अमीर खेत-मालिकों और वकीलों और दूसरे शौकीनों से लेकर उस पर खेती का काम करनेवाले किसानों को दे देना चाहिये। यह समाचार सुनकर कि फ्युसिनो का बँटवारा होनेवाला है, खासकर उस समय जब सरकार ने फाएटामारा के किसानों के लिए सभा में शरीक होने को एक अलग लॉरी भेजी तो हम बहुत ही उत्तेजित दशा को पहुँच गये। हम थोड़े से लोग जो फाएटामारा में रह गये थे बिना कुछ पूछ-ताछ किये लॉरी में सवार हो गये। मेरे सिवा उसमें बेरार्डो वॉयला, एण्टोनियो लापा, त्योफिलो देल्ला क्रोस, बाल्डोविनो स्यारपा, सिम्प्लीछियो, ग्यासोवो लोसुर्डो, पॉम्प्लियो पिलाटो और उसका लड़का, एण्ड्री वैपोरेल, और राफेल स्कार्मोर्जा थे।

लेकिन रवाना होने से पहले ड्राइवर ने पूछा—तुम्हारी पताका कहाँ है?

'पताका कैसी?'

ड्राइवर ने कहा—मुझे ऐसी ही आज्ञा मिली है कि किसानों के हरएक झुण्ड के साथ पताका होनी चाहिये।

'लेकिन पताका क्या है?' हमने पूछा।

'पताका एक झण्डा है।' उसने जवाब दिया।

हमने नई सरकार पर खासकर इसलिए कि सम्मेलन में फ्युसिनो समस्या

तै की जानेवाली थी, कोई बुरा असर डालना ठीक नहीं समझा। त्योफिलो ने, जिसके पास गिर्जाघर की चाभियाँ रहा करती थीं, सुझाया कि हम अपने साथ सैनरोक्को का झण्डा ले चलें, और हम राजी हो गये। इसलिए वह और राफेल स्क्रामोर्जा उसे लेने गिर्जाघर गये। लेकिन ड्राइवर ने एक सन्त और उसका घाव चाटते हुए कुत्ते की तस्वीरवाला सफेद-नीला बड़ासा पन्द्रह गज लम्बा झण्डा देखा, जिसे लेकर आने में भी उन दोनों को बड़ी तकलीफ हो रही थी, तो लॉरी मे ले चलने से इन्कार कर दिया। लेकिन फाण्टामारा में अकेला वही एक झण्डा था, और बेरार्डो उसे नहीं ले चलने की दशा मे लारी में से उतर पड़ा। इसलिए अन्त मे ड्राइवर हारकर वह झण्डा साथ ले चलने को राजी हो गया।

झण्डे को सँभाले रखना एक खासी मेहनत थी। जब लॉरी चल रही थी तो हममे से तीन बारी-बारी से झण्डे के बल्ले को सीधा पकड़ रखते थे। तूफान में जहाज के मस्तूल की तरह हमारा झण्डा खूब डगमगा रहा था। वह दूर-दूर से देखा जा सकता था। हमे देखकर खेतों में काम करनेवाले किसान आश्चर्य प्रकट करते थे। स्त्रियाँ घुटनों के बल बैठ जातीं और क्रॉस बनाती थीं।

अवेजानो के रास्ते पर जब पहला गाँव पड़ा तो ड्राइवर ने हमसे कहा—भजन गाओ।

'कैसे भजन ?'

'मुझे हुक्म मिला है कि प्रत्येक बस्ती मे गुजरते हुए किसान भजन गावें और खूब उत्साह प्रदर्शित करें।'

लेकिन हमें एक भी भजन याद नहीं था और हम सैनरोक्को का झण्डा सीधा रखने मे ही काफी व्यस्त थे।

सड़क पर हमें किसानों से भरी दूसरी लारियाँ, गाड़ियाँ, मोटरें, मोटर साइकलें और बाइसिकलें मिलीं, जो सभी अवेजानो की ओर जा रही थीं। हमारे विशाल सफेद-नीले झण्डे को देखकर लोग पहले तो आश्चर्य करते और फिर खूब जोर-जोर से ठहाके लगाते थे। दूसरों के पास झण्डियाँ काले रंग की और ऊँची रूमाल से ज्यादा बड़ी नहीं थीं। उनके बीच मे एक दूसरे को काटती

हुई दो हड्डियाँ और खोपड़ी बनी हुई थीं, ठीक जैसी तार के खम्भों पर (हिन्दुस्तान में स्पिरिट की बोतलों पर) 'खतरा' शब्द के साथ बनी हुई होती हैं।

अवेजानो में घुसते समय झण्डे को लेकर छीना-झपटी हो गई। काली कुर्तियोंवाले जवानों का एक झुण्ड बीच सड़क में खड़ा हमारी राह देख रहा था। उन्होंने तत्परता से हमें झण्डा देने के लिए कहा। हमने इन्कार कर दिया, क्योंकि हमारे पास वही एक झण्डा था। जवानों ने ड्राइवर को लॉरी रोकने का हुक्म दिया और तब जबर्दस्ती झण्डा छीनने की कोशिश करने लगे। लेकिन रास्ते में लोगों के चिढाने से बहुत ही खीझे हुए होने के कारण हम भी पूरी ताक़त से अड़ गये और कई काली कुर्तीवालों को सड़क की धूल में अच्छी तरह लोट-पोट कर दिया।

चिल्लाते हुए लोगों के एक उत्तेजित समूह ने लॉरी को चारों ओर से घेर लिया। उनमें बहुत-से काली कुर्तीवाले जवान थे लेकिन दूसरे बहुत-से फाएटा-मारा के आसपास के गाँवों के किसान भी थे। उन किसानों ने हमें पहचान लिया था और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर हमारा अभिनन्दन करने लगे थे। और अधिक अपमान न सहने का दृढ निश्चय किये हम लॉरी में झण्डे के चारों ओर जहाँ के तहाँ चुपचाप खड़े थे। एकाएक काँपता और पसीने-पसीने होता हुआ डॉन अबाक्च्यो का मोटा शरीर थोड़े-से कड़ाबीनवाले सैनिक-अफ़सरों के साथ हमारी ओर आता दिखाई दिया। हममें से सभी का यह विश्वास था कि वह, एक पुरोहित, अवश्य ही सैनरोक्को के रक्षणार्थ आया होगा। लेकिन उसने बिलकुल ही उलटा किया।

'क्या यह भी कोई उत्सव है ?' वह हम पर बिगड़ा। 'क्या सरकार और गिर्जा—चर्च—से समझौता करने का तुम्हारा यही तरीक़ा है ? तुम फाएटामारावासी कब तक अपने विद्रोहात्मक तरीक़ों से चलते रहोगे ?'

बिना दूसरा शब्द कहे हमने काली कुर्तीवाले जवानों को हमारा झण्डा ले लेने दिया। अगर एक पुरोहित सैनरोक्को की परवाह नहीं कर रहा था तो हम हमारे फ्युसिनो सम्बन्धी समझौते को खतरे में डालकर उसके प्रति वफ़ादार क्यों रहते ?

हम अवेजानो के बड़े बाजार के चौराहे में ट्रिब्यून* महल के पीछे छाया में एक अच्छी जगह ले जाये गये। किसानों के दूसरे झुण्ड चौराहे के चारों तरफ विभिन्न इमारतों की दिवालों के सहारे कतारों मे खड़े थे। किसानों के प्रत्येक समूह के बीच कड़ाबीनवाले सैनिकों के दस्ते खड़े थे। साइकल सवार सिपाही चौक में चारों ओर आ-जा रहे थे। जैसे ही कोई नई लॉरी आती सिपाही किसानों को उतारकर चौक में ऐसी जगह ले जाते, जहाँ वे किसानों के दूसरे झुण्डों से अलग खड़े कर दिये जाते थे।

खूबसूरत काले घोड़े पर सवार एक कड़ाबीनवाला सैनिक अफसर चौराहे मे होकर निकला।

उसके ठीक बाद ही एक साइकल सवार सिपाही सब दस्तों के पास कोई हुक्म ले गया। हरएक दस्ते मे से एक-एक सिपाही किसानों के एक-एक झुण्ड मे गया और उन्हें बैठ जाने का हुक्म दिया।

हम जमीन पर बैठ गये। कोई एक घण्टे तक बैठे रहे होंगे। एक घण्टे बाद दूसरे हुक्म ने बहुत ही खलबली मचा दी। चौक के कोने में बड़े अफसरों का एक झुण्ड दिखाई दिया। सिपाहियों ने हमें हुक्म दिया .

'उठो! एकदम खड़े हो जाओ! जोर से चिल्लाओ : पॉडेस्टा जिन्दाबाद! ईमानदार सरकार जिन्दाबाद! जो गरीबों को नहीं लूटती ऐसी सरकार जिन्दाबाद!'

हम खड़े हो गये और गला फाड़कर चिल्लाये—पॉडेस्टा जिन्दाबाद! ईमानदार सरकार जिन्दाबाद! जो गरीबों को नहीं लूटती ऐसी सरकार जिन्दाबाद!

'गरीबों को नहीं लूटनेवाली सरकार' के सदस्यों मे से हम खाली ठेकेदार को ही पहिचानते थे। जैसे ही 'गरीबों को नहीं लूटनेवाली सरकार' के सदस्य निकल गये हम सिपाहियों की अनुमति से फिर बैठ गये।

कुछ मिनिटों बाद दूसरे हुक्म ने और भी ज्यादा हलचल मचाई। सिपाहियों ने हुक्म दिया—उठो! उठ खड़े हो और जोर से बोलो प्रिफेक्ट

---

* 'ट्रिब्यून—प्राचीन काल का एक रोमन जन-प्रतिनिधि जो हमारे यहाँ के मैजिस्ट्रेट की हैसियत का होता था।

जिन्दाबाद ! (प्रिफेक्ट एक रोमन सरकारी अफसर। गवर्नर ?)

हम उठ खड़े हुए और जोर से चिल्लाये . प्रिफेक्ट जिन्दाबाद।

जब प्रिफेक्ट की बढ़िया मोटर निकल गई तो हम सिपाहियों के हुक्म से फिर बैठ गये।

लेकिन हम बैठे ही थे कि सिपाहियों ने हमें फिर खड़े होने के लिए कहा।

उन्होंने हुक्म दिया—जोर से, जितनी जोर से हो सके चिल्लाओ—श्रीमान सचिव महोदय की जय।

जब हम जोर से, जितनी ज़ोर से हो सका चिल्लाये . 'श्रीमान सचिव महोदय की जय! श्रीमान सचिव महोदय जिन्दाबाद!' एक बड़ी-सी मोटर और उसके पीछे बाइसिकलों पर सवार चार आदमी बिजली की तरह निकल गये।

तब हम सिपाहियों की आज्ञा से फिर बैठ गये। ड्यूटीवालों को जलपान की छुट्टी हो गई। हमने भी अपनी झोलियाँ खोलीं और अपने साथ लाई हुई रोटियाँ खाने लगे।

दो बजे फिर से वैसा ही अभिनय शुरू हुआ। पहले सचिव, उसके बाद प्रिफेक्ट और फिर गरीबों को नहीं लूटनेवाली सरकार के सदस्य निकले। हर बार खड़े होकर खूब उत्साह प्रदर्शित करने के लिए हम जोर-जोर से चिल्लाये।

अन्त में सिपाहियों ने हम से कहा :

'अब तुम्हें छुट्टी है। तुम जा सकते हो।'

सिपाहियों ने हमसे फिर कहा

'सब काम खत्म हो गया है। अब तुम जा सकते हो या एक चक्कर अवेजानो में घूम लो। तुम्हें एक घण्टे का समय दिया जाता है। एक घण्टे के अन्दर तुम्हें यहाँ से चले ही जाना चाहिये।'

'सचिव की बात और फ्युसिनो-समस्या का क्या हुआ ?' लेकिन किसी ने हमारी ओर कुछ ध्यान नहीं दिया।

जो कुछ हुआ था उसे मालूम किये बिना हम घर लौट जाने को तैयार नहीं थे।

बेराडो ने जो अवेजानो के रास्तों से परिचित था, कहा—मेरे साथ चलो।

वह हमें झण्डियों से सजे हुए एक महल के फाटक पर ले गया।

फाटक पर खड़े सन्त्री से उसने कहा—हम सचिव से बात करना चाहते हैं।

सन्त्री उस पर इस तरह टूट पड़ा मानो उसने कोई बहुत ही अपमानजनक बात कही हो और उसे फाटक के अन्दर खींचने का प्रयत्न करने लगा। हमने उसे पकड़ लिया और उसे लेकर दोनो में जरा सी खींचातानी हो गई। बहुत से लोग महल के अन्दर से बाहर दौड़े आये, जिनमें डॉन सर्कास्टाञ्जा भी था, वह खूब शराब पिये था और उसका कॉन्सर्टिना पतलून तीसरी अवस्था पर था।

'मेरे फाएटामारा-वासियों का कोई निरादर न करे। उनके साथ अच्छी तरह से पेश आओ।' उसकी यह आवाज सुनकर सत्री ने हमें छोड़ दिया। डॉन सर्कोस्टाञ्जा हमारे पास आया और हममें से प्रत्येक को गले लगाना और चूमना चाहा।

हमने 'जन मित्र' से कहा कि हम सचिव से बात करना चाहते हैं।

उसने जवाब दिया—सचिव तो चले गये।

बेरार्डो ने कहा—हम जानना चाहते हैं कि फ्युसिनो सवाल कैसे तै हुआ।

डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने एक सत्री को हमें राजकुमार टोलोनिया के दफ्तरों में ले जाने के लिए कहा, जहाँ एक अफ़सर ने हमें फ्युसिनो के बारे में जो कुछ तै हुआ था, बतलाया।

बेरार्डो ने पूछा—तो नई सरकार ने फ्युसिनो का प्रश्न तै कर दिया?

'हाँ, फ्युसिनो समस्या सभी सम्बन्धित लोगों के सन्तोषानुसार तै कर दी गई है।'

'हम चर्चा में भाग लेने के लिए क्यों नहीं बुलाये गये? हम बाहर चौक में ही क्यों खड़े रखे गये?' पॉन्जियो पिलाटो ने कहा।

अफ़सर ने जवाब दिया—सचिव का दस हजार किसानों से चर्चा करना सम्भव नहीं था। परन्तु उन्होंने तुम्हारे प्रतिनिधि से चर्चा कर ली थी।

'हमारा प्रतिनिधि कौन था?'

'माननीय कप्तान पेलिनो।'

'जमीन का बँटवारा कैसे किया गया? फाएटामारा के किसानों को कितनी जमीन दी जायेगी? बँटवारा कब हो रहा है?' बेरार्डो ने पूछा।

अफसर ने जवाब दिया—बँटवारा नहीं होगा। सचिव और किसानों के प्रतिनिधियों ने तै किया है कि छोटे-छोटे खेत-मालिकों को तोड़ दिया जाय। उनमें से कइयों को फौजी सेवा के उपलक्ष में जमीनें दी गई थीं, परन्तु फौजी सेवा कोई सच्ची आर्थिक कसौटी नहीं है

'बिलकुल ठीक है।' बेरार्डो ने कहा—लड़ाई पर जाने से यह साबित नहीं होता कि वे खेती का काम जानते हैं। ख़ास बात है खेती का काम जानना। फ्युसिनो उसे जोतनेवालों का है। डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा का यही सिद्धान्त था।'

'सचिव ने इस सिद्धान्त को मजूर किया है। फ्युसिनो जोतनेवाले लोगों को दे दिया जाय। फ्युसिनो उन लोगों को दिया जाय जिनके पास खेती करने या खेती करवाने के साधन हों। दूसरे शब्दों मे फ्युसिनो उन लोगों का जिनके पास काफी पूँजी है। फ्युसिनो निकम्मे छोटे-छोटे खेत-मालिकों से लेकर बड़े-बड़े अमीर किसानों को दे दिया जाय। फ्युसिनो की जमीन जिनके पास बड़े आर्थिक साधन न हों उन्हें लगान पर नहीं मिल सकती।'

'हमारे प्रतिनिधि ने क्या कहा?'

'माननीय पेलिनो ने किसानों का प्रतिनिधित्व करते हुए कहा कि राष्ट्रीय उपज के हक़ में किसान फ्युसिनो में लगान पर मिलनेवाली जमीन के बँटवारे से अलग कर दिये जाने चाहिये। इसे कार्यान्वित करने के लिए उन्होंने प्रस्ताव रखा कि बड़े पट्टीदारों का लगान बीस प्रतिशत कम और छोटे पट्टीदारों का लगान बीस प्रतिशत बढ़ा दिया जाय। लगान अनाज में, खासकर मीठे चुकन्दर में, चुकाया जाय जिसकी क़ीमत राजकुमार टोर्लोनिया का शासन-प्रबन्ध ठहरायेगा। छोटे खेतीहरों को जो चुकन्दर नहीं बोते प्रति हैक्टर सात सौ लीरा देना पड़ेगा। तुम्हारे प्रतिनिधि के प्रस्ताव सम्पूर्णतया स्वीकृत हो गये। अवेनानों मे एकत्रित होनेवाले फ्युसिनो तलहटी के किसानों ने सचिव, प्रफेक्ट और अन्य अधिकारियों का शानदार स्वागत करके इस विषय मे अपना सन्तोष व्यक्त किया है। क्या तुम इस बारे में और कुछ जानना चाहते हो?'

हमने कहा—नहीं, इतना बिलकुल स्पष्ट है।

श्रार इतना बिलकुल ही स्पष्ट था।

सड़कों पर इतनी अधिक रोशनियाँ की गई थीं कि काफी रात हो जाने पर भी उनकी वजह से दिन की तरह उजेला हो रहा था। (सब कुछ बिलकुल ही स्पष्ट था।)

अवेजानो का दृश्य अजीब दुःस्वप्नप्रद था, जैसे सब लोग पागल ही हो गये हों। मैंने लोगों को होटलों और आमोद गृहों में आनन्द मनाते देखा, वे नाच रहे थे और बेसिर-पैर की मूर्खतापूर्ण बातें बक रहे थे। और मुझे अपने मन को यह निश्चय कराने के लिए कि जो घटनाएँ हुई हैं वे सच थीं, काफी प्रयत्न करना पड़ा। मैं अपने आप से पूछ रहा था—क्या वह सब कुछ मजाक था, या वे लोग अनजाने ही पगला गये थे ?

बेरार्टो बोला—निर्लज्जतापूर्वक यह फैसला किसानों के सिर पटककर शहराती मजा उडा रहे हैं, वे सुखी हैं, वे खा-पी रहे हैं .

गन्दे हाव भावों के साथ गाते हुए शराबी युवकों का एक झुण्ड हमारे सामने से निकल गया।

गाना यह था :

तेरे और मेरे बाल
क्या खूब जंगल बनायेंगे ..

उनके पीछे-पीछे दूसरा झुण्ड आया, जिसमें काली कुर्तावाले वे जवान थे, जिन्होंने सवेरे अवेजानो आने पर हमारे पास से सैनरोक्को का झण्डा जब्त कर लिया था। हमें पहिचानते ही वे चिल्लाने लगे : 'ओ हो हो हो सैन-रोक्को !' और साथ ही निर्लज्ज बातों की एक बौछार ! तब वे हमें घेरकर एक दूसरे का हाथ पकड़े गोल गोल नाचने लगे ! वे अश्लील भंगिमाओं के साथ प्रेम का स्वांग (भाँड़ों की तरह हँसोड़) करते हुए यह गीत भी गाते जाते थे :

तेरे और मेरे पाँव
क्या खूब महराब बनायेंगे .

हमने उन्हें कोई बाधा नहीं दी। कुछ और करने की हममें शक्ति ही नहीं रही थी। समझने के प्रयत्न को हम बहुत पहले ही तिलाजलि दे चुके थे। शहरवासियों के बीच, हम दूसरी ही दुनिया में थे।

युवक हमें वहीं छोड़ चले गये। वे एक नृत्य-गीत 'ड्रॉलियेरेसा' 'हिम टु गैरीबाल्डी' की लय में गाते हुए चले गये।

इसके बाद दगदार कपड़े पहिने, लाल बाल और लाल मूँछों और ठुड्डी पर घाव के निशानवाला एक भद्र पुरुष, जो कुछ समय से हमारा पीछा कर रहा था, हमारे पास आया।

'तुम फाएटामारा के हो ?' उसने हमसे पूछा।

हमने कोई जवाब नहीं दिया।

'क्या तुम यह जानते हो कि अधिकारी तुमसे डरते हैं ? अधिकारी यह जानते हैं कि तुम नई सरकार के खिलाफ हो।' वह बोलता रहा।

हम चुप ही रहे।

'तुम्हारा ऐसा करना बिलकुल ठीक है। नई सरकार का विरोध करना बिलकुल बराबर है। इस तरह से काम नहीं चल सकता। आओ, हम अधिक शान्ति से इस पर बातें करें।'

भद्र पुरुष एक गली में मुड़ गया। हम उसके पीछे हो लिये। हमारे पीछे एक जवान आदमी आ रहा था, जो दिखावे पर से विद्यार्थी और कामगार के बीच की श्रेणी का जँचता था। वह हमारी ओर कई बार इस तरह मुस्कराया मानो हमसे कुछ कहना चाहता हो। लाल बालोंवाला भद्र-पुरुष हमें एक एकाकी, खाली आमोद-गृह में ले गया। वह जवान आदमी भी पीछे-पीछे वहाँ तक आया। क्षण-भर हिचकिचाया और तब अन्दर आकर हमसे थोड़ी ही दूर एक टेबल के सामने बैठ गया।

'इस तरह से नहीं चल सकता। किसानों में असन्तोष चरमता को पहुँच गया है। लेकिन तुम अपढ़ हो। नेतृत्व करने के लिए किसी पढ़े-लिखे की तुम्हें आवश्यकता है। डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने तुम्हारे बारे में बड़ी सहानुभूति से मुझसे कहा था। वह तुम्हारा भला चाहता है, लेकिन उसे अपना आगा-पीछा देखना पड़ता है और उसे अपनी मर्यादा के बाहर कदापि नहीं जाना चाहिये। यदि तुम्हें मेरी सेवाओं की आवश्यकता हो तो मैं हाजिर हूँ। यदि तुम्हारी कोई योजनाएँ हों तो मेरी सलाह ले सकते हो। मेरा मतलब समझे न ?'

उस अपरिचित भद्र-पुरुष का व्यवहार और जिस ढंग से उसने अपने

आपको हमारी सेवाओं में हाजिर किया था किसी को भी जो हमारी-जैसी मानसिक दशा में न होता, शङ्कास्पद लगता। पहली बार ही एक शहराती हमारे साथ इतने विश्वासोत्पादक ढंग से बोल रहा था।

हम कुछ नहीं बोले।

'मैं तुम्हारे मन की बात समझता हूँ। तुम्हारे मन की बात समझाने के लिए तुम्हारी आँखें काफी हैं। सिपाहियों ने तुम्हें एक घण्टे में अवेजानो से चले जाने के लिए कहा था, लेकिन तुम अभी तक यहीं हो। मैं तुम्हारा मतलब समझता हूँ। तुम अधिकारियों के विरुद्ध कुछ करना चाहते हो। यह बिलकुल साफ है, इतना साफ कि तुम इससे इन्कार नहीं कर सकते। और मैं यहाँ क्यों हूँ? क्यों, तुम्हारी सहायता करने, तुम्हें सलाह देने, अपने आपको तुम्हारे साथ बलिदान करने। आया तुम्हारी समझ में?'

हम कुछ भी नहीं समझे थे। पॉञ्जियो पिलाटो कुछ कहने ही जा रहा था कि बेराडों ने कुहनी के ठोसे से उसे चुप कर दिया।

'बहुत ठीक। मैं खुद भी सरकार का दुश्मन हूँ। शायद तुम हथियार चाहते हो, हाँ, तुम अधिकारियों पर चोट करना चाहते हो, लेकिन तुम्हारे पास साधनों की कमी है, तुम्हारे पास हथियार नहीं हैं। लेकिन मैं कहता हूँ कि हथियार पाना मुश्किल नहीं, बहुत आसान है, दरअसल बहुत ही आसान, दुनिया में इससे अधिक और कुछ आसान नहीं होगा।'

हम अभी तक एक भी शब्द नहीं बोले थे, लेकिन वह आदमी सवाल पूछता, और खुद ही उनका जवाब भी देता जाता था।

'तुम मुझे कह सकते हो कि, यह सुनने में बहुत अच्छा लगता है पर कहना एक बात है और करना दूसरी। बिलकुल ठीक, मेरी परीक्षा कर लो। यहाँ पन्द्रह मिनट तक मेरी राह देखो और मैं तुम्हें जो तुम चाहते हो ला दूँगा, और इससे अधिक क्या? मैं तुम्हें उसको काम में लेना भी बता दूँगा। क्या तुम अब भी मुझ पर सन्देह करते हो? क्या तुम्हें अब भी मुझ पर विश्वास नहीं होता? बहुत अच्छा, यहीं मेरी राह देखना।'

वह उठ खड़ा हुआ, हमने हाथ मिलाया, आर्डर दी हुई शराब के दाम चुकाये और बाहर चला गया।

उसके जाते ही हमारे पास की टेबल पर बैठा हुआ वह युवक हमारे पास आया और कहने लगा .

'वह सरकारी जासूस था, लोगों को उकसानेवाला एजेण्ट ! होशियार हो जाओ। वह तुम्हें एक बम ला देगा और तब गिरफ़्तार करवा देगा। उसके आने से पहले ही चले जाओ।'

हम खेतों के रास्ते ताकि कहीं उकसानेवाले एजेण्ट से सामना न हो जाय, अवेजानो से बड़ी सड़क की ओर रवाना हुए।

भूखे, प्यासे और कटुता से भरे हम उस सड़क पर अपने पाँव घसीटने लगे, जिसपर होकर आशा से भरे और सैनरोक्को का झण्डा हवा में फहराते हुए सवेरे अवेजानो आये थे।

लगभग आधीरात बीते हम फाएटामारा पहुँचे। तीन बजे हम फिर सड़क पर फ्युसिनो की ओर जा रहे थे, क्योंकि कटनी शुरू हो गई थी।

—पाँच—

ठेकेदार ने चरागाह के जिस टुकड़े पर अधिकार जमा लिया था पचायत ने उसके चारों ओर लकड़ी की एक बाड़ बनवा दी थी।

बाड़ सदा के लिए किसानों की शिकायत और बड़बड़ाहट मिटाने के इरादे से बनाई गई थी। किसानों को युगों से सार्वजनिक सम्पत्ति रही आनेवाली जमीन पर किसी के निजी कब्जा कर लेने के बारे में अभी भी कुछ सन्देह था और बाड़ के बावजूद भी वे बड़बड़ाते रहते थे।

एक दिन बाड़ जला दी गई।

ठेकेदार ने सार्वजनिक खर्चे से दूसरी बाड़ बनाकर उसकी देख-भाल के लिए दो चौकीदार रख दिये।

लेकिन क्या दो चौकीदार जमीन के उस टुकड़े को, जिसने सृष्टि के आरम्भ से गड़रियों के झगड़े, लुटेरे, भेड़िये और सब तरह के युद्ध और हमले देखे हों, जबर्दस्ती रोक सकते थे ? वे नहीं रोक सकते थे।

चौकीदारों की ठीक नाक के नीचे बाड़ जल उठी, उन्होंने साफ साफ जमीन में से अंगारे और लपटें निकलती देखीं, जिनसे कुछ ही मिनटों में

सारी बागड़ जलकर खाक हो गई। दोनों चौकीदारों ने, जैसा कि हर एक चमत्कार में अपरिहार्य है, यह सारा क़िस्सा डॉन अबाक्च्यो को और तब बाक़ी के लोगों को सुनाया। डॉन अबाक्च्यो कई पुरानी पुस्तकें उलटने पलटने के बाद इस निर्णय पर पहुँचा कि आग अवश्य ही अति-मानुषी इसलिए प्रेत द्वारा लगाई हुई होनी चाहिये। यह सुनकर हमें निश्चय हो गया कि प्रेत इतना बुरा नहीं है, जितना वह बतलाया जाता है। ठेकेदार प्रेत को तो गिरफ़्तार कर नहीं सकता था इसलिए उसने बदले में दोनों चौकीदारों को जेल में डलवा दिया।

इसमें कौन बढ़कर रहेगा, प्रेत या ठेकेदार? हम सभी ठेकेदार के खिलाफ़ थे, परन्तु अकेला बेराडों वॉयला ही प्रेत का खुल्लम-खुल्ला पक्षपाती था।

एक साँझ झुटपुटे (गोधूलि) के समय गिर्जाघर के सामने छोटे चौक के घाटीवाले हिस्से की ओर, छत के कटहरे के समान बनी हुई छोटी दिवाल पर हम फाण्टामारा की कुछ औरतें फ्युसिनो से अपने आदमियों के लौट आने की प्रतीक्षा में नित्य की तरह बैठी हुई इसी बारे में बातें कर रही थीं। वहाँ मैं थी, मेरिया ग्रेज्या और सियामारुगा, फ़िलोमेना और कास्टाना, और रेक्च्युटा और कानारोजो की लड़की थी। हम फ्युसिनो की ओर, जहाँ अभी से अँधेरा हो गया था, देख रही थीं। फाण्टामारा के नीचे, प्रधान सड़क की धूलवाली लकीर से दो भागों में बँटा हुआ मैदान जन शून्य और स्तब्ध था। मैदान में ऊपर फाण्टामारा तक पहाड़ी का चक्कर लगाकर आनेवाली छोटी सड़क भी सुनसान थी।

हम जानती थीं कि हमारे आदमी देर से आनेवाले हैं, क्योंकि फ्युसिनो में कटनी के समय वे ज्यादा देर तक काम करते रहते थे। एकाएक सन्नाटे में से—हमने ध्यान नहीं दिया कि वह ठीक कब शुरू हुई थी—हमने एक-सी नालदार भिनभिनाहट सुनी जो शुरू में मधुमक्खियों की और धीरे-धीरे बढ़कर नाज पीटने की मशीन की आवाज सी मालूम पड़ी। आवाज मैदान से आ रही थी लेकिन हमें उसका कारण कुछ समझ में नहीं आया। हमें नाज पीटने की कोई मशीन भी नहीं दिखाई दी। और फिर नाज पीटने की मशीनें जब कटनी ख़तम होने लगती हैं तभी प्रधान सड़क के आस पास आती हैं।

आवाज निरन्तर तेज होती जा रही थी।

ठीक उसी समय हमने घाटी से फाएटामारा को ऊपर आनेवाली सड़क के पहले मोड़ पर लोगों से भरी हुई एक लॉरी आती देखी। उसके पीछे ही दूसरी, और तीसरी, और चौथी, और पाँचवीं लॉरी थी।

पाँच लॉरियाँ फाएटामारा की ओर आ रही थीं। लेकिन उनके पीछे ही पीछे—दूसरी और बहुत-सी थीं। और तब इतनी लॉरियाँ आती दिखाई दीं जो किसी से गिनी नहीं जा सकती थीं। राम जाने, दस थीं कि पन्द्रह थीं या बारह? कॉनारोलो की लड़की का कहना था कि एक सौ हैं, पर वह गिन नहीं सकती थी। जब पहली लॉरी फाएटामारा के सामने सड़क के आखरी मोड़ पर आ गई, तो भी आखरी लॉरी अभी पहाड़ी के नीचे ही थी। हमने पहले कभी इतनी अधिक लारियाँ नहीं देखी थीं। हमारे किसी के ख़याल में भी कभी नहीं आया था कि इतनी अधिक लारियाँ भी दुनिया में हो सकती हैं।

फाएटामारा के सभी लोग— यानी स्त्रियाँ और बूढे जो फ्युसिनो नहीं गये थे—इतनी सारी लॉरियों की आवाज से घबराकर गिर्जाघर के सामनेवाले चौक में भाग आये। उन लॉरियों के अनपेक्षित आगमन का हरएक भिन्न-भिन्न अर्थ लगा रहा था।

सॉर्सानेरा का कहना था कि यह तो जात्रा है, जात्रा। आजकल जात्री पाँव पैदल नहीं जाते, मोटरों में जाते हैं। वे हमारे सैनरोक्को की जात्रा को आये हैं।

पास्क्वेल सिपोला, जिसने शहर में फौजी नौकरी की थी, बोला—नहीं, यह मोटर-दौड़ है। बहुत से मोटर चलानेवालों ने आपस में होड़ बदी है कि कौन तेज चला सकता है। शहरों में आये दिन मोटर-दौड़ हुआ करती है।

लॉरियों की आवाज प्रतिक्षण बढती ही गई और अब हमें उनके अन्दर के आदमियों की जोर-जोर की आवाजें भी सुन पड़ने लगी थीं। कड़कड़ाहट करती गोलियों की एक बौछार, और साथ ही गिर्जाघर की खिड़की से काँच के गिरने ने हमारे विस्मय को भय में बदल दिया।

'वे गोलियाँ चला रहे हैं! वे गोलियाँ चला रहे हैं! वे गिर्जाघर पर गोलियाँ चला रहे हैं! वे हम पर गोलियाँ चला रहे हैं!'

पर वे गोली चलानेवाले लोग थे कौन? वे गोलियाँ क्यों चला रहे

थे ? वे गोलियाँ किस पर और क्यों चला रहे थे ?

'यह लड़ाई हो रही है। यह लड़ाई हो रही है।' जनरल बाल्डीसेरा चिल्लाने लगा। 'यह लड़ाई हो रही है।'

लेकिन लड़ाई क्यों ? और हमारे खिलाफ लड़ाई क्यों ?

'यह लड़ाई है।' जनरल चिल्लाता रहा। 'यह लड़ाई है। क्यों की तो राम ही जाने, पर यह लड़ाई है।'

गिर्जाघर की देख-भाल करनेवाले त्योफिलो ने 'यदि लड़ाई है तो हमें युद्ध से बचने के लिए शान्ति-पाठ करना चाहिये।' कह कर शुरू किया ही था—'पृथिवी शान्ति, आप शान्ति', कि गिर्जाघर के सामनेवाले हिस्से पर गोलियों की एक दूसरी बौछार ने हम पर ईंटों के टुकड़े बिखेर दिये। शान्ति-पाठ मे विघ्न पड़ा। सभी बातें मूर्खतापूर्ण मालूम पड़ रही थीं। लड़ाई ? लड़ाई क्यों होगी ? गिडिटा स्कारपोन बेहोश हो गई थी। हम उसके चारों ओर बकरियों के झुण्ड की तरह खड़े थे।

हम रोने-चीखने लगे। अकेला जनरल बाल्डीसेरा ही अपने होश हवास दुरुस्त रख सका था। वह अब भी कह रहा था।

'इसके बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता, यह लड़ाई है। यह लड़ाई है और इसके बारे में कुछ भी नहीं किया जा सकता, यह लड़ाई है, यह भाग्य है। जब कभी लड़ाई छिड़ती है तो हमेशा ऐसा ही होता है।'

मेरिया विन्सेंझा वोंकला को एक अच्छा उपाय सूझ गया।

वह बोली—हमें गिर्जाघर की घण्टियाँ बजानी चाहिये। जब कभी देश पर विपत्ति आती है तो गिर्जाघर के घण्टे बजाये जाते हैं। १८६० में पिड्माण्टेसी के आने पर लोगों ने सारी रात घण्टे बजाये थे।

लेकिन त्योफिलो तो मारे डर के खड़ा भी नहीं हो सकता था। उसने मुझे चाभियाँ दे दीं। एल्वीरा और मैं खतरे का घण्टा बजाने के लिए मीनार पर चढ़ीं। लेकिन एल्वीरा हिचकी।

उसने पूछा—क्या औरतों के विरुद्ध भी कभी लड़ाई हुई है ?

मैंने उत्तर मे कहा—मैंने तो एक भी नहीं सुनी री !

'अच्छा, तो अभी आनेवाले ये आदमी हमारे नहीं आदमियों के खिलाफ

आये हैं। अगर वे आदमियों को पा जायेंगे तो अवश्य ही खून खच्चर होगा—जरूर ही युद्ध हो जायेगा। खतरे का घण्टा नहीं बजाना ही ज्यादा अच्छा है। यदि हम घण्टा बजायेंगी तो आदमी यह सोचकर कि आग लगी है भागे आयेंगे और तब मार-काट हो जायेगी।

एल्वीरा बेराडों के बारे में सोच रही थी। मैं अपने पति और पुत्र के बारे में सोच रही थी। इसलिए हम घण्टियों को बिना छुए ही गिर्जाघर के मीनार में ठहरी रहीं।

मीनार पर से हमने लॉरियों को फाण्टामारा के प्रवेश पर रुकते देखा।

राइफलें लिये हुए बहुत से आदमी लॉरियों में से उतर पड़े। कुछ लॉरियों के पास ही रुके रहे। बाक़ी गिर्जाघर की ओर बढे।

नीचे गाँववाले शान्ति-पाठ खतम कर चुके थे और अब प्रार्थना करने लगे थे

हे दयालु परमपिता परमात्मा,
इस युद्ध और अशान्ति से हमारी रक्षा कर!
परमात्मा, हमारी रक्षा कर!

गिर्जाघर की देख-भाल करनेवाला त्योफिलो प्रार्थना कहता था और हम उसके उत्तर में कहते थे परमात्मा, हमारी रक्षा कर। त्योफिलो ने जितने पापों के बारे में वह सोच सकता था, उन सबके नाम लिये और हरएक के बाद हमने दुहराया : परमात्मा हमारी रक्षा कर।

सभी दुखों से• परमात्मा, हमारी रक्षा कर!
सभी पापों से परमात्मा, हमारी रक्षा कर!

किसी को ज़रा भी यह खयाल नहीं था कि क्या होनेवाला है। त्योफिलो जब हैजा, दुष्काल और मौत से रक्षा करने की प्रार्थना कर रहा था उन सशस्त्र आदमियों की टुकड़ी चिल्लाती और बन्दूकें हिलाती हुई चौक के कोने में दिखाई दी। उनकी ज्यादा तादाद ने हमें डरा दिया। एल्वीरा और मैं आप ही आप मीनार के एक ऐसे कोने में दबक गई, जहाँ से अपने आपको बिना दिखाये हम देख सकती थीं।

दो-दो की कतार में कोई सौ-एक हथियारबन्द सिपाही रहे होंगे। राइफलों के सिवा उनकी कमर-पेटियों में खंजर भी थे। वे सब काली कमीजें पहिने हुए थे। हम उनमें से केवल गाँव के चौकीदार और सड़क सुधारनेवालों के मुकादम फिलिप्पो इलवेलो को पहिचान सकीं, लेकिन दूसरे भी नितान्त अपरिचित और दूर के रहनेवाले नहीं थे। उनमें से कुछ बे-खेत-खलिहानवाले ऐसे किसान थे, जो जमींदारों के यहाँ काम करते हैं और कमाई की अपेक्षा अधिकतर चोरी और उठाईगिरी करके ही अपना गुजारा चलाते हैं। कुछ दूसरे फेरीवाले जो अक्सर हाट-बाजार में दिखाई देते हैं, और बर्तन मलनेवाले, और बड़े लोगों के कोचवान, और गा-बजा कर माँगते फिरनेवाले लोग थे—कमजोर, और बड़े जमींदारों के सामने जरा-जरा-सी सुविधाओं के लिए दुम हिलानेवाले खुशामदी टट्टू, और जूठे टुकड़े तोड़नेवाले दुराचारी लोग जो एक समय हमारे पास वोट माँगने आते हैं, आज वही राइफलें लेकर हमारे खिलाफ लड़ाई करने आये थे। चोर और आवारों को व्यवस्था और सम्पत्ति की रक्षा करने का भार सौंपा गया था। बिना घरबार के, बिना इज्जत के, बिना विश्वास के अधर्मी, गरीब, और साथ ही गरीबों के दुश्मन वे लोग!

पेट पर तिरंगा पट्टा लपेटे ठिंगने कद का एक मोटा आदमी उनके आगे-आगे चल रहा था। उसके साथ मुर्गे की तरह अकड़ता हुआ फिलिप्पो इलवेलो कदम रख रहा था।

'यह तुम क्या कह रहे हो?' तिरंगे पट्टेवाले आदमी ने त्योफिलो से पूछा।

'मैं शान्ति के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ।' त्योफिलो ने जवाब दिया।

'बहुत अच्छा, मैं तुम्हें शान्ति दूँगा,' उस ठिंगने-मोटे आदमी ने हँसते हुए कहा और फिलिप्पो इलवेलो को इशारा किया।

फिलिप्पो इलवेलो त्योफिलो के पास बढ़ आया और उसके चेहरे पर कसकर एक चाँटा मारा।

त्योफिलो ने गाल को हाथ से सहलाते हुए चारों ओर देखा और हैरानी से पूछा—चाँटा क्यों मारा?

वह ठिंगना आदमी गुर्राने लगा—डरपोक! कायर! बुजदिल! तू आत्म-रक्षा क्यों नहीं करता? कायर कहीं का!

लेकिन त्योफिलो न तो अपनी जगह से हिला न एक शब्द ही बोला।
मोटे आदमी ने अपने सामने झुण्ड में देखा, लेकिन उन स्त्रियों और
ों और बीमार आदमियों में उसे अधिक भड़कानेवाला कोई न दीखा।
जेप्पो इलवेलो के साथ थोड़ी सी सलाह करने के बाद उसने कहा—मेरे
ाल से इस बारे में अब कुछ नहीं करना है।
तब झुण्ड की ओर मुड़कर उसने हुकम दिया :
'सब लोग घर चले जाओ।'
जब सब लोग घर चले गये तो काली कुर्तीवालों की ओर मुड़कर उस
ले ने हुकम दिया :
'पाँच पाँच की टोलियाँ बनाओ और हर एक मकान की तलाशी लो
सब हथियार जब्त कर लो। जल्दी, आदमियों के आने से पहले
आओ।'
चौक बिजली की तरह खाली हो गया। इस वक्त तक काफी अँधेरा
ाया था। हमारी जगह से हमने पाँच-पाँच की टुकड़ियाँ फाण्टामारा की
सँकड़ी गलियों में होकर घरों में घुसती देखीं।
एल्वीरा और मैंने सोचा कि बिजली बत्ती या किसी दूसरे उजाले की
यता बिना इन कानून के प्रतिनिधियों को तलाशी लेना कठिन जायेगी।
लेकिन एकाएक ग्रेज्या की चीख ने, जिसका मकान गिर्जाघर की मीनार
ीक पास था, और ठीक उसी समय दूर के घरों से फिलोमेना कास्टाना,
या रेक्युटा, लिजावेत्ता लिमोना, काराम्रिना, फ़िलोमेना क्वेटर्ना
े की वैसी ही चीखों और सामान उलटने-पलटने और कुर्सियाँ और
ारियाँ तोड़ने की आवाजों ने हम पर इन सशस्त्र आदमियों का वास्तविक
ा प्रकट कर दिया।
हमारे नीचे मेरिया ग्रेज्या बलि पशु की तरह चीख रही थी। खुले दरवाजे
ाद हमें, अस्पष्ट, पाँच आदमियों के खिलाफ एक जवान स्त्री का झगड़ना
रहा था। कई बार वह झगड़ती-झगड़ती बचकर दरवाजे तक पहुँची
र बार उन आदमियों ने उसे पकड़कर रोक लिया। उन्होंने उसके पाँव
कन्धे पकड़कर उसे जमीन पर गिरा दिया और तब दबाकर उसके शरीर

पर के कपड़ों का एक-एक चिन्दा फाड डाला। उनमें से चार ने उसके हाथ-पाँव पकड़ रखे और पाँचवें ने उसके साथ अपनी इच्छा-पूर्ति की। मेरिया ग्रेज्या की चीखें गला कटते हुए पशु की घरघराहट जैसी थीं। जब पहला आदमी समाप्त कर चुका तो उसकी जगह दूसरे आदमी ने ली और शहादत फिर से शुरू हुई। और जब दूसरा आदमी खतम कर चुका तो तीसरे आदमी की और तब चौथे आदमी की बारी थी। लेकिन इस समय तक उस औरत की चिल्लाहट इतनी धीमी हो गई थी कि हम तक मुश्किल से सुन पड़ती थी। उसका झगड़ना और हाथ-पाँव पटकना भी बिलकुल बन्द हो गया था। चौथे और पाँचवें आदमी की बारी में किसी को उसके हाथ-पाँव पकड़ने की आवश्यक्ता न हुई। अपनी मन्शा पूरी हो जाने के बाद वे आदमी हँसी के ठहाके लगाते हुए बाहर निकले और लिजावेत्ता लिमोना के घर जो वहाँ से बीस गज की दूरी पर था, गये।

मेरी बगल में खड़ी हुई एल्वीरा ने यह सब देखा। इसे रोकने का कोई उपाय नहीं था। सब हमारी आँखों के ठीक सामने, नीचे कुछ गजों के फासले पर हुआ था। उसने छोटी-बड़ी प्रत्येक बात देखी थी। जब वह दोनो हाथ मेरी गर्दन में डालकर मुझसे लिपट गई तो उसका सारा बदन जूडीवाले की तरह काँप रहा था। ऐसा लगता था मानो गिर्जाघर की वह मीनार और हमारे चारों ओर की सब जमीन ही हिल रही है। मैंने अपनी पूरी ताकत लगाकर उसे गिरने से रोका, नहीं तो वह लकड़ी की सीढियों से नीचे लुटक कर हमारी छिपने की जगह प्रकट कर देती। एल्वीरा फटी हुई डरावनी आँखों से अभी तक उस कमरे की ओर टक लगाये देख रही थी, जहाँ मेरिया ग्रेज्या का क्षत विक्षत शरीर पड़ा हुआ था और जहाँ से वे पाँचों आदमी अभी हाल ही गये थे। मैं डरी कि वह कहीं पगला न जाय। एक हाथ से मैंने उसकी आँखे इस तरह मूँद दीं जैसे कोई मुर्दे की मूँदता है। तब एकाएक मैं बहुत कमजोर हो गई, मेरे पाँव लड़खड़ाये और सब कुछ अन्धकारमय हो गया।

जो कुछ तुम्हें सुनाया है उसके सिवा मुझे उस रात की और कोई घटना याद नहीं रही।

कई बार ऐसा होता है कि मैं दुनिया भर की और सब बातें भूल जाती

हूँ, पर याद रहती है उस रात की केवल वह घटना जो मैंने तुम्हें अभी सुनाई है। कभी-कभी मैं ऐसा ही महसूस करती हूँ। बाद की बातें मेरा पति तुम्हें सुनायेगा।

प्युसिनो से लौटते हुए हम आदमियों को इन घटनाओं के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। यही तो दुःख है कि इन औरतों ने गिर्जाघर की घण्टियाँ नहीं बजाईं।

घर लौटते वक्त पेसिना के पास मेरा और बेरार्डो वॉयला का विन्सेञ्जो स्कॉर्ना, पैपासिस्टो, सिरोजि रोण्डा, मेरिया ग्रेज्या के बाप और लिजाबेता लिमोना के सगाई वर से साथ हो गया था और हम साथ-साथ घर आ रहे थे। ग्यासिण्टो वार्लेट्टा, क्विरिंटलियानो, वेनेर्डो सेण्टो, लुइजी सेर्पा और दूसरे हमारे पीछे थे।

गाँव के बाहर इतनी-सारी लॉरियाँ और उनके पास हथियारबन्द आदमी देखकर बेरार्डो ने कहा

'मेरे ख़याल से यह बाड़ के बारे में है। ठेकेदार समझता है कि फाएटामारा में से किसी ने बाड़ जलाई है।'

लॉरियों के पास खड़े हुए हथियारबन्द आदमियों में से कई बेरार्डो को पहिचानते थे, पर उन्होंने अपने फाएटामारा आने का कारण नहीं बतलाया या शायद वे खुद नहीं जानते थे। उन्होंने हमें रोक लिया और जब हमारे पीछेवाले आदमी आ गये तो हम सबको गाँव के अन्दर ले गये। अन्दर आकर हमने सड़क सुधारनेवालों के मुक़ादम फ़िलिप्पो इलबेलो के साथ मोटी तोंदवाले नाटे आदमी के नेतृत्व में हथियारबन्द आदमियों को एक घेरा बनाये हुए खड़े देखा।

घेरे के अन्दर जनरल बाल्डीसेरा, त्योफिलो, पास्केल सिपोला, बूटा एण्टोनियो ग्रासियोला, अनास्तेसो दर्जी आदि मुँह बन्द किये, और डरे हुए लड़ाई के बन्दियों की तरह चुपचाप खड़े दीखे।

हमारे पहुँचते ही घेरा खुला और हमें अन्दर लेकर फिर बन्द हो गया।

बेरार्डो ने मेरी ओर इस तरह से देखा मानो उसकी समझ में नहीं आया

कि इस बात पर हँसे या गुस्सा हो। हमारे आने से पहले जो कुछ हुआ था उसके बारे में हमने जनरल बाल्डीसेरा से जानने की कोशिश की। लेकिन मेरे कान के पास मुँह लाकर उसने धीरे से खाली इतना कहा : 'यह बिलकुल अजीब वाकिया है।' फिर वह बेरार्डो और दूसरे आदमियों के पास गया और उनके कान में भी यही कहा। उसके 'यह बिलकुल अजीब वाकिया है।' कहने से हमारी समझ में तो कुछ नहीं आया, पर, हाँ, बाल्डीसेरा के मुँह से जो गम्भीरतम घटनाओं के लिए भी इतिहास से हमेशा उदाहरण तैयार रखता था, यह सुनना बहुत ही अजीब लगा।

फ्युसिनो से लौटनेवाली तीसरी टुकड़ी को अन्दर लेने के लिए हथियारबन्द आदमियों का घेरा एक बार फिर खुला। इनमें पॉञ्जियो पिलाटो, ग्यासो लोसुर्डो, माइकेल जोम्पा, ग्योवानी टेस्टोन, ग्योवानी युलिबा, गैस्पेरोन और कुछ जवान छोकड़े थे।

उन्होंने हमारी ओर इस तरह से देखा मानो सारे झगड़े की जड़ हमी ह लेकिन इतने सारे हथियारबन्द आदमियों की उपस्थिति में वे कुछ न बोले।

उनके बाद घेरे में आनेवाले एचिली प्युक्षो, एल्बर्टो सेसान, पैलुम्ब रेकच्युटा का घरवाला, सेसिडियो बर्टोन और मेरिया ग्रेज्या के सगाई-वर सहि कुछ और छोकड़े थे।

यह किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या होनेवाला है। स चुप थे। कोई किसी की ओर नहीं देखता था। सभी महसूस करते थे कि हम और अधिकारियों के बीच कुछ गड़बड़ हो गई है, लेकिन कोई भी दूसरों अपेक्षा अधिक खतरा मोल लेना नहीं चाहता था। हर एक अपने बारे पहले सोचता था।

हथियारबन्द आदमियों का घेरा एक बार और एण्टोनियो स्पावेए रापेल स्कार्पोन, लुरजी देसान्कोस, एण्टोनियो चापा और कुछ दूसरे लोगों अन्दर लेने के लिए खुला।

उस गुटल्ले के इरादों के बारे में ख्याल दौड़ाना मुश्किल था। क्या हम सबको जेल ले जाना चाहता था? यह बिलकुल ही असम्भव और ग अनहोनी बात थी।

कुछ समय तक हम अपने गाँव के बीच चौराहे में रोक रखे जा सकते थे लेकिन हम सब को शहर में जेल तक घसीटने के लिए उतने आदमी काफी नहीं थे।

इन काली कुर्तीवालों को हम पहिचानते थे। ये रात में आये थे, नहीं तो इन्हें यह सब करने का साहस न होता। बहुतों के शरीर से शराब की बदबू आती थी। आँखें मिलाने की हिम्मत न होने से सामने देखने पर ये मुँह फेर लेते थे। ये भी गरीब ही थे, परन्तु एक खास तरह के गरीब, वे खेत-खलिहान के, परिश्रम से जी चुरानेवाले, पेट भरने के लिए रोज कुछ-न-कुछ नया दग़ा-फरेब करनेवाले, एक भी धन्धा न जाननेवाले या बहुत-से धन्धे जाननेवाले, जो एक ही बात है। अमीरों और अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह करने की शक्ति और आत्म-प्रतिष्ठा न होने से ये छोटे खेत-मालिकों और किसानों जैसे अन्य ग़रीबों पर अत्याचार करने और लूटने की खातिर उनके तलुवे सहलाना कहीं ज्यादा पसन्द करते थे। दिन उजाले ये सड़कों पर गरीब बने गिड़गिड़ाते फिरते थे। रात में और ज्यादा संख्या में इकट्ठे होकर दुष्ट और उत्पाती बन जाते थे। ये सदा हुक्म देनेवाले के अधीन रहते आये हैं और सदा रहेंगे। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से इन्हें एक खास ढंग की वर्दी और खास ढङ्ग के हथियार देकर एक विशेष फौज में भर्ती करना बिलकुल नई और अजीब बात थी।

फैसिस्ट कहे जानेवाले सब के सब ऐसे ही लोग हैं।

उनके साहस का एक दूसरा कारण भी था। हममें से हरएक उनमें से तीन तीन के लिए काफी था। परन्तु उनके बीच हम कर ही क्या सकते थे? हमें आपस में एक दूसरे से बाँधनेवाला—संयुक्त करनेवाला—ऐसा था ही क्या? हमारे बीच आपस में जोड़नेवाली ऐसी कड़ी ही कौन-सी थी?

घेरे के बीच हम सब खड़े थे। हम सभी फाण्टामारा में पैदा हुए थे। इसके सिवा हममें और कोई समानता नहीं थी। हम में से प्रत्येक पहले अपनी-अपनी सोचता था। हरएक दूसरों को हथियारबन्द आदमियों के घेरे में छोड़ कर खुद अकेला बाहर निकल जाने की तरकीब सोचता था। हममें से सभी परिवारवाले थे और सब अपने-अपने परिवार की सोचते थे।

वेराडों अकेला ही एक अपवाद हो सकता था, लेकिन उसके न तो जमीन थी और न जोरू ही।

इसी बीच फ्युसिनो से दूसरे किसान आये, जिनमें सियामारुगा का घरवाला भी था, और वे भी घेरे में कर लिये गये।

इस समय तक काफ़ी देर—अँधेरा—हो गई थी।

वह ठिंगना और मुटल्ला आदमी बोला :

'हमें पूछ-ताछ शुरू करनी चाहिये।'

पूछ-ताछ ? कैसी पूछ-ताछ ?

उन्होंने घेरे के अन्दर कोई एक गज चौड़ा रास्ता-सा बनाया और उसके एक ओर वह मोटा आदमी और दूसरी ओर फिलिप्पो इलवेलो खड़ा हो गया।

पूछ-ताछ शुरू हुई। पहिला नाम गिर्जाघर की देखभाल करनेवाले त्योफिलो का पुकारा गया।

मोटे आदमी ने पूछा—जै किसकी ?

त्योफिलो एक धमाके से जमीन पर आ गिरा।

न्याय के उस प्रतिनिधि ने फिर दुहराया—जै किसकी ?

त्योफिलो ने अपने करुणापूर्ण, डरे हुए चेहरे से किसी प्रेरणा की आशा में हमारी ओर देखा, लेकिन इसके बारे में हमें, जितना वह जानता था, उससे अधिक कुछ मालूम नहीं था।

जब त्योफिलो ने कोई जवाब नहीं दिया तो वह आदमी फिलिप्पो इलवेलो की ओर जिसके हाथ में एक बड़ी-सी किताब थी मुड़ा और बोला : लिखो 'नियमोल्लंघक।'

उन्होंने त्योफिलो को जाने दिया—छोड़ दिया। दूसरा नाम अनाक्लेटो दर्जी का पुकारा गया।

मोटे आदमी ने उससे पूछा—जै किसकी ?

अनाक्लेटो ने जिसे सोचने को समय मिल चुका था, जवाब दिया—मेरी की जै।

फिलिप्पो इलवेलो ने पूछा—कौन सी मेरी ?

'लोरेटो की मेरी।'

ठिगने आदमी ने कहा—'नियमोल्लघक' लिखो।

उन्होंने अनाक्लेटो को जाने दिया। दूसरा नाम बूढे एण्टानियो त्रासियोला पुकारा गया। उसके पास भी जवाब तैयार था।

वह चिल्लाया—सैनरोक्को की (बजरगबली की) जै !

लेकिन उसका उत्तर भी सन्तोषप्रद नहीं था।

उस ठिगने—मोटे आदमी ने कहा—'नियमोल्लघक' लिखो।

चौथा नाम पास्केल सिपोला का था।

उससे पूछा गया—जै किसकी ?

'माफ़ कीजिये, लेकिन आपका मतलब क्या है ?' सिपोला ने पूछने की मत की।

'जो कुछ तुम्हारे मन मे हो साफ जवाब दो। किसकी जै ?' मोटे दमी ने कहा।

'दाल रोटी की जै।' पास्केल सिपोला का जवाब सोलहो आने ईमानदारी पूर्ण था। लेकिन उसके लिए भी 'नियमोल्लघक' ही लिखा गया।

हममें मे हरएक की बारी आनेवाली थी और अधिकारियों के प्रतिनिधि अपेक्षित उत्तर कोई भी नहीं सोच सका था।

हमारी सबसे बड़ी चिन्ता थी कि गलत जवाब देने से कहीं कुछ देना तो ीं पड़ेगा। 'नियमोल्लङ्घक' का अर्थ कोई नहीं जानता था, लेकिन 'देने' का र्थ हम सभी अच्छी तरह से जानते थे।

सही जवाब देने के लिए इशारा पाने की आशा मे मैंने जनरल बॉल्डी-ा के जितना समीप हो सकता था पहुँचने की कोशिश की, क्योंकि वह में सबमे ज्यादा पढा-लिखा था और अपनी जवानी के दिनों नेपल्स में भी ़ चुका था। लेकिन वह मेरी ओर इस तरह से एक श्रेष्ठ और तरस खानेवाली ी हँसता हुआ देख रहा था मानो वह ठीक उत्तर जानता है लेकिन किसी ो बतलायेगा नहीं।

जब मोटे आदमी ने उससे पूछा 'किस की जै ?' तो बूढा मोची अपनी ी उतार कर पुकार उठा :

'रानी मार्ग्रेट की जै।'

इसका वाल्डीसेरा की आशा से भिन्न ही परिणाम हुआ। सभी हथियार-बन्द आदमी कहकहे लगाने लगे और मोटे आदमी ने कहा :

'वह मर गई है। रानी मार्ग्रेट मर गई है।'

बूढे मोची ने भयभीत होकर कहा—वह मर गई है ? यह हो ही नहीं सकता ! असम्भव !

मोटे आदमी ने कहा—लिखो 'विधानवादी।'

इस अकारण घटना के परिणामस्वरूप उदास होकर सिर हिलाता हुआ वाल्डीसेरा चला गया। बेरार्डो के सिखाने से अपनी बारी पर एण्टोनियो जापा ने कहा—लुटेरों का नाश हो ! इसे सुनकर काली कुर्तीवालों की ओर से विरोध में एक खुसफुसाहट हुई।

मोटे आदमी ने फिलिप्पो इलवेलो को 'अराजकवादी' लिखने की आज्ञा दी। जापा चला गया, और अब एण्टोनियो स्पावेण्टा की बारी थी।

वह बोला—आवारों का नाश हो। इस पर काली कुर्तीवालों ने फिर शोर किया। स्पावेण्टा भी 'अराजकवादी' लिख लिया गया।

मोटे आदमी ने लुइजी देल्लाक्रोस से पूछा : 'जै किसकी ?' लेकिन वह भी बेरार्डो का ही शिष्य था इसलिए 'जै' बोलने के बजाय उलटा ही जवाब दिया :

'करों का नाश हो।'

इस बार फैसिस्टों ने कोई प्रतिकार नहीं किया, लेकिन देल्लाक्रोस भी 'अराजकवादी' ही लिखा गया।

न्याय के प्रतिनिधि के ठीक मुँह पर जब गफेल स्कापान ने कहा—'मजदूरी चुकानेवाले लोगों का नाश हो।' तो बहुत ही अधिक सनसनी फैल गई।

मोटे आदमी ने उसे गिरफ्तार करना चाहा, परन्तु राफेल ने जवाब देने से पहले ही घेरे से बाहर हो जाने की होशियारी की थी। दो छलांगों में तो वह गिर्जाघर के पीछे पहुँच गया था, और उसके बाद हमें नहीं दिखाई दिया।

बाकी के कुछ अधिक समझदार थे। उनमें पहला ग्यासोर्वी लोसुर्डो था। उसने जवाब दिया : 'सबकी जै।' इससे अधिक निरापद जवाब सोचना मुश्किल था। परन्तु यह भी ठीक नहीं निकला।

मोटे आदमी ने फिलिप्पो इलबेलो से कहा—'उदार' लिखो।

ग्योवानी युलिवा ने पवित्र आशय से कहा—सरकार की जै।

फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा—कौन-सी सरकार?

युलिवा ने एक से अधिक सरकारों के बारे में कभी सुना ही नहीं था, तो भी उसने नम्रता की खातिर जवाब दिया.

'न्यायपूर्ण सरकार।'

मोटे आदमी ने फिलिप्पो इलबेलो से कहा—लिखो 'राज्य द्रोही'।

पोंझियो पिलाटो ने भी अच्छाई के ख्याल से अपनी बारी आने पर 'सरकार की जै' ही कहा।

फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा—कौन सी सरकार?

'अन्यायी सरकार!'

मोटे आदमी ने कहा—'अपराधी' लिखो।

अभी तक सही जवाब कोई भी नहीं दे सका था। जितने ही ज्यादा गलत जवाब इकट्ठे होते गये सही उत्तरों का चुनाव क्रमशः अधिकाधिक परिमित होता गया। लेकिन, वास्तव में, ग़लत जवाब देने पर कुछ चुकाना पड़ेगा या नहीं इस बारे में हम अभी तक बिलकुल अँधेरे में थे। अकेले बेराडों को इस सम्भावना की कोई चिन्ता नहीं थी और वह अपने युवक मित्रों को 'अमुक की जय' के बजाय 'अमुक का नाश' वाले ढीठतापूर्ण जवाब सुझाकर स्वयं मजा लूट रहा था।

बेनेर्डो सेण्टो ने कहा—बैंक का नाश हो।

'कौनसी बैंक?' फिलिप्पो इलबेलो ने पूछा।

बेनेर्डो ने, जिसे अच्छी तरह मालूम था, जवाब दिया—बैंक केवल एक है और जो सिर्फ ठेकेदार को ही रुपए देती है।

मोटा आदमी बोला—लिखो 'समाजवादी'।

गैस्पेरोन भी 'टोर्लोनिया का नाश हो!' जवाब के लिए 'समाजवादी' लिखा गया।

'ग़रीबों की जै!' इस जवाब के लिए पालुमो साम्यवादी लिखा गया।

इसी बीच बेराडों की दादी, मेरिया विन्सेञ्जा, चौराहे के दूसरी ओर से

वहाँ आई। थोड़ी देर पहले ही हमने उसे मेरिया ग्रेज्या के घर में जाते देखा था।

वह बूढ़ी चिल्लाने लगी—बेराडों! बेराडों कहाँ है? इन डाकुओं ने हमारे घरों में क्या कर डाला? हमारी औरतों के साथ इन्होंने क्या किया? और हमारे आदमी? हमारे आदमी कहाँ हैं? बेराडों, ए बेराडों!

बेराडों एकदम समझ गया या समझने का अभिनय किया। एक ही छलांग में वह फिलिप्पो इलबेलो के सामने, जो भय से पीला पड़ गया था, जा पहुँचा और उसका गला पकड़कर उसने पूछा:

'एल्वीरा कहाँ है? तुमने एल्वीरा का क्या किया?'

बूढ़ी मेरिया ग्रेज्या, जो इस समय तक गिर्जाघर की देहलीज पर पहुँच गई थी, घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करने लगी—देवी माता, हमें बचा, हमारी रक्षा कर, हमारी बाधाएँ हर!

वह प्रार्थना कर ही रही थी कि गिर्जाघर के बड़े घण्टे की आवाज़ ने हम सबका ध्यान मीनार के सिरे की ओर आकर्षित किया।

हमें वहाँ कटघरे पर अपने हाथों के सहारे झुकी हुई लम्बी, दुबली, बर्फ से सफेद चेहरेवाली एक स्त्री की छायाकृति—एक प्रेतात्मा—दीखी।

हमारी साँस ही बन्द हो गई। इतने में वह आकृति ग़ायब हो गई।

'यह देवी माता है! यह देवी माता है!' भय विह्वल फिलिप्पो इलबेलो चिल्ला उठा।

दूसरे हथियार-बन्द आदमी भी चिल्लाने लगे—यह देवी माता है! यह देवी माता है!

हथियार-बन्द आदमियों का घेरा तितर-बितर होकर गाँव के बाहर लॉरियों की ओर सिर पर पैर रख कर भागा।

हमने इंजिनों का 'स्टार्ट'—चालू—होना सुना। तब सामने की बिजलियाँ जलाये पहाड़ी के नीचे की ओर अन्धा-धुन्ध भागती हुई लॉरियाँ दीख पड़ीं। वे इतनी ज़्यादा थीं कि हम गिन नहीं सकते थे। उनका जुलूस समाप्त होता ही नहीं दीखता था।

पहाड़ी के तले, आखिरी मोड़ पर जहाँ पहाड़ी सड़क प्रधान सड़क से

मिलती है हमने लॉरियों का जुलूस एकाएक रुकते देखा। वे आधे घण्टे से ज्यादा देर तक रुकी रहीं।

मैंने बेराडों से पूछा—वे किसलिए रुके हैं? क्या वे फिर आ रहे हैं?

उसने हँसते हुए जवाब दिया—उनके रुकने का कारण राफेल स्कार्पोन जानता है।

लॉरियों के फिर चालू होने तक काफी देर हो गई थी, इसलिए मैंने बेराडों से पूछा—क्या हम सोने चलें या एकाध घण्टा इन्तजार करने के बाद फ्युसिनो चल दें?

'सबसे पहला काम है चल कर यह देखना कि गिर्जाघर की मीनार में कौन है।' बेराडों ने कहा।

बेराडों भूत में विश्वास करता था, लेकिन देवी माता में नहीं। यदि भूत दिखाई पड़ता तो वह विश्वास कर लेता लेकिन देवी माता के बारे में उसे विश्वास नहीं आया।

हम मीनार पर चढे और वहाँ मेरी घरवाली और एल्वीरा को मुर्दे से भी बुरी हालत में पाया।

दूसरे दिन हमें मालूम हुआ कि सड़क पर रखे हुए एक वृक्ष के तने से पहली लॉरी टकराकर उलट गई थी और इसलिए पहाड़ी के नीचे लॉरियों का जुलूस रुक गया था। कई लोग घायल हुए थे, जिनमें कमर के चारों ओर तिरंगे पट्टेवाला वह ठिगना और मोटा आदमी भी था।

—छः—

उस रात के दुःखद अनुभव से एल्वीरा बीमार पड़ गई।

कुछ ही पहले उसे रँगने और बुनने के लिए थोड़ी-सी ऊन मिली थी लेकिन बिमारी की वजह से काम करने की असमर्थता ने उसे बहुत ही बेचैन कर दिया था। हमारे इधर लड़ाई के समय से ही बुनने का धन्धा करीब-करीब मर चुका था। एल्वीरा का करघा अब भी थोड़े से चालू करघों में से एक था, लेकिन उसके पास भी काम निरन्तर कम होता जा रहा था। आजकल कभी-कभार ही कोई उसके पास कुछ गज ऊन बुनवाने और रँगवाने लाता था।

पास-पड़ोस के गाँवों मे शताब्दियों से चलते आ रहे करघों की होली ताप ली गई थी। इसके कई कारण थे—स्थानीय भेड़ों का चला जाना, शहर मे बने ऊनी माल का प्रचलन और किसानों की निरन्तर बढनेवाली गरीबी।

एल्वीरा ने बेरार्डो से आग के लिए लकड़ी काटने की मदद मांगी, जिसे उसने प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार कर लिया परन्तु बदले में पैसा लेने को राजी नहीं हुआ। वह न केवल लकड़ियाँ ही काटता था लेकिन एल्वीरा की देख रेख मे उसने ऊन की रँगाई भी शुरू कर दी थी।

एल्वीरा एक कोने मे अपने पुआल के बिछौने पर पड़ी रहती थी। उस रात के सदमे से वह अभी तक अच्छी नहीं हुई थी और उसका पीलापन नहीं गया था। शायद इस पीलेपन की वजह से ही उसके काले बालों और काली आँखोंवाला गोल, साँवला चेहरा और दुबला शरीर अधिक सुन्दर दिखाई देता था। वह सूचनाएँ देती थी और बेरार्डो एक नौसीखिये बच्चे के उत्साह से उनका पालन करता था। कभी-कभी वह उसे परेशानी मे डालनेवाले सवाल भी पूछ बैठता था जैसे यहाँ की नील में डालने से पीला कपड़ा मूँगिया क्यों हो जाता है?

वह जवाब देती—इसके सिवा वह और कुछ हो ही नहीं सकता।

'लेकिन क्यों', बेरार्डो पूछता।

'क्योंकि ऐसा ही होता है।' वह जवाब देती और तब अपनी बात के आधार के लिए पूछती

'अच्छा, सूरजमुखी फूल के बीजों से प्याज क्यों नहीं उगते?'

जवाब मे बेरार्डो कहता—दिल्लगी मत करो। यह तो उजागर है कि यदि सूरजमुखी फूल के बीज ही बोये गये हैं तो प्याज न उगकर सूरजमुखी ही उगेगा।

इस तरह की बातचीत से कोई हानि—छेड़छाड़—होने की सम्भावना नहीं थी। जब जब मैं रंगसाजी की दुकान मे एल्वीरा के कुशल-समाचार पूछने गया बेरार्डो, करीब-करीब आधे कमर मे धँसी हुई मिट्टी की दो बड़ी नांदों के आसपास व्यस्त दीखा। कमरे की भाप से घनी हवा मे या तो बेरार्डो नांदों मे उबलते हुए कपड़े एक लम्बे, काले लट्ठे से ऊपर-नीचे करता या ईंधन झोंकता दिखाई देता था।

एक रात मेरी उपस्थिति मे एल्वीरा ने बेरार्डो को मेहनताने में कुछ रक़म देनी चाही, परन्तु उसने सदा की नाई अक्खड़ता पूर्वक लेना अस्वीकार कर दिया।

तब मैंने कहा—बेरार्डो पैसे नहीं लेता क्योंकि वह चाहता है कि तुम ये पैसे शादी के लिए जमा करो।

एल्वीरा का चेहरा सेंदूर की तरह लाल हो गया और बेरार्डो ने ऐसा मुँह बनाया मानो मुझे पीटेगा।

मैंने मन ही मन कहा—मामला बेढब है। बेरार्डो शादी करनेवाला आदमी नहीं है।

दूसरे दिन सवेरे बेरार्डो की दादी मेरिया विन्सेञ्जा मेरे पास आई और बोली .

'क्या तुमने बेरार्डो को देखा है ?'

मैंने अचरज से पूछा—क्या, वह कल रात नहीं आया ?

बुढ़िया यह कह कर कि 'ना, नहीं आया।' चली गई।

थोड़ी देर बाद बेरार्डो आया। वह बिना राम-राम किये ही दरवाजे पर खड़ा हो गया और मैं भी कुछ नहीं बोला। जब मैं नीचे खेतों मे जाने के लिए तैयार हुआ तो वह बोला .

'मुझे कुछ सलाह चाहिये।'

जीवन में आज पहली बार ही वह सलाह माँग रहा था।

वह आगे बोला—विवाह के मामले की सलाह है। कल जब तुमने इस ओर इशारा किया तो यह इतना आवश्यक नहीं था, लेकिन अब है।

मैं समझ गया कि बेरार्डो ने रात एल्वीरा के साथ बिताई है।

'मेरी सलाह है कि तुम जल्दी से जल्दी एल्वीरा के साथ विवाह कर लो। तुम्हारा फायदा ही फायदा है, नुक़सान कुछ नहीं। और फाएटामारा म उससे अच्छी लड़की और कोई नहीं है।'

बेरार्डो ने मुझे जवाब दिया—तुम नहीं समझते। क्या मै खुद नहीं जानता ? जानता हूँ। लेकिन मैं क्या हूँ ? एक बे-खेत-खलिहान का किसान, एक बिना बिल का चूहा। मुझ बे-खेत-खलिहानवाले के साथ यदि एल्वीरा

शादी करने को राजी है तो भी कोई लाभ नहीं, अगर एल्वीरा में अक्ल नहीं है तो मुझमें तो है। अकेले या अपनी दादी के साथ भूखों मरने में कोई हानि नहीं। लेकिन अपने घर में एल्वीरा के साथ भूखों मरना? आज इसके यहाँ और कल उसके वहाँ इस समय रोज-मजूरी करते फिरने में कोई हानि नहीं। लेकिन क्या एल्वीरा का पति रोज मजूरी करता फिरे? क्या एल्वीरा का पति बे-खेत खलिहानवाला किसान हो?

'यह सब तुमने पहले क्यों नहीं सोचा? कल रात, एल्वीरा के साथ सोने से पहले तुम्हें यह सब सोच लेना चाहिये था?'

'तुम नहीं समझते। इसका यह मतलब नहीं कि मैं एल्वीरा को छोड़ने के लिए राजी हूँ या किसी और को उसके साथ शादी करने दे सकता हूँ।'— उसे गुस्सा आ रहा था।

हर एक मामले में बेरार्डो इसी तरह से बहस करता था। उसके साथ सारे दिन बहस करके भी कोई नतीजा नहीं निकल सकता था।

लेकिन इस बार बात बिलकुल सादी मालूम हुई इसलिए जरा से में निपटा देने के ख्याल से मैंने उसे एक सीधा सवाल पूछा :

'तुम एल्वीरा के साथ शादी करना चाहते हो या नहीं?'

'तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आया और न कभी तुम समझोगे।' बेराडों ने कहा और चलता बना।

बेराडों बहुत ही उदास मालूम पड़ता था। वास्तव में उसके पास जमीन न होना ही उसके दुःख का मूल कारण था। अब तक वह अपने लम्बे-चौड़े तर्कों से इस समस्या को किसी तरह टालता आ रहा था, परन्तु घर बसाने की तात्कालिक आवश्यकता होते ही यह समस्या उसके सामने मुँह फाड़े आ खड़ी हुई थी।

फाण्टामारा और पास-ग्रोस के अधिकांश किसानों के पास या तो अपने निजी छोटे-छोटे खेत थे या फिर वे थोड़ी बहुत जमीन के पट्टीदार थे। जिनके पास कोई जमीन नहीं थे ऐसे किसानों की संख्या बहुत थोड़ी थी। बिना जमीन का किसान घृणा और निरादर की दृष्टि से देखा जाता था। लगातार एक-सा काम नहीं मिलने के कारण उन्हें अक्सर अपने धन्धे बदलते रहना पड़ते थे

और पिछले कुछ वर्षों मे उसकी मजदूरी निरन्तर घटती ही आई थी जिस जमाने में जमीन सस्ती थी खेत पर मजदूरी करनेवाले आलसी, मूर्ख, पिछड़े हुए और मट्ठ समझे जाते थे, और कई ऐसे थे भी। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में काफी परिवर्तन हो गये थे। इस बीच न तो छोटे खेत मालिक अपनी जमीन बढा सके थे और न कोई मजदूर खेत ही कर सका था। उलटे कई खेतवाले साहूकार के हाथों जमीन गवांकर मजदूरी करने लगे थे। अमीर किसानों के पास भी बहुत थोड़ी जमीन बची रह गई थी। बेरार्डो वॉयला के बारे में कोई कुछ भी कहे लेकिन फाएटामारा में एक भी उसकी बुद्धि और चरित्र की होड़ नहीं कर सकता था। यदि वह जमीन नहीं खरीद सका तो इसका कारण बुरा समय था। वह जमाना ही नहीं रहा था कि मजदूर बचत करके खेत खरीद पाते। फाएटामारा के अधिकाश जवानों की दशा ऐसी ही थी।

यद्यपि समय बदल गया था लेकिन लोगों के सोचने का पुराना ढग अभी नहीं बदला था। बिना खेतवाले किसान अब भी हलकी निगाहों से देखे जाते थे। बेरार्डो अपनी स्थिति से समझौता नहीं कर सका था। अमेरिका या इटली के अन्य प्रान्तों मे जाकर अपनी आकाक्षा-पूर्ति की वह हमेशा आशा किया करता था, लेकिन वह जाने में कभी सफल नहीं हुआ। अनिवार्य और आसन्न विवाह की संभावना सामने आने पर उसने अपने आपको जीवन भर के लिए अन्य किसानो से हीन स्थिति मे पाया। इसके निराकरण का कोई उपाय नहीं था।

क्योंकि शहरों मे काम की जैसी हालत थी उसकी जानकारी, एक ऐसे आदमी से जिसे फाएटामारा में फिर से देखने की कोई आशा नहीं थी, हमें अनपेक्षित रूप से मिली।

एक रात कन्धों पर थैला उठाये एक नाटा और बुढ़ापे से झुका हुआ आदमी हांफता-कांपता फाएटामारा के छोटे चौक मे आया। वह दीखने मे न न तो किसान और न शहरवाले जैसा था, या अधिक सही तौर पर शहरवालों की तरह कपड़े पहिने किसान जैसा था। हमने उसे एक देहाती ज्योतिषी समझा जो गांव-गांव घूमकर फसल का भविष्य बतलाते हैं, जादू-टोने से बीमारियां अच्छी करते हैं, औरतों और जानवरों की बुरी नजर उतारते

और फोड़ों के लिए एक रामबाण दवाई बेचते फिरते हैं।

जनरल बाल्डीसेरा ने उसे अपनी दुकान के आगे से निकलते देखा तो कुतूहल से उसके पीछे हो लिया, और मेरीटा सार्मानेरा, माइकेल जोम्पा, बेराडों वॉयला और मुझे बुला लाया। 'तुम कहाँ से आते हो और काहे का भविष्य बतलाते हो ?' उसने उससे पूछा।

छोटे क़द का वह बूढा चौक के ठीक बीचोबीच आकर अपने थैले पर बैठ गया मानो अब अधिक खड़े रहने में असमर्थ हो और बोला—अपने घर में कोई भविष्यवक्ता नहीं है।

उसके कहने का मतलब हमारी समझ में नहीं आया।

उस बूढे का दिखाव बहुत ही विचित्र था। उसका सिर छोटा, बच्चे सी पानी भरी आँखें, पुराने ढग की, लम्बी मूँछे और नाक बड़ी-सी और अण्डे की तरह फैली हुई थी। ऐसा लगता था कि उस नाक को दबाते ही उसके अन्दर से कई तरह की शराबें निकल पड़ेंगी। सिर पर वह तरबूज के आकार की कड़ी टोपी पहने था और बदन में मखमली कॉलर का एक कोट, जिसम चमकीले बटनों की दो कतारें थीं। उसका पायजामा सिपाही के जैसा भूरे रग का था।

माइकेल जोम्पा ने उससे कहा —किसी का भविष्य बतलाओ या और कुछ पर पैसे मत माँगना।

'ज़रा ठहरो भाई और पहले जाकर गिडिटा गोरियानो को तो बुला लाओ।' उसने कहा।

'वह तो मर गई।' माइकेल ने कहा। हम सब हँसने लगे क्योंकि बूढे की भविष्यवाणी कुछ सच नहीं हुई थी।

उस नकली ज्योतिषी ने कहा—यदि गिटिटा जिन्दा नहीं है तो जाकर बेराडो गोरियानो को बुला लाओ।

'बेराडों गोरियानो भी लड़ाई से पहले ही मर चुका है।' अबकी बार सार्मानेरा ने जवाब दिया।

'और पेसिनो गोरियानो ? क्या वह भी मर गया है ?' उस बूढे ने अबकी झुँझलाकर पूछा।

पेपिनो गोरियानो के बारे में विभिन्न मत थे। सार्सानेरा की, उसका उसके साथ जवानी में प्रेम-सम्बन्ध रह चुका था, राय थी कि वह कभी का रोम में मर गया है। बाल्डीसेरा का विश्वास था कि रोम में उसकी क़िस्मत खुल गई है और उसने एक धनाढ्य स्त्री से विवाह कर लिया है और अपने जन्म-गाँव का नाम तक भूले उसे कई दिन हो गये होंगे।

उस बूढे आदमी ने कहा—बहुत अच्छा, तो मैं तुम्हें पेपिनो गोरियानो का सच्चा हाल सुनाता हूँ।

"जिस साल बादशाह हम्बर्ट का वध हुआ उसी साल पेपिनो गोरियानो फॉएटामारा से रोम गया था। कितने साल हुए? गिनती लगाना बहुत सरल है। बादशाह हम्बर्ट की मृत्यु से धूमकेतु तक—पुच्छलतारा—जो त्रिपोली की लड़ाई के बाद दिखा था, दस वर्ष हुए। धूमकेतु से ट्रीस्ट की लड़ाई तक पाँच साल। पन्द्रह हुए। ट्रीस्ट की लड़ाई चार पाँच साल चली, तो बीस हुए। पाँच साल तक ट्रेड्स् युनियन का अधिकार रहा। बीस और पाँच पच्चीस और उसके बाद व्यवस्था युग को आज दस वर्ष हो गये। यद्यपि हरएक यह कहता है कि इसका शीघ्र ही अन्त हो जायगा क्योंकि तुर्कों के राज्य में रहना इससे अधिक बुरा नहीं हो सकता तो भी दस साल होने आये, न तो व्यवस्था युग खतम हुआ और न तुर्क ही आये और यह सब मिलाकर पैंतीस हुए।

'अच्छा तो पूरे पैंतीस वर्ष पहले पेपिनो गोरियानो इस इरादे से कमाई करने रोम गया था कि हाथ में पैसा आते ही वह फाएटामारा लौट आकर सोलह वर्ष की मेरीटा सार्सेन्ट्रोनेरो से जिसके साथ उसका प्रेम था, विवाह कर लेगा।'

'वह मैं थी।' सार्सानेरा ने झेंपते हुए कहा।

मेरीटा को एक निगाह ऊपर से नीचे देखकर वह बूढा बोला—वह तुम थी? असम्भव।

जब हम उसकी तरफदारी करने लगे तो बूढे ने विचलित होकर उलझन में अपनी कहानी बन्द कर दी। थोड़ी देर बाद, किसी तरह, उसने फिर आरम्भ किया।

'पेपिनो गोरियानो ने हिसाब लगाया था कि वह कुछ ही वर्षों में पैसा

जमा कर लेगा। रोम पहुँचते ही उसे 'इन्स्टीच्युट ऑफ चैरिटेबल फ्रायर्स' (महन्तों की धर्मादा संस्था) में बर्तन मलने का काम मिल गया, लेकिन उसका भाग्य नहीं खुला। उसे रोज चौदह घण्टे काम करना पडता था और वह रहने खाने को काफी पा जाता था, परन्तु शराब के लिए पैसा पूरा नहीं पड़ता था। संस्था के पुरोहितों का विश्वास था कि शराब से मनुष्य का पतन होता है इसलिए वे अपने आश्रितो को पतित नही होने देते थे। संस्था में पतित होने का अधिकार केवल बाबा महन्तो को—बडे महन्तों को था। लेकिन जहाँ बड़े महन्तो के पीने की शराब रखी जाती थी पेपिनो गोरियाना उसी जगह अपना काम करता था। उसने वहाँ दो साल तक ईमानदारी से नोकरी की लेकिन बाद में लगातार शराबखोरी की वजह से निकाल दिया गया। उसके बाद कुछ दिनों तक वह बेकार रहा। कभी कभी उसे कुछ आने पैसे मिल जाते जो शराब तो क्या रहने-खाने को भी पूरे नहीं पड़ते थे। मौसम के अनुसार उसे बोटानिकल उद्यान, कोलोसियम, या इसेड्रा की ड्योढियों (पोर्टिको) में सोना पड़ता था। एक रात उसे सपने में सैनरोको ने पड़ोस की परचूनन की दुकान में घुसने की तरकीब बतलाई। पेपिनो उसी समय जग पड़ा और परचूनन की दुकान में घुस गया। लेकिन वह पकड़ लिया गया और उसे आठ महीने की जेल हुई। मुक़दमे के समय उसने सैनरोको के बारे में समझाने की कोशिश की लेकिन न्यायाधीशों को विश्वास नहीं हुआ। ऐसा नियम ही हो गया है कि न्यायाधीश आपद्ग्रस्तों पर कभी विश्वास नहीं करते।

'लेकिन जेल में पेपिनो की तक़दीर खुल गई, उसे आँखों की बिमारी हो गई। पहले आँखों में से एक सफेद द्रव पदार्थ निकलने लगा और बाद में वे सूजकर छोटे टमाटर जैसी लाल हो गई। देखकर दया आती थी। आँखों की ऐसी बुरी दशा हो जाने पर पेपिनो जेल से छोड़ दिया गया और तब, जीवन में पहली बार उसने जी भरकर मजा लूटा। किसी परिचित की एक बालिका को उसने नौकर रख लिया और सवेरे उन गिर्जाघरों का चक्कर लगाने का नियम बना लिया जहाँ नर्कस्थित आत्माओं के लिए प्रार्थना की जाती थी। दोपहर को दो तीन मठो में जाकर भोजन माँग लाता था और साँझ होने से पहले समाधिस्थलों और नाट्यशालाओं के मार्ग में गाने की जगह जा खड़ा

होता था। बालिका को दो लीरा रोज देकर भी पेपिनो के पास रहने-बचाने को काफी हो जाता था। खाने की उसे कोई चिन्ता नहीं करना पड़ती थी, क्योंकि खाना उसे मठों में से काफी मिल जाता था और वह उसका एक हिस्सा पोर्टा-न ग्योवानी के एक भटियारखाने में शराब के लिए बेच देता था। पेपिनो का इरादा कुछ वर्षों तक भीख माँगकर इतना पैसा जमा कर लेने का था कि वह फाएटामारा लौटकर सार्सेंट्टोनेरो से विवाह . '

मेरीटा ने आह भरकर पूछा— उसने अपना इरादा क्यों बदल दिया ?

'नित्य की भाँति ईर्ष्या उसकी आकाक्षापूर्ति के मार्ग में बाधक हुई। एक बुरा दिन आया कि पुलिस-सिपाही पकडकर उसे आँखों का इलाज कराने अस्पताल ले गया। पेपिनो गोरियानो ने आपत्ति भी की। उसने कहा—ये मेरी आँखे हैं और मै इनका जो चाहूँ करूँ। परन्तु इटली में सच्ची स्वाधीनता थी ही कब ? थोड़े ही दिनों में उसकी आँखें तो अच्छी हो गई पर वह अपने व्यवसाय से हाथ धो बैठा। सुख और समृद्धि का समय चला गया और छोड़ गया पश्चात्ताप। वह ईंटें पाथने, गाडी ढोने और टाइवर पर नाव चलाने जैसे छोटे-मोटे काम करने लगा, पर कहीं एक सप्ताह से ज्यादा न टिका। शक्ति के समय लगन ने और लगन के समय शक्ति ने उसका साथ नहीं दिया। उसने हजारों अन्य उपायों से भाग्य-परीक्षा कर देखी।

'उन दिनों विभिन्न प्रान्तों से सैकड़ों लोग रोम में कमाई करने आते थे। उनकी आकाक्षाएँ थोड़ी होतीं वे चौराहे झाड़ते, जूते साफ करते, खाना-पकाते, बागवानी या साईसी करते और रोज कुछ न कुछ बचाते रहकर अपने लिए छोटी मोटी प्रतिष्ठा स्थापित कर लेते थे। लेकिन पेपिनो मे अन्य देहा-तियों की तरह एक हजार लीरा जमा करने के लिए दस साल तक प्रतीक्षा करने का धैर्य नहीं था। वह एकदम भाग्यवान बनने के लिए कुबेर के खजाने के दरवाजे खोजता फिरता था। इसके लिए उसे बार-बार जेलखाने की हवा खाना पड़ती थी। कुल मिलाकर उसने चार साल पाँच महीने की सजा भुगती।

'इतनी असफलताओं के बाद पेपिनो गोरियानो हतोत्साह होने लगा। निराश होकर वह एव्रुत्सी से आनेवालों की तरह जो रोम में सभी तरह के हल्के काम करते हैं, जीवन बिताने लगा। कुछ दिनों तक इक्की में

लिफाफों द्वारा भाग्य बतलानेवाला तोता लेकर वह स्टेशन और बारकों के आस-पास जाता रहा, परन्तु थोड़े महीनों बाद वह तोता मानसिक चञ्चलता से भर गया। तब पेपिनो ने एब्रुज्जी से सर्दियों के कुछ महीनों रोम में काम की तलाश में आनेवाले असख्य लोगों से फायदा उठाने की सोची। उसने स्त्रियों को परिचारिकाओं और नौकरानियों और आदमियों को इमारती मजदूर और बर्तन मलनेवालों का काम दिलवाने के लिए एक कारोबार खोला।

'इसी बीच पेपिनो का परिचय मॉन्सिग्नर कैलोगेरो नामक एक आदरणीय भद्र पुरुष से हो गया जो कारमेलाइट का एक पदाधिकारी था। पेपिनो उसके यहाँ गुमाश्ता हो गया। मॉन्सिग्नर अपनी अवस्था के मान से कहीं अधिक काम-पीडित था और एब्रुज्जी से आनेवाली किसान लड़कियाँ उसकी वासना-तृप्ति के मनचीते साधन थीं। पेपिनो को रहने-खाने के सिवा प्रत्येक किसान लड़की के पीछे, जिसे वह आदरणीय भद्र-पुरुष की शय्याशायिनी बनाता दस लीरा अतिरिक्त मिलते थे। प्रारम्भ के कुछ महीने तो उसने पूरी आत्म-परायणता से काम लिया और मॉन्सिग्नर कैलोगेरो के लिए सार्वजनिक उद्यानों और वीथियों में नौकरानियाँ पटाता फिरा। इससे कुछ अधिक लाभ नहीं हुआ। क्योंकि मॉन्सिग्नर एक ही औरत को दो या तीन बार से ज्यादा पसन्द नहीं करता था और पेपिनो को सदा नई खोजते रहना पड़ता था। नौकरी बनाये रखने के लिए उसे वाया पेनिको मुहल्ले म प्रेम का व्यवसाय करनेवाली वेश्याओं की शरण जाना पड़ा। मॉन्सिग्नर कैलोगेरो को विश्वास दिलाने के लिए कि वे देहाती लड़कियाँ ही हैं वह उन औरतों को प्याज और लहसुन खिलाता था। मॉन्सिग्नर को इस प्रवञ्चना का पता कई दिन बाद, जब उसे एक गन्दी बिमारी हो गई तब लगा। पेपिनो गोरियानो की नौकरी छूट गई। और दुर्भाग्य ने फिर उसका पीछा किया।'

मेरीटा ने पूछा—वह फाएटामारा क्यों नहीं लौट आया?

'भिखारी होकर फाएटामारा लौटना? असम्भव था। वह रोम में ही रहा क्योंकि वहाँ गरीबों के लिए अधिक काम था। उसने सैकड़ों काम-धन्धे किये, कुत्तों को घुमाना-निहलाया, गिर्जाघर की घण्टियाँ बजाईं, कब्रें खोदीं, सड़कों पर जूतों के फीते बेचे, गुग्लील्मो ओबेरडान की स्मृति में पोस्टकार्ड बेचे,

आमोद-गृहों में बर्तन माँजे। लेकिन सभी धन्धे कमग्रज एक से थे।

'जो हलके काम दूसरे नहीं कर सकते उन्हें करने के लिए रोम में एक्डली के हजारों लोग जैसे वह रहा रहते थे और आज भी रहते हैं। उनका रहन-सहन दूसरों की अपेक्षा निचले स्तर का होता है। आजीवन वे गिर्जाघर के चूहों की तरह दरिद्र किसान ही बने रहते हैं। सडक पर देखते ही उन्हें पहिचाना जा सकता है। रविवार को जब 'दूसरे' मनोविनोद के लिए क्रीड़ाङ्गणों या पैरियोली के उद्यानों में जाते हैं तो वे किसी गये गुजरे भटियारखाने में। 'दूसरों' ने जब ट्रीस्ट की लड़ाई के पक्ष-विपक्ष मे प्रदर्शन किये तब पेपिनो रोम मे ही था, और उस समय वह पोर्टा ट्रियोनफेल के समीप एक छोटी, निकम्मी पान्थशाला में गया। लड़ाई के बाद जब लगभग सभी 'दूसरे' 'ट्रेड युनियनों' मे जाते थे वह टेस्टासियो की एक पान्थशाला में जाता था। स्वेच्छा से वह कभी 'दूसरों' के बीच जाने की झंझट में नहीं पड़ता था, परन्तु सारे शहर मे उथल-पुथल मच जाने पर यह कुछ उसके हाथ की बात नहीं रह गई थी। और एक बार उसे इसका बदला भी खूब चुकाना पडा।

'एक दिन जब पेपीनो गोरियानो वायाकोला-दा-रीञ्जो से जा रहा था लाल झण्डेवाले एक जन-समूह ने दुकानें लूटना शुरू कर दीं। वह भी उनमें जा मिला और जूतों की एक दुकान में घुस गया। जब बाहर निकला तो उसके पास बाएँ पाँव के दो जनानी नाचने के और दाहिने पाँव का एक ही नेड़ा घुड़सवारी का जूता था। वह उनका क्या उपयोग करता? वह उन जूतों के जोड़ों की तलाश मे प्रत्येक आने-जानेवाले से पूछता खड़ा था कि एक चुस्त आदमी ने आकर उसकी सहायता करने की इच्छा प्रकट की और पेपिनो को अपने घर तक चलने के लिए कहा। वह उसे घर ले जाने के बदले पुलिस थाने पर ले गया और लूट-पाट करने के अपराध मे गिरफ्तार करवा दिया। पेपिनो मुक़दमे की चौकसी के लिए अदालत के कटघरे में कई मजदूरों के साथ खडा किया गया। उन मजदूरों ने कहा कि हमला करने मे उनका उद्देश राजनैतिक था। लेकिन पेपिनो ने ईमानदारी से स्वीकार किया कि उसे जूतों की जरूरत थी और इसलिए उसे दूसरों से दुगुनी सजा दी गई।

'उन दिनों यदि बीच सडक पर किसी का खून हो जाता और खूनी यदि

कह देता कि उसने राजनैतिक कारणों से ऐसा किया है तो वह बिलकुल बरी कर दिया जाता था और कई बार तो पुरस्कृत भी होता था, लेकिन यह कहने पर कि बेकारी से तंग आकर उसने ऐसा किया है उसे कठोरतम सजा दी जाती थी। पेपिनो काफी सोच-विचार के बाद इस निर्णय पर पहुँचा कि जीवन भर उसके नगण्य बने रहने का एक मात्र कारण यह था कि उसने जो कुछ किया उसका कारण राजनैतिक न होकर, भूखों मरना था। अब जवान न होते हुए भी उसने निश्चय किया कि भविष्य में वह जो कुछ भी करेगा राजनैतिक उद्देश से करेगा।

'जेल से छूटने पर पुलिस ने पेपिनो को बुलाया और कहा कि 'या तो हम कहते हैं वैसा करो नहीं तो आज की रात ही फाण्टामारा लौट जाओ।' रेजिना कोएली से हाल ही छूटे हुए उसके अन्य मित्रों के सामने भी ऐसे ही प्रस्ताव रखे गये। पुलिस द्वारा प्रस्तुत किया हुआ राजनैतिक काम करने का प्रस्ताव पेपिनो ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया। उसे पेशगी पचास लीरा के साथ यह आज्ञा मिली कि उसी रात प्याज़ा वेनेज्या पहुँचकर 'निट्टी जिन्दाबाद, फ्यूम मुर्दाबाद!' के नारे लगाये।'

'तुम कहते हो कि उसे खाली नारे लगाने के लिए पचास लीरा मिले!' माइकेल ने हमारा सन्देह प्रकट करते हुए उस बूढे से पूछा।

'बीच में मत बोलो। तुम राजनीति के बारे में कुछ नहीं समझते। उसी रात पेपिनो गोरियानो प्याज़ा वेनेज्या गया, वहाँ लोगों की एक बड़ी भारी भीड़ थी और उसमें रेजीना कोएली के उसके बहुत-से साथी भी थे। उसने 'निट्टी जिन्दाबाद! फ्यूम मुर्दाबाद!' के नारे लगाना शुरू किये। सैनिकों और अफसरों की एक टोली को अपनी ओर बढ़ते देख कर रेजीना कोएली के उसके अन्य साथी तो हड़बड़ा कर इधर-उधर भाग गये, लेकिन उसने अभी अपना राजनैतिक कार्य आरम्भ ही किया था और अपने धन्धे से हाथ धोना नहीं चाहता था, इसलिए बिना अर्थ समझे ही पुलिस ने उसे जो कुछ चिल्लाने के लिए कहा था, चिल्लाता रहा। अफसरों और सैनिकों ने पेपिनो को घेर लिया और उसके बाद जो कुछ हुआ वह उसे याद नहीं रहा क्योंकि वह बेहोश हो गया था और सैन 'जाकोमो के अस्पताल में पहुँचने के बाद ही उसे होश आया।'

जनरल बारडोमेरा ने, जो सैनिक अनुशासन के बारे में ऊँची राय रखता था, कहा—क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि अफसर लोग पुलिस के खिलाफ थे ? यह हो ही कैसे सकता है ?

'बीच में मत टोको। तुम राजनीति के बारे मे जानते ही क्या हो ? पेपिनो राजनैतिक काम करता रहा, यानी पुलिस द्वारा निश्चित किये गये स्थानों और समयों पर मार खाता रहा। इसने पोर्टा सान्ताक्रोस के ट्रामवे मजूरों, पोर्टा सैनपाओलो के गैस मजूरों और पोर्टा ट्रयानफेल के फाउण्ड्री-मजूरों के हाथों लहू लुहान हो जाने तक मार खाई। जब उसने पुलिस के खिलाफ नारे लगाये वह पीटा गया। मार उसे अकेले ही खाना पड़ती थी क्योंकि रेजिना कोएली के उसके अन्य साथी तो मामला गड़बड़ होते ही छू हो जाते थे।'

मेरीटा ने अत्यन्त विषण्ण होकर पूछा—पेपिनो भी क्यों नहीं भाग जाया करता था ?

'क्योंकि मारखाने पर ज्यादा पैसा मिलता था। पुलिस उसे पाँच लीरा रोज और जब कभी अस्पताल भेजा जाता तो पचीस लीरा अतिरिक्त आश्वासन के लिए देती थी। रहन-सहन के मान से पाँच लीरा काफी नहीं था अतएव उसके लिए मार खाना नितान्त आवश्यक था। यह कुछ बहुत अनुकूल नहीं था, परन्तु काम अनुकूल रहा ही कब है ? यहाँ यह कह देना भी आवश्यक है कि उसके नारे हमेशा बदलते रहते थे। छः महीने तक 'निट्टी जिन्दाबाद' के बाद पेपिनो को पूरे सालभर तक 'निट्टी मुर्दाबाद' के नारे लगाना पड़े। लेकिन नतीजा हमेशा वही होता, वह हमेशा पीटा जाता था। डेढ़ वर्ष तक राजनैतिक काम करने के बाद जब पेपिनो गोरियानो का शरीर झाड़ खाने के बाद ईसा के शरीर जैसा हो गया तो एक बार पॉण्टियस पाइलेट ने कहा. 'इस आदमी को जरा ध्यान से देखो।'

'पेपिनो गोरियानो एक सच्चा राजनैतिक शहीद माना जा सकता था। राजनीति के लिए किसी भी इटालियन ने कभी भी इतना कष्ट नहीं सहा होगा। वह स्वयं घर बना रहकर दूसरों को लड़ने के लिए भेजनेवालों में नहीं था। वह खुद अपने शरीर की बाजी लगाता था। उन दिनों कई इटालियन अपने आदर्शों के लिए लड़े थे परन्तु कोई भी पेपिनो गोरियानो की समानता नहीं

कर सकता। उसने सभी आदर्शों के लिए—प्रजातन्त्र, राष्ट्रवाद, साम्यवाद और धर्म तक के लिए अपना खून बहाया था। प्रत्येक में उसे कुछ न कुछ अच्छाई दीखती थी, उन आदर्शों की सेवा करके वह पाँच लीरा नित्य और अस्पताल जाने पर हर बार पचास लीरा अतिरिक्त कमाता था।

'लेकिन जैसे जैसे पेपिनो का बुढ़ापा बढ़ता गया वह मार खाने में अधिकाधिक असमर्थ होता गया। राजनीति से निवृत्त होने की आकांक्षा उसे दुःख देने लगी। राजनैतिक संघर्ष अधिकाधिक भयंकर होता जा रहा था। प्रदर्शनकर्ता पत्थरों और लकड़ियों का उपयोग करना छोड़कर गोलियाँ चलाने लगे थे। राजनीति क्रूर हो चली थी। राजनीति मार खाकर कमाई करने का पेशा नहीं रह गई थी। राजनीति का स्वरूप अब भयंकर और गम्भीर हो गया था और पेपिनो गोरियानो के चरित्र से वह बिलकुल ही मेल नहीं खाती थी।'

मारियानेरा ने पूछा—लेकिन वे गोलियाँ क्यों चलाते थे ?

'मैं पूरे पैंतीस वर्ष रोम में रहा और आज तक मुझे मालूम नहीं पड़ा। तो फिर तुम्हारे जैसी मूर्ख स्त्री, जिसने सारी उम्र फाएटामारा में बिताई हो, कैसे समझ सकती है ?' बूढ़े ने टालमटूल जवाब दिया और आगे बोला—

'राजनीति की ऐसी दशा थी। पेपिनो ने पुलिस के बुलावों का जवाब देना बन्द कर दिया। कुछ समय बाद खास तौर से बुलाकर पुलिस ने उसके सामने वही प्रस्ताव रखा। 'या तो हमारा कहना करो नहीं तो इसी रात फाएटामारा चले जाओ।' लेकिन इस बार मार खाने का मामला नहीं था। वह नये ढंग की राजनीति थी, बीस लीरा रोज मेहनताना, ट्राम-गाड़ियों का फ्री पास, और मार खाने का नहीं मारने का अधिकार।'

'अनर्गल बातें मत करो !' माइकेल जोम्पा ने बीच में कहा। 'क्या तुम्हारे कहने का यह मतलब है कि पुलिस पेपिनो गोरियानो को बीस लीरा रोज और ट्राम गाड़ियों का फ्री पास इसलिए देती थी कि वह लोगों को बिना किसी डर के पीटता फिरे ? मूर्खता-पूर्ण बातें मत करो। बीस लीरा कमाने के लिए मुझे पूरे तीन दिन फ्युसिनो पर काम करना पड़ता है।'

नकली ज्योतिषी ने एक अनिश्चय से में कहानी बन्द कर दी। लेकिन थोड़ी देर बाद माइकेल जोम्पा के टोकने की अवमान्यता करते हुए आगे शुरू किया।

'इस बार यह एक नई, अनोखी और अभूतपूर्व ढंग की राजनीति थी। ही 'फैसिज्म' कहते थे। पेपिनो गोरियानो के 'फैसिज्म' के बारे में क्या वार थे? उसके ख़याल में यह सर्वोत्तम था। एक गरीब किसान से तिगुना छा वेतन और बिना मार खाये लोगों को पीटने का अधिकार, और सरकारी तया ऊपर से।

'एक पुलिस सिपाही पेपिनो को 'ज्यार्नल द' इटालिया' के छापाखाने के एक बड़े हॉल में ले गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो हॉल अफसरों विद्या-ों, कारकुनों, व्यापारियों और भड़कीली पोशाकवाली औरतों से खचाखच भरा। उनमें दो-चार पादरी और मॉन्सिग्नर कैलोगेरो भी था। दीवारें तिरंगे ड़ों से सजाई गई थीं। सभी जोर-जोर से बातें कर रहे थे। इतने प्रतिष्ठित क्तियों की उपस्थिति में पेपिनो डर-सा गया। लेकिन हॉल के एक कोने में ना कोएली के उसके पुराने परिचितों का भी एक झुण्ड था, जिनमें अधि-ा घरों में सेंध लगानेवाले थे। मंच पर आकर एक भद्र पुरुष के बोलते शान्ति स्थापित हो गई। उसने पेपिनो गोरियानो और उसके साथियों का क स्वागत करते हुए कहा कि कारखानों के मजदूरों में सबसे अधिक राज-ि-चेतनतावाला नये आभिजात्य मजदूरों का यह वर्ग देश के लिए अपने की अन्तिम बूँद तक बहाने को तैयार है। बाद में उसने जो कुछ कहा बिलकुल ही समझ में नहीं आया।

'भाषण के बाद हाल खाली हो गया और पेपिनो गोरियानो तथा उसके ों को पोर्टाप्या की विजय में भाग लेने के लिए रुकने का निमन्त्रण ा गया।

'पास के एक शराबखाने में खिला-पिलाकर उन्हें लॉरी से ला ब्रेस्या स्मारक समीप पोर्टाप्या ले गये। वहाँ लगभग घण्टे भर तक वे प्रतीक्षा करते रहे। वे प्रतीक्षा कर रहे थे वहाँ से उन्होंने कड़ाबीनवाले सैनिकों और रॉयल-ेस—शाही रक्षकों—की टुकड़ियाँ एक साम्यवादी पत्र के कार्यालय में ते और अन्दर के सभी लोगों को गिरफ्तार करके बाहर निकलते देखा। एक उस सिपाही पेपिनो गोरियानो और उसके साथियों को सावधान करने आया घर उन्ह तैयार है और डर की कोई बात नहीं है और बेखटके अखबार

का कार्यालय लूटा जा सकता है ? उन्होंने वैसा ही किया, कार्यालय पर आक्रमण हुआ, फर्नीचर बीच सड़क में लाकर पुस्तकों और कागजों के साथ जला दिया गया। खिड़कियाँ, दर्वाजे, टाइपराइटर, तस्वीरें और अंगीठियाँ तोड़-फाड़कर चूर चूर कर डाली गई, 'स्याही की बोतलें दिवारों पर फेंक-फेंककर फाड़ी गईं, तिजोरी वैज्ञानिक तरीके से तोड़कर खाली गई, पर वह खाली निकली।

'विध्वस्त कार्यालय से रवाना होने के पहले, कई पत्रकारों द्वारा जो वहाँ आ पहुँचे थे, आक्रमणकारियों के फोटो लिये गये। पेपिनो आक्रमणकारियों के बीच एक टेबल की टाँग तोड़ रहा था। दूसरे दिन 'पिकोलो' अखबार में उसकी तस्वीर छपी और उसके नीचे लिखा था 'पोर्टाप्या का नायक'।

'पेपिनो यश और प्रतिष्ठा के उन चिरस्मरणीय दिनों को कभी नहीं भूल सकता। वह समाचार-पत्रों के कार्यालयों में टंगा फिरता और सब कार्यालय उसे शराब पीने को पैसे देते थे। मार्क्विनेस पारुस्क्विनी ने उसे निमन्त्रित भी किया, अपने मित्रों से उसका परिचय कराया, और अपने रसोईघर में और तब उसे अपने शयनकक्ष में ले गई, जहाँ पेपिनो को पोर्टाप्या की विजय से भी अधिक थका देनेवाले काम करना पड़े।

पेपिनो ने इस नई कीर्ति का उपयोग बोलोग्न्या के रात्रि-विश्रान्ति-गृह में चौकीदारी का काम पाने में किया। परन्तु सैन लोरेन्जो प्रान्त के मजूरों ने जब उसके एक साथी को मार डाला तो उसकी भी अकल ठिकाने आ गई और अब 'फैसिस्ट' प्रधान कार्यालय से बुलावा आने पर वह बिमारी का बहाना करने लगा। नई नौकरी से आमदनी अधिक नहीं थी परन्तु अधिक खतरा भी तो नहीं था।'

साईनिंग ने जानना चाहा—फैसिस्टों के अधिकार ग्रहण करने पर उसने ज्यादा अच्छी नौकरी पाने का प्रयत्न क्यों नहीं किया ?

'तुम्हारे कथनानुसार 'फैसिस्टों के अधिकार ग्रहण करते ही' उनके पुराने समर्थकों के बुरे दिन आ गये। पेपिनो चौकसी के लिए एक कमेटी के सामने बुलाया गया और उससे पूछा गया 'तुम फैसिस्ट हो ? तुम कितने बरसों से फैसिस्ट हो ? क्या तुम्हें कभी जेल भी हुई है ?' कमेटी ने निर्णय दिया

कि चोरी के अपराध में कई बार के दण्डित अपराधी फैसिस्ट पार्टी में नहीं रह सकते और परिणाम-स्वरूप पोर्टाग्या का नायक यशस्वी पेपिनो गोरियानो निकाल दिया गया। पेपिनो के रेजिना कोएली के अन्य मित्रों के साथ भी यही बर्ताव किया गया, हाँ, जो अभी युवक थे वे सेना में भर्ती कर लिये गये। उसी समय पेपिनो ब्रॉलॉण्यो विश्रान्ति गृह की चौकीदारी से भी हटा दिया गया और उसकी जगह 'मॉन्सिग्नर कैलोगेरो के पुत्र के नाम से प्रसिद्ध एक युवक नियुक्त किया गया।

'बेकारी और कठिनाइयों के दिन फिर शुरू हुए। वह पुरानी अन्तहीन क्षुधा, जिससे उसका कभी पीछा नहीं छुटा था फिर आ धमकी। दिन दिन जीना दूभर हो चला। सभी का यह ख़याल था कि नई सरकार शायद ही दस साल चले लेकिन उसे दस साल हो गये थे।

'रोम में रहना असम्भव हो गया। प्रत्येक दिन एक नया क़ानून बनता। यह सच है कि सभी सरकारें नये क़ानून बनाती हैं, परन्तु यह सरकार तो प्रत्येक दिन एक नया क़ानून बनाती है।

'शताब्दियों तक पाँच नियम, गिर्जा के पाँच आदेश लेकर, पोप शासन करते रहे। 'एक हजारी आक्रमण' के बाद गैरीबाल्डी ने केवल तीन नये क़ानून प्रचलित किये, चाकू का, खूनी झगड़ों का और शराबियों के उत्पातों का। लेकिन नई सरकार ने सभी चीजों के बारे में क़ानून बना डाले हैं। एक क़ानून है कि अमुक बातें मत करो, एक क़ानून है कि दिवालों के सहारे पेशाब मत करो, एक कानून है कि बाएँ से मत चलो, एक क़ानून है कि रात में मत गाओ या ट्राम में सामने से मत चढ़ो। विवाह नहीं करनेवालों के लिए और सब तरह की नौकरियों का नियन्त्रण करने के लिए और काम दिलानेवाली एजेन्सियों की देख रेख करने के लिए और नौकर तथा मालिकों के आपसी झगड़ों का निपटारा करने के लिए अलग-अलग क़ानून बने हुए हैं।

'जितने ज्यादा क़ानून हैं उतनी ही अधिक गरीबी है और गरीबी जितनी ही अधिक बढ़ती जाती है वे उतने ही अधिक नये क़ानून भी बनाते जाते हैं। रोम में रहना बिलकुल असम्भव हो गया है। वहाँ की हवा तक में दुर्गन्ध आता है।

'उन्होंने उसे दूर करने के कई उपाय किये लेकिन सफलता नहीं मिली। किसी ने कहा कि दुर्गन्ध शायद चूहों के कारण आती है, इसलिए म्युनिसिपैलिटी ने जहर बाँट कर चूहों के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दी और हजारों की संख्या में चूहे मारे गये। परन्तु दुर्गन्ध नहीं मिटी। तब किसी ने कहा कि दुर्गन्ध शायद मक्खियों के कारण है, इसलिए म्युनिसिपैलिटी ने दवाइयाँ बाँट कर मक्खियों के खिलाफ लड़ाई छेड़ दी और कई करोड़ मक्खियाँ मारी गईं। लेकिन बदबू दूर न हुई। दिन में कभी-कभी तो इतने जोर से दुर्गन्ध आती है कि जी खराब हो जाता है।'

माइकेल ने पूछा—दुर्गन्ध क्या कूड़े में से आती है?

'किसी को अभी तक पता नहीं चला कि कहाँ से आती है? ट्रास्टेवियर, सैन लोरेंजो, टेस्टाक्सियो, प्राटी और कारकूनों के मुहल्लों में जो नगर के प्रधान हलके हैं दुर्गन्ध तेज पर इतनी असहनीय नहीं है, परन्तु बीच नगर, मन्त्रियों के निवास-स्थान और सेण्टपीटर्स के चारों ओर तो बिलकुल दम घोटने-वाली दुर्गन्ध उड़ा करती है। कोई नहीं जानता कि यह कहाँ से आती है। किन्हीं का ख्याल है कि दुर्गन्ध रोम की प्राचीनता के कारण आती है। एक अनन्तकालीन नगर दुर्गन्धमय होगा ही। किन्हीं के ख्याल से यह सरकारी दफ्तरों और पुलिस चौकियों के नीचे के तलघरों में छिपाई हुई लाशों की दुर्गन्ध है। किन्हीं का यह भी कहना है कि यह उन कपड़ों, परों, शिरस्त्राणों और कवचों की दुर्गन्ध है जिसे नई सरकार ने मन्त्रियों, राजदूतों और जन-रालियों की वर्दियाँ बनाने के लिए म्यूजियम में से निकाला है। कई लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि बदबू गन्दे पानी की मोरियाँ बन्द कर देने से आती है। जुदे जुदे लोगों के इस बारे में जुदे-जुदे सिद्धान्त हैं, परन्तु एक बात बिलकुल निश्चित है और वह यह कि दुर्गन्ध अब भी मौजूद है और दिन दिन बढ़ती जाती है।

'प्रति सप्ताह पुलिस एक नया षड्यन्त्र खोज निकालती है। रात में सभी मजदूर बस्तियों पर हजारों सशस्त्र आदमी चढ़-दौड़ते हैं। छत से फर्श तक घरों की तलाशियाँ होती हैं और सैकड़ों आदमी गिरफ्तार कर लिये जाते हैं। कारण कोई नहीं जानता। सभी महसूस करते हैं कि एक दिन अपनी बारी

भी आ सकती है। अधिकांश लोग निरन्तर एक भय की-सी हालत में दिन बिताते हैं।

'रोम में डर छूत की बिमारी-सा फैल गया है। दिनों और सप्ताहों तक सम्पूर्ण रूप से आतङ्क छाया रहता है। सड़क या शराबखाने में किसी की ओर घूर कर देखना काफी है, वह उसी वक्त पीला पड़ जायगा और फुर्ती से निकल जायगा। कारण क्या है? डर।'

'डर काहे का?' बेरार्डो ने पूछा।

'खाली डर।'

'लेकिन डर कैसा?' बेरार्डो ने फिर पूछा।

'खाली डर। कारण कोई नहीं जानता। बस डर। जब सारी बस्ती में डर फैल जाता है तो कोई कारण नहीं दिया जा सकता। डर सब पर हावी हो जाता है। सरकार के विरोधी ही नहीं, खुद फैसिस्ट कहे जानेवाले भी सबसे ज्यादा डरते हैं। खुद वे भी कहते हैं कि इस तरह से नहीं चलता रह सकता और डरते हैं। डर के कारण ही वे अपने विरोधियों का खून करते हैं। डर के कारण ही वे निरन्तर पुलिस और सेना की सख्या वृद्धि करते हैं। डर के कारण ही वे हजारों-लाखों निर्दोषों को जेलों मे ठूँसते हैं। वे जितने अधिक अपराध करते हैं उनका डर भी उतना ही अधिक बढता जाता है। अधिक डर कर वे और अधिक अपराध करते हैं। और इस तरह अधिकाधिक भय से अधिकाधिक अपराधों की सृष्टि होती है।'

'क्या सरकार शक्तिसम्पन्न है?' माइकेल ने पूछा।

'शक्तिसम्पन्न है सरकार का भय।'

'और पोप? वह क्या करते हैं?' मेरीटा ने पूछा।

'पोप भी डरते हैं। नई सरकार से उन्होंने बीस अरब लीरा स्वीकार किये हैं, एक मोटर खरीद ली है, एक वायरलेस लगा लिया है, यात्रा नहीं करते तो भी अपने लिए एक रेल्वे स्टेशन बना लिया है और अन्य कई सुखोपभोग के सामान जमा कर लिये हैं और इतना सब मिल जाने पर अब डरने लगे हैं। रोम के गिर्जाघरों और मठों को पोप से एक पत्र मिला था कि वे गरीबों को दिये जानेवाले शोरबे की मात्रा बढा दें। वह शोरबा डर का शोरबा था।

पादरियों की धर्मादा संस्था में प्रति गुरुवार को बाँटे जानेवाले शोरवे में थोड़ा-सा मांस बढा दिया गया है। वह डर का माध है। उन दो अरब लोगों को भुलाने के लिए अभी तो बहुत-सा मास और शोरबा सामने आयेगा।'

'और अन्य प्रान्तों से रोम आनेवालों के साथ कैसी क्या गुजरती है?'

'एक्स्ती के अमीरों का अच्छा और गरीबों का बुरा हाल है, परन्तु डरते दोनो ही हैं। पुलिस ने गरीबों में जाँच शुरू की है, जिसका मूल आधार डर है। प्रति सप्ताह सैकड़ों गरीबों को पकड़कर पुलिस उन्हें अपने गाँव भेज देती है। कितनों ही को तो रोम में रहते रहते तीस-चालीस वर्ष हो गये थे और उनके जन्म गाँव १६१५ के भूकम्प में बिलकुल नष्ट हो गये हैं। उनका एक भी सम्बन्धी आज जीवित नहीं बचा है। लेकिन पुलिस 'जनता की व्यवस्था के लिए' उन्हें भी भेज देती है। उन्होंने पेपिनो गोरियानो को भी यात्रा के लिए आवश्यक परवाने देकर ट्रेन में बिठाया और फाण्टामारा, जहाँ से आये उसे पैंतीस वर्ष हो गये थे, लौटने के लिए बाधित किया। अच्छा, तो वह लौट आया है।'

मेरीटा ने उत्सुकता से पूछा—क्या तुम्हीं पेपिनो गोरियानो हो?

जनरल बाल्डीसेरा ने पूछा—पोर्टाप्पा के नायक क्या तुम्हीं हो?

हाँ, वही था।

—सात—

अपना निज का घर या कोई सम्बन्धी नहीं होने से पोर्टाप्पा के नायक ने मेरीटा सोर्सिनेरा की छत्रछाया में आश्रय ग्रहण किया।

शहर में कमाई करके मालदार बनने की लालसा बचपन में ही यदि उसे पथ-भ्रष्ट न कर देती तो जहाँ से वह जीवन प्रारम्भ करता, वास्तव में वहीं जीवन समाप्त करता दीखता था। एक भेड़िये के समान जो बूढ़ा होकर भी अपना दुर्गुण नहीं छोड़ता, मेरीटा सदा नये सिरे से जीवन प्रारम्भ कर सकती थी, परन्तु इसके विपरीत दुर्भाग्य से पेपिनो एक पुरुष के नाते अयोग्य था।

वह घण्टों छिपकली की तरह चुपचाप धूप में पड़ा रहता था।

यदि कोई उसके पास जाता तो वह पूछता, 'हम किसलिए पैदा हुए हैं?'

हम इसका उत्तर नहीं जानते थे। भला, कौन जानता है कि हम किस लिए पैदा हुए हैं ?

जनरल बाल्डीसेरा भी अब अधिक जानकारी का दावा नहीं करता था। शहर के बारे में अनोखी बातें सुनकर हममें सबसे ज्यादा असर उसी पर हुआ था। जिस पुरानी दुनिया में उसका दृढता से विश्वास था उसे बीते तीस वर्ष हो गये थे और उसका स्थान अविश्वसनीय घटनाओंवाली एक आश्चर्यजनक और अपरूप दुनिया ने ले लिया था।

किसान अब तक लकड़ी के हलों से ही खेत जोत रहे थे जब कि शहरवाले हवाई जहाजों के सहारे आसमान में उड़ने लगे थे। किसान जब कि पाई-पाई करके बीस लीरा बचा रहे थे शहरवाले हजार लीरा नोट की बातें करते थे। किसान जब कि सुबह से साँझ खेत खोदकर भी भूखों मर रहे थे शहर में लोगों को सड़कों पर भी पीटकर शीघ्रता से पैसा पैदा किया जा सकता था।

फाएटामारा के बाहर स्वेच्छापूर्वक अफ्रीका जानेवाले ईसाई सेनापति को अब कोई नहीं जानता था और न कोई वह पुराना गीत ही गाता था

रहना कालों से होशियार

शहर में नई सरकार और उसके समाचार-पत्र जनप्रिय आमोद-गृहों, समाचार-पत्रों के कार्यालयों और वैयक्तिक भवनों के विरुद्ध प्युनिटिव (दण्ड सम्बन्धी) हमलों का नेतृत्व करनेवाले कुछ बेहूदे नामवरों को गौरवान्वित करते थे।

एक दिन जनरल बाल्डीसेरा ने पोर्टानिया के नायक से पूछा—आजकल शहर में कौनसा गीत प्रचलित है ? उसकी आवाज पर से लगता था कि इसके उत्तर को वह बहुत ही अधिक महत्त्व देता है।

पेपिनो गाँव के बीच चौक में खड़ा होकर जोर-जोर से नई तर्ज का एक प्रचलित गीत गाने लगा :

फाड़ डालो
मेरा दिल ले लो
और मुझे फाड़ डालो

रोम की स्टेशन पर पेपिनो को किसानों के लिए सरकारी मत का प्रचार

करनेवाली एक पुस्तक दी गई थी। हमारे प्रति सरकारी रुख का स्पष्टीकरण जानने के लिए एक दिन हम पेपिनो को घेर कर बैठ गये और उसे पढ़ने के लिए कहा।

पहला भाग एक कविता द्वारा कटनी करनेवालों को समर्पित किया गया था। मैंने वह कविता नक़ल कर ली थी और सदा इस आशा में उसे अपने साथ लिये फिरता था कि किसी दिन उसे समझनेवाला कोई मिल जायगा और मुझे समझा देगा। कविता यह है .

घर आनेवाली हरी-भरी फसल के विचारों से आनन्दित
हलवाहा अनन्त आकाश के वितान तले
सूर्य-रश्मियों में, पार्वतीय प्रदेश पर
हल चलाता है।

नीचे निजाव और दबे हुए मैदान को
जब हवा के सहारे
अलाइन की सुगन्धि शान्ति देती है,
पहाड़ी झोपड़ियाँ हिमाच्छादित शृंगों की गोद में
मधुर शान्ति और शीतल छाया का उपभोग करती हैं।

भेड़ों के समूह-सी, जलती दोपहरी में विश्राम करती
किसानों की झोपड़ियाँ, गहरी घाटी में
सोई हैं. दूर से सुन पड़ता है आशीर्वाद-सा—
सन्नाटे को मुखरित करता, पहाड़ी और घाटी पर
और पल्लवित वनपथ से होता—झरने का
मधुर कलनाद, ऐसा आनन्द निष्फल नहीं हो सकता।

पुस्तक में के दूसरे अंश जिनमें कृषि-जीवन का वर्णन था, अधिक सरल थे। उनमें की कुछ दलीलें मुझे याद रह गई हैं

'शुद्ध हवा और विश्राम की आवश्यकता होने पर शहरवासी यहाँ

जाता है ?

'देहात में ।

'ताजा मक्खन, शुद्ध तेल गेहूँ का आटा, स्वादिष्ट फल कहाँ से आते हैं ?

'देहात से ।

'शहरों के निवासी दुर्बल, कायर, पीले और उदास होते हैं ।

'देहात के रहनेवाले सशक्त, आनन्दित, स्वस्थ और प्रसन्नचित्त होते हैं ।'

नई सरकार ने किसानों के लिए जो कुछ किया है वह उस किताब में इस तरह लिखा हुआ था

'नई सरकार को धन्यवाद कि अब किसानों को आठ घण्टे रोज से अधिक काम नहीं करना पड़ता ।

'किसानों का बीमारी, बेकारी और दुर्घटनाओं के लिए बीमा किया जाता है ।

'किसानों को जो कर देने पड़ते थे वे घटा दिये गये हैं ।

'किसानों की सहायता के लिए उधार देने को बेंक हैं ।'

जब पेपिनो ने यह अंश पढ़ा तो हम एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे । मानो कहना चाहते थे कि यह हमें धोखा दे रहा है ।

पेपिनो ने पुस्तक माइकेल जोम्पा को दी और, उसने यही बातें पढ़ीं । माइकेल जोम्पा ने पॉन्जियो पिलाटो को दी और उसने भी यही पढ़ा, तब उसने किताब मेरी ओर बढ़ाई और स्वयं मैंने भी पढ़ा

'नई सरकार को धन्यवाद कि अब किसानों को आठ घण्टे रोज से अधिक काम नहीं करना पड़ता ।

'किसानों का बीमारी, बेकारी और दुर्घटनाओं के लिए बीमा किया जाता है ।

'किसानों को जो कर देने पड़ते थे वे घटा दिये गये हैं ।

'किसानों की सहायता के लिए उधार देनेवाली बेंक हैं ।'

पुस्तक के अन्त में लिखा था :

'उपसंहार में, शक्ति किसानों के हाथ में है। इटली एक कृषि-प्रधान देश है और यहाँ की सरकार मुख्यत: किसानों की है। किसानों के स्वार्थ सर्वतोपरि हैं। किसान देश का प्रतिनिधित्व करते हैं।'

'यह किताब अवश्य ही सरकार की हँसी उड़ाने के लिए उसके किसी शत्रु ने लिखी है, या फिर पागलखाने में लिखी गई है।' माइकेल के इस सन्देह से हम सभी सहमत थे।

'हो सकता है, लेकिन मुझे तो यह कड़ाबीनवाले सैनिकों ने दी थी।' पेपिनो ने कहा।

बेराडों जानना चाहता था—कड़ाबीनवाले सैनिक इस तरह की किताबें किस लिए बाँटेंगे? राजकुमार टोर्लोनिया की सरकार और बैंकवाली सरकार ऐसी किताबें क्यों बाँटती है? यह किसानों को किसानों के ही नाम पर क्यों लूटती और क्यों उनकी हत्या करती है?

और तब प्रथम बार हमारी समझ में आया कि इस सरकार ने किसानों को किसानों के ही नाम पर भुखमरे की हालत में पहुँचा दिया है।

पोर्टाप्या के नायक ने समझाने का प्रयत्न किया—शासन सदा ही ग़रीबों के विरुद्ध रहा है। लेकिन वर्तमान शासन एक विशेष प्रकार का शासन है। यह भी ग़रीबों के प्रतिकूल है, परन्तु एक खास ढंग से। यह एक खास ढंग से ग़रीबों के विरुद्ध अपनी सम्पूर्ण शक्ति का उपयोग करता है। ग़रीबों में से कइयों ने वर्तमान सरकार के लिए अपना खून बहाया है। मेरा मतलब स्वयं मुझसे और मुझ जैसे अन्य आदमियों से नहीं है, यद्यपि कोई नहीं कह सकता कि हम अमीर थे। लेकिन मेरा मतलब उन कारकुनों, ट्रामवे और रेलवे कामगारों और ईंटें पाथनेवालों से है, जो आदि-फासिस्टों में थे। अधिकतर वे करोड़पति नहीं ग़रीब किसान थे। उनकी सहायता के बिना वर्तमान सरकार अधिक समय तक टिक नहीं सकती। वर्तमान सरकार को उनकी आवश्यकता है। प्रिन्स टोर्लोनिया की और बैंक की सरकार को उनकी अपेक्षा है। शासन प्रिन्स टोर्लोनिया और बैंक के लिए जितनी ही अधिक सहूलियतें करता है उसे उनकी उतनी ही अधिक आवश्यकता पड़ती है और इसलिए उतना ही अधिक

आवश्यक हो जाता है यह विश्वास कराना कि यह किसानों और मजदूरों की सरकार है।

पोर्टान्या के नायक की बात हमारी समझ में बिलकुल स्पष्ट रूप से नहीं आई थी। पर इधर थोड़े दिनों से जो भी कुछ होता आ रहा था उसे हम साफ-साफ नहीं समझ पा रहे थे।

एक सैनिक टुकड़ी का फाएटामारा में आकर कई स्त्रियों के साथ बलात्कार करना बिलकुल स्पष्ट था। लेकिन क़ानून के नाम पर और एक विशेष पुलिस अधिकारी की उपस्थिति में, उनका वैसा करना बिलकुल स्पष्टतया समझ में नहीं आता था।

फ्युसिनो में उन्होंने छोटे खेत मालिकों का लगान बढ़ा दिया था और बड़े ज़मींदारों का घटा दिया था। यह बिलकुल स्पष्ट था। लेकिन ऐसा करने का प्रस्ताव स्वयं गरीब किसानों के एक प्रतिनिधि ने किया था और यही हमारी समझ में नहीं आता था।

जिनके खिलाफ कोई क़ानूनी शिकायत नहीं थी और जिनका एक मात्र दोष ठेकेदार के हक में अनुकूल होना नहीं था ऐसे कई निर्दोष व्यक्तियों को अनेकों बार उन फैसिस्ट कहे जानेवालों ने पीटा, घायल किया और मार तक डाला था, और यह बिलकुल स्पष्ट था। लेकिन मारनेवालों का सर्वदा ही सरकार द्वारा पुरस्कृत होते रहना हमारी समझ में नहीं आ पाता था।

हमारी सभी विपत्तियाँ यदि अलग-अलग देखी जातीं तो नई नहीं थीं क्योंकि ऐसी ही विपत्तियाँ भूतकाल में भी आ चुकी थीं। लेकिन इस बार वे बिलकुल ही नये और विचित्र ढंग से आई थीं।

सभी बातें हमारी समझ के बिलकुल परे थीं।

फाएटामारा की गेहूँ की सारी फसल ठेकेदार ने मई में ही जब कि वह पकी भी नहीं थी, और खेतों में खड़ी थी एक सौ बीस लीरा प्रति हंडरवेट (लगभग ५६ सेर) के हिसाब से खरीद ली थी। मई के महीने में कोई भी नये आनेवाले गेहूं का बाजार भाव नहीं बतला सकता लेकिन ठेकेदार ने जो सदा बहुत ही सतर्क रहता था उस समय गेहूँ की फसल खरीदी तो हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन पैसों की आवश्यकता होने के कारण हमने और पास-

पड़ोस के दूसरे गाँवों ने उसे खेतों में खड़ी कच्ची गेहूँ की फसल ही बेच दी थी। कटनी के समय इसका भेद खुला। सरकार ने राष्ट्रीय उपज के सम्बन्ध में एक विशेष क़ानून बनाया था, जिसके परिणाम-स्वरूप गेहूँ का भाव एक सौ बीस लीरा प्रति हण्डरवेट से बढ़कर एक सौ सत्तर लीरा हो गया था। इससे प्रकट होता है कि ठेकेदार को इस क़ानून का पता मई में ही लग गया था और इस तरह गेहूँ कटने से पहले ही उसे हमारे गेहूँ के प्रत्येक हण्डरवेट पर पचास लीरा मुनाफ़ा मिल गया था।

इस तरह हमारे गेहूँ की फसल का सारा मुनाफ़ा ठेकेदार को मिला। जोतने, बोने, पहटाने, निराई, कटाई और मँड़ाई करने का साल भर के कठिन परिश्रम का सम्पूर्ण मुनाफा ठेकेदार की जेब में चला गया। किसानों ने जमीन जोती और समतल की, बीज बोये और गोड़नी की, फसल काटी और मँड़ाई की और जब सब तैयार हो गया तो ठेकेदार बीच में आ कूदा और मुनाफा वह ले गया। बैंक बीच मे आ कूदी और मुनाफा वह ले गई।

और हम विरोध भी नहीं कर सकते थे। सारी कारवाई क़ानूनन, पूरी तरह क़ानूनन थी। अगर ग़ैर क़ानूनी कुछ हो सकता था तो वह था हमारा विरोध करना।

किसानों पर होनेवाली लूट-खसोट बहुत दिनों से क़ानूनी हो चुकी थी। यदि पुराने क़ानून काफी न होते तो वे झट एक नया क़ानून बना लेते थे।

डॉन सर्कोस्टान्ज़ा की ओर, उसके समाधिस्थल के पीछेवाले पुराने बग़ीचे में जो पिछले साल की बाढ़ से उजड़ गया था अंगूर के रापे लगाने की मजदूरी के मेरे, बेरार्डो और राफेल स्कार्पोन के कुछ पैसे निकलते थे। एक रविवार को सवेरे हम 'जन-मित्र' के घर अपना हिसाब लेने गये।

डॉन सर्कोस्टान्ज़ा ने नशे में न होते हुए भी हमसे हाथ मिलाया और हमें गले लगाया।

उसने पूछा—मेरी ओर तुम्हारा कितने दिनों का हिसाब निकलता है?

बेरार्डो का पन्द्रह दिन का और मेरा और राफेल स्कार्पोन का बारह-बारह दिन का हिसाब था।

डॉन सर्कोस्टान्ज़ा जैसे पढ़े लिखे आदमी के लिए इस हिसाब का पैसा

तोड़ना कुछ बहुत कठिन नहीं था ।

लेकिन 'जन-मित्र' का चेहरा मलिन पड़ गया। कई क्षणों तक वह बिलकुल मौन रहा, फिर उठकर तीन या चार बार कमरे में चक्कर लगाया। खिड़की के बाहर देख और दरवाजे के छेद से सुनकर निश्चय कर लिया कि कोई सुनता तो नहीं है। तब हमारे पास आकर अपनी विह्वलता को छिपाने का कठिन प्रयास करते हुए बोला :

'यही कठिनाई है। सरकार जिस तरह हमारे पीछे पड़ी हुई है उसका तुम अंदाजा भी नहीं लगा सकते। रोज हम पर एक नया क़ानून लादा जाता है। अब हम अपने पैसे के भी मालिक नहीं रहे।'

इसका हम पर काफी प्रभाव हुआ। तो, सरकार कुलीनों को भी तङ्ग करती है! सचमुच!

बेरार्डो ने कहा—आपके कहने भर की देर है और सब किसान विद्रोह कर देंगे।

'नहीं, नहीं, नहीं। सवाल कुछ और ही है।' डॉन सर्कोस्टाञ्जा डर गया। 'मामला बहुत ही टेढा है। यह देखो, मैंने तुम्हारे लिए तीन लिफाफे तैयार कर रखे हैं। प्रत्येक में तुम तीनों के साथ तै की हुई मजदूरी की, प्रत्येक के लिए अलग-अलग रक़म है।'

टेबल पर तीनों लिफाफे रखे हुए थे।

'आपस में जो मजदूरी तै हुई थी उसके हिसाब से मैंने ये लिफाफे तैयार किये हैं। मैंने एक पाई भी बाक़ी नहीं रखी। मुझ पर तुम्हारा विश्वास है न?'

हम तीनों ने कहा—विश्वास क्यों नहीं है?

उसने फिर हमसे हाथ मिलाया और हमें गले लगाया। (हम उसका भरोसा कैसे नहीं करते? यदि उसीका भरोसा नहीं कर सकते तो फिर दुनिया में भरोसा करते ही किसका?)

'अच्छा', वह आगे बोला—आज सवेरे बिलकुल ही अनपेक्षित रूप से प्रान्त के खेती पर काम करनेवाले मजदूरों की मजदूरी सम्बन्धी ये नये नियम मेरे पास आये हैं। लो इन्हें पढो।'

डॉन सर्कोस्टाञ्जा के फैले हुए हाथ से अखबार लेकर मैं उसमें लाल कलम से चिन्हित ये अंश पढने लगा :

'खेती पर काम करनेवाले प्रथम श्रेणी के मजदूरों की (यानी जिनकी उम्र १६ से ६० वर्ष के बीच हो) वर्तमान मजदूरी चालीस प्रतिशत कम की जाती है।

'सत्रह और अठारह वर्ष के लड़कों की (दूसरी श्रेणी) मजदूरी उपर्युक्त कमी के सिवा बीस प्रतिशत तथा स्त्रियों और बालकों की (तीसरी श्रेणी) मजदूरी पैंतालीस प्रतिशत और कम की जाती है।'

'क्या यह बुरा नहीं है?' डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने हमसे पूछा—बतलाओ क्या यह बुरा नहीं है?

मैं पढ़ता गया

'सम्पत्ति या जमीन सुधारने सम्बन्धी सभी काम, जैतून, फल और अगूर के रोपे लगाना, सफाई करना, खुदाई करना, खाइयाँ खोदना, गड्ढे भरना, सड़क बनाना आदि काम बेकारों की सहायता के लिए खुले हुए सार्वजनिक कामों की श्रेणी में आते हैं, इसलिए इनकी मजदूरी उपर्युक्त दरों की अपेक्षा कम दी जाय और वह कमी किसी भी दशा में पचीस प्रतिशत से अधिक न हो।'

'क्या यह बिलकुल असहनीय नहीं है? मालिक और नौकर के आपसी सम्बन्धों में क़ानून की क्या आवश्यकता? अगर इसी तरह चलता रहा तो हमारी स्वाधीनता कहाँ रहेगी?' जन-मित्र ने कहा।

'हम उन तीन लिफाफों को जो हमारे लिए हैं ले लें और इसका फैसला हो जायगा।' यह कहते हुए बेरार्डो अपना लिफाफा उठाने बढ़ा, लेकिन डॉन सर्कोस्टाञ्जा ने उसे रोक दिया।

वह नाराज होकर कहने लगा—क्या मेरे अपने घर में मेरे साथ पेश आने का तुम्हारा यही तरीका है?

उसकी आवाज और व्यवहार एकदम बदल गया था।

मैंने कहा—जब यह उसका लिफाफा है तो वह इसे क्यों न ले? हमने काम करने से पहले ही दिन और मजदूरी ठहरा ली थी। अब आपकी ओर

ा जो पैसा निकलता है उसका हिसाब लगाना कुछ बहुत कठिन नहीं है।

'और क़ानून? क़ानून का क्या होगा? क़ानून तोड़ने की सजा तुम्हें
ुम है? इसके बारे मे तुम कुछ नहीं जानते, पर मैं तो जानता हूं। तुम्हारे
मैं जेल जाने को तैयार नहीं हूँ। मै अवश्य ही बहुत दु:खी हूँ परन्तु मुझे
है कि मैं तुम्हारे लिए जेल नहीं जा सकता और न जाऊँगा ही। क़ानून
न है और उसकी मर्यादा पाली ही जानी चाहिये।' डॉन सर्कोस्टान्जा ने
ाय प्रकट किया।

मैंने कहा—मोसेज का कानून है 'तुम्हें चोरी नहीं करना चाहिये।'

'आजकल हमारा सम्बन्ध मासेज से नहीं मुसोलिनी से है। और हर
कानून की मर्यादा देखने का काम मेरा नहीं है। यदि तुम्हारी यही
ा हो तो मैं सिपाहियों को बुला भेजूँ।

डॉन सर्कास्टाञ्जा बहुत ही उद्विग्न हो गया था। उसकी आँखें क्रोध से
हो आई और वह कमरे में घूमते हुए बोला .

'जितना कुछ मैंने तुम्हारे लिए किया है उसके बाद तुमसे ऐसे व्यवहार
ुझे कभी आशा नहीं थी। ऐसा करने से तुम्हारा मतलब क्या है? क्या
मुझे बर्बाद करना चाहते हो? क्यों बर्बाद करना चाहते हो? मुझे साफ़-
बतलाओ कि तुम मुझे बर्बाद करना क्यों चाहते हो?'

तब वह थोड़ा शान्त हो गया और अपनी लिखने की टेबल पर जा बैठा।
बेरार्डो का लिफाफा उठाकर उसमें से ८५ लीरा निकाले। तब एक
न और पेन्सिल लेकर वह हिसाब करने लगा .

'क़ानून के अनुसार पहले चालीस प्रतिशत काटें। चालीस प्रतिशत के
तीस लीरा। बाकी बचे इक्यावन। बेकारों की सहायतावाले क़ानून के
ार इसम से पचीस प्रतिशत यानी तेरह लीरा कम किये। बेरार्डो के लिए
बचे अड़तीस लीरा। मेरे प्यारे बेरार्डो, तुम बड़े अच्छे आदमी हो और
तुम्हारे लिए बहुत दु:ख है, लेकिन इसके लिए तुम्हें फासिस्टों को दोष
चाहिये।'

नम मेरा लिफाफा उठाकर डॉन सर्कोस्टान्जा ने उसमे से अठहत्तर लीरा
ले और फिर से हिसाब लगाना शुरू किया :

'पहले क़ानून के अनुसार चालीस प्रतिशत कम किये। यानी पैंतीस लीरा। बाकी बचे अड़तालीस। इनमें से पचीस प्रतिशत बेकारों की सहायतावाले गये। यानी बारह। तो तुम्हारे हिसाब में बचे, चौंतीस लीरा।'

स्कार्पोन के लिए भी यही हिसाब दुहराया गया।

तब, उदारता का प्रदर्शन करते हुए डॉन सर्कोस्टान्ज़ा ने अपनी नौकरानी को बुलाकर हमारे लिए शराब लाने की आज्ञा दी। चूँकि नये क़ानून के अनुसार उसके लिए मज़दूरी में से प्रति सैकड़ा कुछ कटनेवाला नहीं था, हम उसे पी गये।

उसी सवेरे बाल्डोविनो सियारप्पा और उसकी घरवाली को डॉना जिज़ोला ने मिलने बुलाया था और वे शहर आये थे। बाल्डोविनो ने डॉन कार्लो माग्ना से जमीन का एक टुकड़ा लगान पर ले रखा था और कुछ दिन पहले ही लगान भरा था। डॉना जिज़ोला को लगान कम मालूम हुआ क्योंकि पिछले साल बाल्डोविनो की घरवाली लगान के साथ ऊपर से दो दर्जन मुर्गी के अण्डे भी ले गई थी। डॉना जिज़ोला का कहना था कि प्रथावाले कानून के अनुसार उसे प्रतिवर्ष लगान के अतिरिक्त दो दर्जन अण्डे भी मिलना ही चाहियें।

हमें जन-मित्र के ठीक दरवाजे के सामने बीच सड़क पर बाल्डोविनो सियारप्पा अपनी घरवाली को पीटता मिला। वे दोनो डॉना जिज़ोला से मिलकर आ रहे थे और उन्हें प्रथावाले क़ानून के अनुसार प्रतिवर्ष लगान के अतिरिक्त दो दर्जन अण्डे देना मजूर करना पड़ा था।

डॉना जिज़ोला को दो दर्जन अण्डे भेंट देने की सूझ बाल्डोविनो की ही थी, परन्तु अण्डे उसकी घरवाली ले गई थी और वहाँ उसने खुलासा नहीं किया था कि यह केवल एक बार की, अगले साल नहीं दुहराई जानेवाली, विशेष भेंट है। मतलब यह कि सारा कसूर उसकी घरवाली का था। यों प्रथावाले क़ानून के अनुसार डॉना जिज़ोला को इस साल और दूसरे साल और आनेवाले कई सालों तक, वास्तव में बाल्डोविनो के जीवन भर और बाद में उसके बेटे के जीवन भर, उस कम्बख्त जरा-से जमीन के टुकड़े के लिए लगान के अतिरिक्त दो दर्जन अण्डे पाने का अधिकार था।

एक बात बिलकुल स्पष्ट थी। प्रतिदिन जमींदारों के पक्ष में नये क़ानून

बनते थे और जितने भी पुराने क़ानून किसानों के पक्ष में और उन्हें लाभ पहुँचानेवाले थे केवल वही रद्द कर दिये जाते थे। दूसरे चालू रहते थे।

इस तरह प्रथावाला क़ानून यदि वह किसी अच्छी प्रथा के बारे में होता, जैसे कि किसान को ठहराई हुई मजदूरी देना, तो मिटा दिया जाता था, जब कि प्रथावाला क़ानून यदि वह किसी बुरी प्रथा के बारे में होता जैसे कि भेंट का 'अनिवार्य' करना, तो चालू रहता था।

पुरानी चाल के दूसरे जमींदारों की तरह, एक पुरानी प्रथा के अनुसार डोंना जिलोला के पास आसामियों द्वारा लाये जानेवाले अण्डे नापने की एक थाली थी। जो अण्डे उस थाली से छोटे होते और उसमें से आसानी से निकल जाते उन्हें वह बाक़ायदा लौटा देती थी। अब थाली उस जमाने की थी जब मुर्गियाँ आज से ज्यादा बड़े अण्डे देती थीं और डोंना जिलोला अक्सर छोटे अण्डे लौटाकर उनके स्थान पर निरन्तर बड़े अण्डों की माँग करती थी। लेकिन मुर्गियाँ पहले जैसे बड़े अण्डे नहीं देतीं तो क्या यह भी किसान का अपराध था?

उस समय तक गिर्जाघर की रखवाली करनेवाले त्योफिलो ने डॉन अबाक्यो के लिए फाण्टामारा आकर वहाँ वालों के लिए 'मास'—प्रार्थना—कहने का चन्दा जमा कर लिया था। चन्दा दस लीरा इकट्ठा हुआ था लेकिन डॉन अबाक्यो ने यह कह कर आने से इन्कार कर दिया कि मॉस कहने की दक्षिणा बढ़ गई है और जब तक दस लीरा और न भेजे जायेंगे वह न आयेगा। दूसरे दस लीरा बड़ी कठिनाई से पाई-पाई कर जमा हुए और तब एक रविवार को सवेरे डॉन अबाक्यो मॉस कहने आया।

गिर्जाघर धूल और जालों से भरा हुआ बड़ी बुरी दशा में था, दीवालें सीली होकर उधड़ रही थीं।

वेदी पर युचारिस्ट की तस्वीर ही एक मात्र सुन्दर चीज थी। ईसा अपने हाथ में एक सफेद रोटी का टुकड़ा लिये हुए थे। वह कह रहे थे

'यह मेरा शरीर है।'

दूसरे शब्दों में, सफेद रोटी मेरा (ईश्वर का) शरीर है। सफेद रोटी परमात्मा की सन्तान है। सफेद रोटी सत्य और जीवन है। ईसा न तो मक्का

की रोटी थी और जिसे किसान खाते हैं और न पादरी के, रोटी की बजाय अर्पण किये हुए बेरस और बेस्वाद फुलके की ओर इंगित कर रहे थे। ईसा अपने हाथ में एक सचमुच की सफेद रोटी का टुकड़ा लिये हुए थे और कह रहे थे : 'यह (सफेद रोटी) मेरा शरीर है।'

उनका मतलब ईश्वर-पुत्र के शरीर से था, जो सत्य और जीवन है। उनका मतलब था 'जिसके पास सफेद रोटी है उसके पास मैं (ईश्वर) हूँ।' जिसके पास सफेद रोटी नहीं है, जिसके पास केवल मक्का की बनी रोटी है, वह ईश्वर की कृपा से वंचित है, ईश्वर को नहीं जानता है, सत्य को नहीं जानता है, जीवित नहीं है। जिसके पास सफेद रोटी नहीं है, जिसके पास केवल मक्का की बनी रोटी है मानो उसके लिए ईसा का अवतार ही नहीं हुआ, मानो उसके लिए उद्धार—मुक्ति—अभी आना बाकी है।

हम अपने गेहूँ के बारे में सोचे बिना कैसे रह सकते थे? साल भर के कठिन परिश्रम के बाद हमने उसे पैदा किया था और जब वह पका भी नहीं था, बैंक ने उसे हमसे मई के महीने में ही छीन लिया था! हमने एड़ी चोटी का पसीना एक करके उसे उत्पन्न किया था, लेकिन वह हमारे खाने के लिए नहीं था। वह शहर जाने को था, जहाँ सब उसे खायेंगे, कुत्त और बिल्लियाँ तक, लेकिन हम नहीं खा सकते थे। हमारे खाने के लिए तो वही मक्का की रोटियाँ थीं।

'यह मेरा शरीर है।' वेदी पर से यह कहते हुए ईसा मक्का की रोटी के एक टुकड़े की ओर नहीं, परन्तु सफेद रोटी के एक टुकड़े की ओर सकेत कर रहे थे। और परमपिता के इन शब्दों 'आज हमे हमारी रोटी दे', का मतलब मक्का की रोटी से नहीं, अपितु गेहूँ की रोटी से ही था।

अपने देशवासी किसानों की क्षुधा-निवृत्ति के लिए मछलियों के साथ जो रोटी ईसा के चमत्कार से बढ गई थी, वह मक्का की नहीं, अपितु गेहूँ की रोटी ही थी।

ईश्वर के नैवेद्य की प्रार्थनावाली रोटी ·

ओ स्वर्ग की (परमात्मा की) सजीव रोटी

मक्का की बनी हुई रोटी नहीं है, अपितु गेहूँ से बनी हुई रोटी है (गेहूँ जो

देहात में उगता है, परन्तु शहर में इस्तेमाल किया जाता है)।

इंजिल से प्रभु ईसा के चार चमत्कारों का पाठ सुनाने के पहले डॉन-अबाक्च्यो ने हमारे सामने सैन बेरार्डो के बारे में एक छोटे से धर्मोपदेश का प्रवचन किया।

सैन बेरार्डो एक किसान था, और वह सदा ही किसानों का सन्त रहा है। अपने जीवन काल में जो अत्यधिक महत्त्व-पूर्ण अलौकिक कर्म उसने किया था वह था एक दुर्भिक्ष के साल पेसिना के किसानों में बहुत सारी रोटियाँ बाँटना। इसलिए उसे सफेद रोटियों का, गेहूँ से बनी रोटियों का सन्त भी कहते हैं।

एक अभावपूर्ण जीवन के बाद बुढ़ापे में सैन बेरार्डो की मृत्यु हो गई। ऐसा कहा जाता है कि मरने के बाद जब वह न्यायासन के सामने लाया गया तो सर्वशक्तिमान ने, जो उसे जानते और उसपर प्रसन्न थे उसे गले से लगाया और कहा

'तुम जो कुछ चाहो तुम्हें मिल सकता है। अपनी इच्छित वस्तु माँगने में हिचकिचाओ मत।'

यह वर सुनकर सैन बेरार्डो बहुत ही अस्थिर हो गया।

उसने डरते-डरते पूछा—क्या मैं कोई भी चीज माँग सकता हूँ?

सर्वशक्तिमान ने उत्साहित करते हुए कहा—जो तुम चाहो। मैं स्वर्ग का स्वामी हूँ। यहाँ मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ। यहाँ कोई पोप नहीं है। फिर, मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम जो कुछ माँगोगे तुम्हें मिल जायेगा।

लेकिन सैन बेरार्डो को अपनी इच्छा प्रकट करने का साहस नहीं हुआ। वह डरता था कि कहीं उसकी अपरिमित इच्छाएँ परमात्मा को क्रुद्ध न कर दें। परमात्मा की ओर से काफी समझाने-बुझाने और यह आश्वासन मिल जाने के बाद कि वह अप्रसन्न नहीं होंगे तब कहीं सैन बेरार्डो ने अपनी इच्छा दर्शित की।

वह बोला—हे प्रभु, मुझे सफ़ेद रोटी का एक बड़ा टुकड़ा प्रदान कीजिये।

ईश्वर ने अपना वचन निभाया और अप्रसन्न नहीं हुए, अपितु उस किसान सन्त को गले लगाकर रोने लगे। तब, अपनी घन-गम्भीर ध्वनि में

उन्होंने बारह देवदूतों को बुलाकर आज्ञा दी कि सैन बेरार्डो को स्वर्ग में की सर्वश्रेष्ठ सफ़ेद रोटी दी जाय।

यह आज से चार सौ वर्ष पहले की बात है। उसके बाद कोई किसान स्वर्ग में नहीं गया।

सैन बेरार्डो की सच्ची कथा यह है, जो हमारे इधर पीढी-दर-पीढी चली आ रही है। तो भी पादरी हमें दूसरे ढंग से सुनाते हैं। वर्तमान पादरियों के अनुसार स्वर्ग में खाना-पीना नहीं होता। स्वर्ग में तुम बिना खाये ही परमेश्वर के दर्शनों से आनन्दित हो सकते हो। यदि यह सच है, तो पृथ्वी पर खाने का एक यह भी अतिरिक्त कारण मालूम पड़ता है। डॉन अबाक्च्यो भी प्रत्यक्ष रूप से ऐसा ही सोचता था, क्योंकि वह ग़जब का पेटू था, और मानो एक अनन्त-कालीन उपवास की प्रतीक्षा में आवश्यकता से अधिक मुटाने का प्रयत्न कर रहा था।

परमात्मा फाएटामारा की रक्षा करे इसके लिए एक विशेष अभिषेक—अनुष्ठान—की अवश्यकता के बारे में सुझाते हुए डॉन अबाक्च्यो ने अपना धार्मिक प्रवचन समाप्त किया।

वह बोला—मॉस अच्छी चीज है लेकिन वह काफी नहीं है। मॉस आधे घण्टे में समाप्त हो जाता है। यदि किसी महत्वपूर्ण मुक़दमे के बारे में वकील से बात करनी हो तो केवल एक बार बात कर लेने से सन्तोष नहीं होता। परमात्मा के विषय में भी ठीक ऐसा ही आग्रह आवश्यक है। परमात्मा अवश्य ही दयालु है, परन्तु उसे भी अपनी प्रार्थना सुनना अच्छा लगता है। विशेष अनुष्ठान के लिए एक पुरोहित का लोगों के खर्च से नौ दिन तक फाएटामारा में ठहरना आवश्यक होगा। कुल मिलाकर पचास लीरा के लगभग खर्च . '

'खर्चा, खर्चा, हमेशा खर्चा।' बेरार्डो जोर से भिन्नाया और गिर्जाघर से बाहर चला गया। बाक़ी के आदमियों ने भी उसका अनुसरण किया।

डॉन अबाक्च्यो ने भजन शुरू कर शीघ्रता से मॉस समाप्त किया और अपना लबादा और उपवस्त्र उतारकर खिसियाता हुआ—पाँवों में दुम दबाये कुत्ते की तरह—पूजागृह से निकल गया।

जब साल अच्छा होता है तो पादरी भी अच्छा काम करते हैं। वे मॉस

[illegible]हते हैं, अभिषेक-अनुष्ठान करते हैं, ईसा की स्मृति मे लाई जानेवाली पवित्र [illegible]टी और शराब (होली कम्युनियन) ग्रहण करते हैं, लोगों का धार्मिक-क्रिया [illegible] अन्तर्गत परिमार्जन करते हैं, और अन्त्येष्टि क्रिया करवाते हैं, और [illegible]दि वर्ष अच्छा है, तो ठीक है, लेकिन यदि देश मे दुर्भिक्ष है तो बेचारा [illegible]ादरी कैसे क्या करे ?

ऐसे समय आपस मे एक दूसरे से झगड़ा करना ही किसानों का दुःख से एक मात्र छुटकारा है ।

जिसकी किसी से अनबन न हो ऐसा एक भी घर फाण्टामारा में निकलना [illegible]ुश्किल ही था। भयंकर झगड़ों के लिए जरा-सा बहाना काफी होता था। झगड़े [illegible]न म औरतों के बीच शुरू होते थे और साँझ को, जब आदमी काम पर से [illegible]ौट आते तो फिर भभक उठते थे। जरा-सी खमीर जो उधार लेकर नहीं [illegible]ौटाई गई हो, या एक ईंट, या एक झब्बी, या एक रकाबी, या लकड़ी का [illegible]क टुकड़ा, या मुर्गी का एक बच्चा या जरा-सी घास उन झगड़ों के निमित्त [illegible]ोते थे ।

जब अभाव होता है तो दिन में बीसियों चीजें झगड़ने के लिए निकल आती है। लेकिन सब चीज़ों मे खास झगड़े की जड़ थी नाले का पानी।

एक सुधारनेवालों ने शीघ्रता से नई खाई खोद डाली थी। जिस दिन [illegible]ानी का हिस्सा बाँट किया जानेवाला था फाण्टामारा के वे सब किसान, [illegible]िनके पास सींचने को खेत थे, बँटवारा देखने गये ।

पुराने बहाव की ओर जानेवाले और ठेकेदार की ओर जानेवाले पानी [illegible]ा उचित नियन्त्रण करने के लिए जहाँ से पानी बाँटा जानेवाला था उस [illegible]गह दो मोरियोंवाला एक बाँध बाँधा गया था। हम अभी तक उलझन में [illegible] कि 'प्रत्येक को तीन चौथाई' वाला वह रहस्यमय बँटवारा कैसे किया जायेगा ?

लगभग एक सौ कड़ाबीनवाले शहर से आये और सड़क पर तैनात कर [illegible]ये गये। एक दस्ते ने आकर हमे नाले से दूर अंगूर के बगीचों की ओर [illegible]देड़ दिया। हमने पहले कभी इतने सैनिक नहीं देखे थे इसलिए हम बिना [illegible]िरोध किये हट आये ।

थोड़ी देर बाद फैसिस्ट स्वयसेवकों (मिलिश्या) का एक जत्था और

सम्मानित अतिथि आये। उनमें ठेकेदार, दस्तावेजों का तस्दीक अफसर, डॉन मर्कोस्टाझा, विचारक, डॉन सुफ़ावासियो, डॉन सिक्रोन, डॉन पॉम्पोनियो, डॉन तारादेलाँ, काली कमोज़ें पहिने माननीय पेलिनो और अन्य कई भद्र पुरुष थे, जिन्हें हम नहीं पहिचानते, और सबके पीछे फिलिपो इलवेलो और इन्नासिन्नो ला लेग्गी थे।

डॉन सर्कोस्टाझा सीधा हमारी ओर आया, हममें से प्रत्येक के साथ हाथ मिलाया और हमसे कहा कि हमारे लाभ के लिए हम सब कुछ उस पर छोड़ दें। यह तै हुआ कि पानी का बँटवारा देखने के लिए हम बड़े-बूढ़ों की एक कमेटी बनायें। पॉञ्जियो पिलाटो, ग्यासोबी लोसुर्डो और मुझे मिलाकर तीन जनों की एक कमेटी बनी। दूसरे किसानों को सैनिकों की कतार के पीछे सड़क पर खड़े रहने की आज्ञा दी गई।

सब तैयारियाँ हो जाने पर दस्तावेजों का तस्दीक अफ़सर हमारी ओर आया और नाले के बँटवारे के सम्बन्ध में फाएटामारा के लोगों और ठेकेदार के बीच जो समझौता हुआ था उसे पढ़ सुनाया।

उसने कहा—समझौता बिलकुल स्पष्ट है। पानी का तीन चौथाई पंचायत द्वारा बनाई हुई नई खाई के रास्ते और बाक़ी बचे हुए का तीन चौथाई उसी पुराने नाले से बहता रहेगा।

पाँजियो पिलाटो ने चिल्लाकर कहा—यह ग़लत है। समझौता कहता है प्रत्येक को तीन चौथाई, यानी आधा आधा, यानी तीन चौथाई हमें और तीन चौथाई ठेकेदार को। हरएक आदमी को उसका उचित हिस्सा।

'नहीं, नहीं, नहीं!' ग्यासोबी लोसुर्डो भी चिल्लाने लगा। 'समझौता कहता है कि पानी का तीन चौथाई हमारे लिए है, और यदि ज्यादा बचता है तो वह ठेकेदार के लिए है—यानी, यदि ज्यादा बचता है तो, क्योंकि हर हालत में बहुत थोड़ा पानी बाक़ी बचता है।'

मैंने कहा—प्रत्येक को तीन चौथाई एक बिलकुल वाहियात बात है। मैंने अपने जीवन में कभी ऐसी बात नहीं सुनी। सच तो यह है कि पानी फाएटामारा का है और वह फाएटामारा के ही अधिकार में रहना चाहिये।

सैनिकों की कतार के पीछे, सड़क पर खड़े हुए किसान हमारे चिल्लाने

और भंगिमाओं से यह समझकर कि पानी का बँटवारा हमारे प्रतिकूल होने जा रहा है, शोर मचाने लगे। खासकर राफेल स्कार्पोन अपने ऊधमी साथियों के साथ पागल की तरह चीखने लगा।

तब ठेकेदार ने यह घोषणा की :

'चूँकि फाएटामारा-वासियों ने एक क्रोधात्मक प्रवृत्ति अख्त्यार की है और पानी के बँटवारे के समय उपस्थित रहनेवाली कमेटी के सदस्यों का आपस में ही विरोध है मैं पंचायत के प्रधान की हैसियत से मिलिश्या के अधिनायक माननीय पेलिनो और डॉन सर्कोस्टान्ज़ा को फाएटामारा का प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त करता हूँ।

जब कड़ाबीनवाले आकर हमें फाएटामारा के दूसरे आदमियों के पास जब सड़क पर ले जाने लगे तो डॉन सर्कोस्टान्ज़ा ने पुकार कर कहा :

'शान्त हो! शान्त हो! मेरा विश्वास करो।'

नाले के पास जो कुछ हो रहा था उसे कड़ाबीनवालों की कतार के पीछे से देखना कठिन था। यों फाएटामारा के अन्य निवासियों के प्रति उत्तरदायित्व से मुक्त होकर हमें मन-ही-मन एक तरह की प्रसन्नता ही हुई। डॉन सर्कोस्टान्ज़ा जैसे पढ़े लिखे आदमी द्वारा हमारे स्वार्थों का रक्षित होना कहीं ज्यादा ठीक था।

पहले दस्तावेज़ों का तसदीक अफसर तब एक राज और तब बेलचे लिये हुए चार मजूर नाले पर पहुँचे। माननीय पेलिनो और डॉन सर्कोस्टान्ज़ा ने बारी-बारी से राज के साथ काफी देर तक सलाह-मशविरा किया।

सड़क के ऊँचे किनारे और पानी को नियन्त्रित करनेवाली नालियों के आसपास खड़े कड़ाबीनवाले और अफसरों के झुण्ड के कारण हम 'प्रत्येक को तीन चौथाई' की व्याख्या कार्यान्वित होते नहीं देख सकते थे। लेकिन, कोई सौ गज नीचे जहाँ नाला ग्यासिएटो बार्लेटा और पैपासिस्टो के बगीचे की ओर मुड़ता था हम उसके बहाव को देखकर मालूम कर सकते थे कि हमारा पानी कितना कम हुआ है और कितना बचा है। इसलिए हम सबकी दृष्टि उसी स्थान पर केन्द्रित हो रही थी। हम ध्यान-पूर्वक देखते रहे और देखते रहे और कुछ दो गजों की दूरी पर अफ़सर तथा हमारे प्रतिनिधि जो कुछ कर रहे

थे उसके बारे में अनुमान लगाने का प्रयत्न करते रहे।

पहले पहल राफेल ने सतह से पानी कम होते—उतरते देखा। हममें से सभी का यह विश्वास था कि हमारे लिए पहले जितना पानी नहीं ही रहने दिया जायेगा, लेकिन जब पानी सचमुच ही कम होते दीखा तो हम जोर-जोर से चिल्लाने और ठेकेदार तथा उसके मेहमानों को गालियाँ देने लगे।

हम 'चोर! चोर!' चिल्लाने लगे।

फ़िलोमेना क्वाटर्ना, रेक्व्युटा, कानारोजो की छोरी, गिडिटा स्कार्पोन, लिजावेता लिमोना और दूसरी कई लुगाइयाँ घुटनों पर बैठकर चिल्लाने लगीं :

'भगवान करे और इनकी आँखें फूट, जायँ!

'अरे हत्यारो, हमारा पानी चुराया है तुमने। राम करे और तुम्हारा उतना ही खून सूखे!

'राम करे और तुम्हें मन-मन आँसू बहाना पड़ें!

'तुम्हारे पेट में मेढक हो जायँ, तुम्हारे! राम करे, तुम्हारे पेट में हाथ-हाथ भर के कीड़े पड़ें और डींहू निकलें!

'तुम्हारा सत्यानाश हो जाय रे तुम्हारा, और राम करे तुम्हारे छोरा-लुगाई मरें!

'भगवान करे और हम दुखियों की वाणी फले!'

इस बीच पानी सतह से इतना अधिक कम हो गया कि पेंदे में के कंकड़, सेवार और घास तक दिखाई पड़ने लगीं।

हमने डॉन अबाक्च्यो को कहते सुना—बँटवारा हो गया है।

'हमारा सारा पानी! उन्होंने हमारा सारा पानी ले लिया है! हमारा सब पानी!' हम फिर चिल्लाने लगे। राफेल स्कार्पोन और बेनेर्डो सेण्टो, दूसरे युवकों की सहायता से कडाबीनवालों की कतार को धक्का दे-देकर नाले की ओर बढ़ने का प्रयत्न करने लगे। सैनिक अपनी रक्षा के लिए हमें राइफलों के कुन्दों से मारने और डपटने लगे—पीछे हटो! पीछे हटो!

इतने में डॉन सर्कोस्टाञ्जा की आवाज शोरगुल के ऊपर सुनाई दी :

'शान्त हो जाओ! शान्त हो जाओ! तुम्हारे स्वार्थों की रक्षा करने के लिए मैं इधर हूँ। नासमझी से काम मत करो। सब मेरे भरोसे छोड़ दो!'

फिर हमारी ओर सड़क के किनारे-किनारे आकर वह अपने, सदा की तरह, बँधे-सधे शब्दों में कहने लगा :

'क्या तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं रहा है ? मुझ पर विश्वास नहीं होने से ही तो तुम्हारा नुकसान हो रहा है। क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे चिल्लाने और जोर जबर्दस्ती करने से तुम्हें कुछ मिल जायेगा ?'

तब ठेकेदार की ओर मुड़कर वह बोला :

'इन लोगों का असन्तोष न्याय-संगत है। कोई समझौता निकालना चाहिये। मैं आपकी मानवता से प्रजा-हितैषिता से 'अपील' करता हूँ। फाण्टामारा के इन लोगों का उचित आदर किया जाना चाहिये। नाले के लिए नया रास्ता बनाने का खर्च पंचायत ने बर्दाश्त किया है। जो हुआ सो हुआ। ईसा का एक कथन है, जो सत्य है सत्य है ...'

डॉन अबाक्च्यो ने बीच में कहा—बिलकुल ठीक।

'इसलिए मेरी राय है कि एक अवधि मुकर्रर कर दी जाय जिसके बाद नाला पूरी तरह से फाण्टामारावालों को मिल जाना चाहिये। इससे फाण्टामारा-वासियों को सन्तोष हो जायेगा। उनकी हानि न्याय संगत लेकिन अनन्त नहीं है। अच्छा, तो कोई अवधि का समय सुझाये।'

'पचास वर्ष !' ठेकेदार ने सुझाया।

एक घृणा-मिश्रित चिल्लाहट से हमने उसके इस बुरे प्रस्ताव का विरोध किया।

'हमारे गले काट लो ! हमें जेल में डाल दो। चोर ! लुटेरे !'

डॉन सर्कोस्टान्ज़ा ने फिर शान्ति स्थापित की और ठेकेदार की ओर मुड़कर कहने लगा

'फाण्टामारा-वासियों की ओर से मैं पॉटेस्टा का यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकता। पचास साल बहुत ज्यादा हैं। हमें इससे छोटी, बहुत ही छोटी अवधि निश्चित करना चाहिये।'

'चालीस वर्ष।' डॉन अबाक्च्यो ने कहा।

'पैंतीस।' माननीय पेलिनो का प्रस्ताव था।

'पचीस।' दस्तावेजों के तस्दीक अफसर ने राय दी।

लेकिन प्रत्येक नये सुझाव की किसानों ने चिल्लाकर अवमानना की।

डॉन सर्कोस्टाञ्जा फिर आगे आया।

'फाण्टामारा के परिश्रमी और भले लोगों की ओर से मुझे एक दूसरा प्रस्ताव रखने की आज्ञा दीजिये। मेरा प्रस्ताव दस लस्टर (प्रकाश) की अवधि का है। मैं पॉडेस्टा की दयाशीलता से यह महान त्याग स्वीकार करने की 'अपील' करता हूँ।'

हमारी खातिर इतना त्याग करने के लिए डॉन तारांदेला, डॉन सिकोन, डॉन पाम्पोनियो, डॉन सुकावाछियो और विचारक ठेकेदार को घेर कर गिड़-गिड़ाने लगे।

काफी आग्रह के बाद ठेकेदार ने दस लस्टर स्वीकार कर लिया।

एक कागज निकाला गया और दस्तावेजों के तस्दीक अफ़सर ने डॉन सर्कोस्टाञ्जा के सुझाये हुए शब्द उस पर लिख लिये और तब उस पर ठेकेदार के दस्तखत करवाये गये और फाण्टामारा की ओर से स्वयं उसने तथा माननीय पेलिनो ने हमारा प्रतिनिधित्व करते हुए दस्तखत किये।

[सच पूछा जाय तो हममें से यह कोई नहीं जानता था कि दस लस्टर कितने होते हैं।]

—आठ—

फाण्टामारा में इस विषय पर कि दस लस्टर कितने हो सकते हैं काफी वाद-विवाद हुआ।

पोर्टाप्या के नायक के खयाल से दस लस्टर का मतलब सौ वर्ष से था, लेकिन बाल्डीसेरा का कहना था कि नहीं दस शताब्दियों में है।

मेरीटा सार्वानेरा ने भी अपनी बात कही। वह बोली : 'क्या दस महीने नहीं हो सकते ?' लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

फाण्टामारा के लिए हर हालत में दस लस्टर का मतलब था भूख। पहाड़ी के नीचे के बगीचे और खेत, जिन्हें पहले नाले का पानी सींचा करता था, अब अधिकाधिक उजाड़ दीखने लगे थे। ऐसा लगता था कि ईश्वर भी हमारे विरुद्ध ठेकेदार के गुट्ट में शामिल है, क्योंकि मई का महीना

बीत चला था और अभी तक वर्षा आरम्भ नहीं हुई थी।

डॉन अवाक्यो ने इस अवसर से लाभ उठाकर अनुष्ठान करने की बात फिर से दुहराई लेकिन अब की सबसे पहले गिर्जाघर की देख-भाल करनेवाले लोफिलो ने ही जोरदार शब्दों में विरोध किया।

नीचे मैदान में सारी फसल धीरे-धीरे सूख चली थी। सूखी, भुलसी जमीन में बड़ी-बड़ी दरारें दिखने लगी थीं। पॉन्जियो पिलाटो और एण्टोनियो रर्नॉक्यो के मक्का के खेत दूर से हरे-हरे दीखते थे—पर केवल हरे दीखते ही थे। मक्का की डाँठें तो बड़ी-बड़ी हो गई थीं, पर भुट्टे कहीं-कहीं और छोटे-छोटे और जरा-जरा से दानोंवाले लगे थे। ज्यादा से ज्यादा उनका उपयोग जानवरों के चारे के रूप में हो सकता था।

मेरे, माइकेल लोम्पा और बाल्डोविनो स्यारपा के खेतों की हालत तो, जिनमें फलियाँ बोई गई थीं, और भी खराब थी। फलियाँ धूप में सूखकर घास जैसी हो गई थीं। ग्यासिण्टो बार्लेटा, वेनेर्डा सेण्टो, एण्टोनियो ब्रास्योला और पेपासिस्टो के खेतों पर तो मानो पिघला हुआ लावा ही फिर गया था।

फाण्टामारा के लिए इसका अर्थ था भूखों मरना।

साधारणतया हमारी मालिकी की या पट्टे की जमीन से होनेवाली उपज कर और लगान चुकाने भर को होती थी जब कि सिंचाई के खेतों की उपज वर्ष भर खाने को मक्का की रोटी और चटनी-भाजी पुराती थी। हमारे पानी की चोरी ने हमें सर्दियों में बिना चटनी-रोटी का करके छोड़ दिया था। मानवीय दृष्टिकोण से यह असम्भव था। इतना होते हुए भी हममें से एक ने भी आशा नहीं छोड़ी थी। लेकिन हम किसके पास जाते?

प्रत्येक को तीन-चौथाईवाले मामले के ऊपर इस दस लस्टरवाली चालबाजी ने क्रुनोनों में हमारे रहे सहे विश्वास को भी नष्ट कर दिया था। दोनों अवसरों पर जिसे अपनी रक्षा का भार सौंपा था उसी आदमी ने हमें जान बूझकर धोखा दिया था। ऐसा कोई नहीं था जिसका हम विश्वास करते। हम अपनी गुहार सुनाने कहाँ जाते?

इससे होनेवाली हमारी हानि दूसरों को समझाना बहुत कठिन है। किसी दूसरे दल के छल-कपट से रक्षा पाने, या विदेश जाने की आशा प्राप्त करने,

या अपने सैनिक लड़के की छुट्टी मजूर करवाने, या शादी-गमी के मामले में सलाह लेने या और किसी मौक़े पर सहायता के लिए यदि किसान की एक या दूसरे दल तक (अकसर जिनका नेता कोई वकील होता) पहुँच नहीं होती तो वह अपने आप को धरती पर के कीड़े के समान अरक्षित समझता है।

इसलिए सभी किसान हमेशा शिक्षित समाज के किसी ऐसे सदस्य की और खासकर वकील की कृपा-दृष्टि प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, जो काम पड़ने पर अपने किसी पदाधिकारी साथी के प्रभाव का सब प्रिफेक्ट के यहाँ और सब प्रिफेक्ट के प्रभाव का प्रिफेक्ट के यहाँ और इस तरह ठेठ रोम में सरकारी दफ्तरों तक उपयोग करवा सके। पढे-लिखे लोग इस लम्बे-चौड़े पेंचीदगी-पूर्ण षड़यन्त्र को शासन और राज्य कहते हैं। हमने पहले कभी इसे इतनी स्पष्टता से नहीं देखा था, परन्तु अब हमारी आँखें खुल गई थीं।

पहले फाण्टामारा का कोई भी किसान डॉन सर्कोस्टाञ्जा को साथ लिये बिना छोटे-मोटे कामों के लिए भी, जैसे जन्म का प्रमाण पत्र ही लेने, दफ्तरों मे अकेले जाने की हिम्मत नहीं कर सकता था। यदि अकेला चला जाता तो उसी दम धक्के मार कर उसे बाहर निकाल देते थे। जनरल बाल्डीसेरा को याद है कि शुरू शुरू मे जब रोम और पेसारा के बीच रेलगाड़ी चली तो फाण्टामारा के लोग जब जब टिकिट खरीदने जाते तो पूरे किराये के साथ डॉन सर्कोस्टाञ्जा का एक विजिटिङ्ग कार्ड भी गम्भीरतापूर्वक पेश करते थे। आखिर तो, रेलगाड़ी सरकार की थी और सरकार का किसानों पर ऐसा क्या अनुग्रह था ! कुछ भी नहीं। लेकिन जैसे जैसे गाड़ियों मे यात्रा करने का रिवाज बढता गया और नई रेलगाडियाँ निकलती गई टिकिट बाबू के पास डॉन सर्कोस्टाञ्जा का विजिटिङ्ग कार्ड लेकर जाने की प्रथा भी मिटती गई। डॉन सर्कोस्टाञ्जा को जतलाये बिना ही फाण्टामारा के किसानों ने रोम तक की यात्रा की थी। लेकिन बाक़ी के सभी मामलों मे बिना कुलीनों के संरक्षण के किसान बिना पानी की मछली सा असहाय हो जाता है।

हम समाज की स्वाभाविक रचना ही इस तरह की समझते हैं, लेकिन बूढे लोगों की स्मृति में और तरह के दिन भी थे। एक वह भी जमाना था कि

निशप को लेकर तीन या चार बड़े-बड़े जमींदार थे, जो दो-तीन सीधे सादे नियमों के आधार पर और जिन्हें सब कोई समझता था, सब चीजों पर अधिकार और नियन्त्रण करते थे। तब पिड्माएटेसी आये, और उन्होंने रोज एक नया क़ानून बनाया, और रोज एक नया अफ़सर नियुक्त किया, और अन्त में यह सब इतना जटिल हो गया कि बिना वकील की सहायता के समझ पाना और काम चलाना कठिन हो गया। यों कहने को क़ानून केवल जमींदारों के ही नहीं सर्वसाधारण के पक्ष में भी वैसा ही था, लेकिन व्यवहार में इससे लाभान्वित होने के लिए, इससे बचने और इसका अपनी मनोरथ-पूर्ति म उपयोग करने के लिए वकीलों की आवश्यकता बढ़ती गई और बढ़ती ही गई।

मेरे बचपन म शहर मे केवल दो वकील थे जो नोटारी का—दस्तावेज तस्दीक करने का काम भी करते थे। इस समय चार वकील और आठ नोटारी हैं, और पच फैसलों में हस्तक्षेप करनेवाले गड़बड़िये मुख्तारों की तो गिनती ही नहीं। कमाने-खाने के लिए ये क़ानूनबाज जबर्दस्ती दीवानी-फौजदारी के झगड़े कराते हैं, प्रति सप्ताह नये मुकदमे चलाते हैं और छोटे मुकदमों को खींच-तानकर बड़ा रूप देते हैं। पुराने जमाने मे जो झगड़े सरलता से निपट जाते थे, आजकल वकीलों के कारण बरसों चलते हैं, काफी पैसा खर्च करवाते हैं और अपने पीछे भयकर घृणा-द्वेष छोड़ जाते हैं। वकीलों के कारण ही किसानों के आपसी सम्बन्धों मे तनाव बढ़ता जाता है। वकील हरएक बात म नाक घुसेड़ते हैं। उनके हाव भाव, उनका स्वर-सपात, उनका कपड़े पहिनने का ढग, उनकी अभिवादन प्रणाली उनका खाना और पीना सब कुछ एक विशेष प्रकार का और किसानों को अभिभूत करनेवाला होता है।

एक किसान की चरम आकाक्षा किसी वकील को धर्म-पिता के रूप में पाने की होती है। बतिस्मा के दिनों बीसियों किसान बच्चे नये कपड़े पहिने शहर के प्रधान गिर्जाघर में अपनी माताओं के साथ वकीलों को घेरे रहते हैं। प्रत्येक पारिवारिक उत्सव पर, खासकर विवाह-भोज में, वकील सम्मानित अतिथि के रूप मे निमन्त्रित किये जाते हैं, जहाँ वे दुलहिन के दायें बैठते हैं।

प्रत्येक दल दूसरे दल के साथ अपने अविरल सग्राम में कुछ उठा न रखता था। प्रत्येक मेयर, या पोदेस्टा, या पुलिस मजिस्ट्रेट, या कमाचीनवालों के

कप्तान, या सब-प्रिफेक्ट, या पब्लिक प्रासीक्यूटर, या स्थानीय डिप्टी को अपनी ओर करने का प्रयत्न करता था। प्रत्येक दल का लक्ष्य म्युनिसिपल या सार्वजनिक दान-फंड हथियाने का होता था। अधिकारारूढ होनेवाला दल अपने पिट्ठुओं को नौकरी देता था, अनाप-शनाप कर लगाता था, सार्वजनिक काम के ठेके उड़ाता था और चुनाव के समय अनुपस्थित तथा मृतकों के नामों की भरमारवाली सूची प्रकाशित करता था।

इन कारणों से सारा का सारा गाँव एक ही दल के अधिकार में चला जाता था। फाण्टामारा पर सदा डॉन सर्कोस्टान्जा अधिकार किये था, डॉन सुकावासियो कोलारमेल को हथियाये था, ओर्टोना पर डॉन सिकोन, विसेना पर डॉन तारांदेला और सैन वेनेदेतो पर डॉन पॉम्पोनियो अपना-अपना कब्जा जमाये हुए थे। पुराने पुलिस मैजीस्ट्रेट, कड़ावीनवाले और कारकून बदले जा सकते थे परन्तु नये आनेवालों को या तो दल-बन्दी के आगे सिर झुकाना पडता था या त्याग-पत्र देना पड़ता था।

प्रतिद्वन्द्वी दलनायकों के झगड़ों को लेकर गाँव के गाँव एक दूसरे से लड़ते थे। पेमिना और सैन वेनेदेतो गाँवों की १९१३ में जो एक दूसरे से लड़ाई हुई वह इसका एक खासा उदाहरण है। प्रतिद्वन्द्वी दलनायकों के झगड़ों को लेकर दोनो गाँवों के किसान एक दूसरे से जो भी हथियार हाथ में आ गया लेकर लड़े और खूब लड़े। उन्होंने कुएँ जहरीले कर दिये, अंगूर की बेलें काट डालीं, खलिहानों मे आग लगा दी और अन्त में गोलियाँ तक चलाई। रोम से सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ा। एक रेजीमेण्ट और कोई सौ घुड़सवार भेजे गये, तब कहीं बड़ी कठिनाई से लड़ाई बन्द हुई। लड़ाई तो समाप्त हो गई थी परन्तु किसानों में दुश्मनी अभी तक बनी हुई है।

वे ही किसान दल-बन्दियों से परे रहते जिन्हें लाभ-हानि से कोई सरोकार नहीं होता। यानी बिना खेत-जमीनवाले किसान या वे अपराधी जो बड़े घरों में चाकरी करते, गाँवों की चौकीदारी करते या इधर कुछ दिनों मे फ़ासिस्ट हो गये हैं। ये लोग आँख मूँदकर दल-बन्दियों मे नहीं पड़ते।

इधर कुछ वर्षों से हमारी ओर भी देश के अन्य प्रान्तों की भाँति राजनैतिक पार्टियों का संगठन होने लगा है। लेकिन ये नई पार्टियाँ पुरानी दल

चन्दियों के नवीन नामकरण के सिवा और कुछ नहीं है। ग़रीब किसानों पर अपना सिक्का जमाये रखने के लिए डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा पीपल्स पार्टी का नेता बन गया और अपने आपको स्वाधीनता का रक्षक कहता फिरता है। हमारे आगे उसने अपने आपको बाहरी शोषकों की लूट-खसोट के विरुद्ध मार्सिका का रक्षक घोषित किया था, लेकिन असली शोषक से सामना होते ही उसने बड़ी ख़ूबी से मोर्चा बदल दिया।

डॉन कार्लो माग्रा और अन्य बड़े-बड़े ज़मींदारों को अवश्य ही बैंक से भारी हानि उठानी पड़ी थी। बाज़ार की तेज़ी-मन्दी और भाव अब उनके नहीं ठेकेदार के हाथ में है। सरकारी ठेके भी वह उनसे बाक़ायदा छीन लेता है। वे उन्हीं मामलों में अब कुछ कर सकते हैं जिनकी ठेकेदार कोई परवाह नहीं करता।

बड़े ज़मींदार एक ओर तो किसानों से बैंक द्वारा होनेवाली अपनी क्षति पूर्ति का प्रयत्न करते और दूसरी ओर किसानों और पुराने सरकारी नौकरों को उकसाकर उन्होंने ठेकेदार के विरुद्ध एक गुप्त लड़ाई भी छेड़ दी थी। ठेकेदार के प्रति डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा और उसके साथियों का बर्ताव बिलकुल दूसरे प्रकार का था। ठेकेदार की अपेक्षा अधिक चालाक और ग़रीबों को धोखा देने के पुराने फ़न में उस्ताद थे किसानों की मनोवृत्ति को ज़्यादा अच्छी तरह समझने के कारण नये शासन और किसानों के मामलों में बीचवानी बनकर अपना प्रभाव बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन संकट के प्रत्येक मौक़े पर डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने ठेकेदार की ही सहायता की है।

यद्यपि पहले भी डॉन सर्कोस्टाञ्ज़ा ने अवश्य ही हमें सैकड़ों बार धोखा दिया था लेकिन हमारे प्रति उसका व्यवहार सदा ही आदरणीय और मित्रतापूर्ण रहा है। वह हमेशा हमसे हाथ मिलाता और जब कभी पिये होता हमें गले भी लगाता था और हम सदा उसे क्षमा कर देते थे, विशेषकर इसलिए कि हम उसके संरक्षण की आवश्यकता रहती थी। लेकिन 'प्रत्येक को तीन चौथाई' और 'दस-लस्टर' वाली चालबाज़ियों ने पूरी तरह से हमारी आँखें खोल दीं।

हर कोई हमारे विरुद्ध था। एक दूसरे के साथ प्रतियोगिता करनेवाले

अनेकों षड्यन्त्रोंवाली पुरानी सरकार का अन्त हो गया और उसका स्थान एक ही महान षड्यन्त्रवाले नये शासन ने ले लिया।

तो हम किसके पास जाते ?

बाल्डीसेरा कहता फिरता था—वह स्थिति आ गई है कि किसान भूखों मरे और मोची नगे पाँवों फिरे और कुम्हार के घर की हाँड़ी फूटी ही रहे और जुलाहे के बदन पर कपड़े का तार भी देखने को न मिले। यह बैंक का जमाना है। प्रलय हो रहा है। अराजकवादियों का राज्य है (अधिक सही, कल्कि अवतार हो गया है।)

अपने पानी का अभाव हम सबको खलता था, परन्तु उसे वापिस पाने का उपाय हम में से कोई नहीं जानता था। माइकेल जोम्पा और पाञ्जियो पिलाटो ठेकेदार पर मुक़दमा चलाने की राय के थे परन्तु मैं और बाकी के सब इसके विरुद्ध थे। ऐसे मुक़दमों का अन्त हम भली प्रकार जानते थे। मुक़दमा सौ वर्ष तक चलता, एक मैजिस्ट्रेट के पास से दूसरे मैजिस्ट्रेट के पास मारा-मारा फिरता, अपील पर अपील होती, किसानों की एक पीढ़ी की पूरी आमदनी चाट जाता और अन्त में घूम फिर कर मामला वहीं आता जहाँ से शुरू हुआ था। मार्सिका का प्रत्येक गाँव अमीरों और ग़रीबों के बीच ऐसे मुक़दमों से अच्छी तरह परिचित था। उनका फैसला ही यह होता था कि मुक़दमा फिर शुरू से चलाया जाय। और यदि हम मुक़दमा भी चलाते तो वकील किसे करते ? डॉन सर्कोस्टाञ्जा को ? वह 'प्रत्येक को तीन चौथाई' और 'दस लस्टर' जैसा कोई दूसरा ही फन्दा निकालता। तब डॉन सुकावासियो को ? या डॉन तारांदेला को ? इनके बारे में जितना कम कहा जाय उतना ही अच्छा।

पानी खोकर कोई भी सन्तुष्ट नहीं था। पूरी फसल खोकर कोई सन्तुष्ट नहीं था। आगामी शीत-काल में चटनी-रोटी भी नहीं मिलेगी, यह विचार सभी को भयावना लगता था।

पाञ्जियो पिलाटो कहता था—यदि चोरों के लिए न्याय नहीं है, दण्ड नहीं है तो समझो अन्त ही आ पहुँचा है।

एक रात बूढे मोची ने कहा—यदि क़ानून तोड़े जाने लगे हैं और उन्हें तोड़नेवाले सर्वप्रथम वे हैं जिनका काम उन्हें मनवाने का है तो समय आ

गया है कि जनता की अदालत मे जनता के क़ानून से काम लिया जाय।

'जनता का क़ानून क्या है ?'

'ईश्वर उसी की सहायता करता है जो स्वय अपने पैरों पर खड़ा होता है।' पान्डोलेरा अन्त मे बेरार्डो वॉयला के कटु सिद्धान्तों का समर्थक हो गया था।

किसी ने उसका विरोध नहीं किया।

अपनी जेब से दियासलाइयों की पेटी निकाल कर राफेल स्कार्पान ने कहा :

'यह है जनता का क़ानून।'

बेरार्डो कुछ भी नहीं बोला। अब यह पुराना बेरार्डो ही नहीं रहा था। उसका मन कहीं और था। एल्वीरा के साथ पहली रात बिताने के बाद से ही उसका मन बदल गया था। एल्वीरा बिस्तर से उठती नहीं दीखती थी। वह धीरे-धीरे मर रही थी। इतना सब होते हुए भी बेरार्डो बिना किसी लाज-शर्म और लोक-लज्जा की चिन्ता किये एल्वीरा के बूढ़े और लकवे से अपङ्ग पिता के सामने ही उसके साथ रातें बिताने लगा था।

मेरी घरवाली ने जब उससे कहा कि 'तुम उस छोकड़ी को मार डालोगे' तो उसने केवल कन्धे सिकोड़ लिये।

'दस लस्टर' वाली चालबाजी का उस पर कोई असर नहीं हुआ। पानी वापिस पाने की हमारी सभी योजनाओं के प्रति वह उदासीन ही रहा।

उसने कहा—तुम्हारे लिए बहुत ही बुरा हुआ। मेरे तो सींचने को खेत नहीं है। फिर मैं अब कुछ बच्चा नहीं हूँ और मेरी अपनी समस्याएँ भी हैं।

बेरार्डो के मन में एक ही विचार जम गया था, बाहर जाना, विदेश जाना और वहाँ जानवर की तरह रात-दिन काम करना, दूसरों से दुगुनी मेहनत करना और साल छः महीने बाद फाएटामारा लौट आकर जमीन खरीद लेना और शादी करना। किसी दूसरे विषय पर उससे बात करना असम्भव था। अब वह पहलेवाला आदमी ही नहीं रहा था।

उसकी एकमात्र इच्छा थी कि बाहर चला जाय; दस घण्टे, बारह घण्टे, चौदह घण्टे रोज काम करे और एक हजार लीरा कमाकर लौटे।

बाहर में काम पाने के बारे में वह अक्सर पोर्टाम्पा के नायब से बातें करता रहता था।

'मैं कड़ा काम चाहता हूँ, वेश्याओं और दासियों को काम दिलाना नहीं और मान्सिग्नर कैलोगेरो का काम नहीं, और न फैसिस्ट प्रथा का काम ही। मैं सचमुच का ईमानदारी-पूर्ण काम चाहता हूँ।

नायक ने रोम के कई पतों पर लिखा और वहाँ से जवाब आया कि दस लीरा रोज पर कड़ी मजदूरी का काम मिल सकता है।

वेरार्डो मेरे पास आया और बोला—दस लीरा रोज अधिक नहीं हैं; लेकिन यह औसत मजदूरी होगी। मैं दूसरों से अधिक काम करके अधिक कमा लूँगा। रहा खर्चा-पानी सो मैं अपने पेट पर पट्टे बाँधकर दिन काट लूँगा।

वेरार्डो ने मुझसे सौ लीरा उधार माँगे और मैं इस शर्त पर राजी हो गया कि वह अपने साथ मेरे लड़के को भी ले जाय। वेरार्डो ने इसे स्वीकार कर लिया। एल्वीरा ने भी उसे पचास लीरा और उधार दिये।

रवाना होने से पहले मैं अपने लड़के के बारे में उसे कुछ सूचनाएँ देने गया। नित्य की तरह वह मुझे रँगाई की दुकान में एल्वीरा के पुवाल के बिछौने के पैताने बैठा मिला।

'मैं नहीं चाहता कि मेरा लड़का वहाँ दस घण्टे रोज से अधिक कड़ा परिश्रम करे, और न मैं यह चाहता हूँ कि वह ऐसी सराय में ठहरे जहाँ बदमाश औरतें आ '

मैंने वेरार्डो से कहना शुरू ही किया था कि राफेल स्कार्पोन के भीतर घुस आने से व्यवधान पड़ा। उसके कुछ और साथी बाहर ही रुके रहे।

घुसते ही वह वेरार्डो की ओर मुड़कर चिल्लाया—सल्मोना में विद्रोह हो गया है।

वेरार्डो ने पूछा—कैसा विद्रोह? क्या हलवाइयों ने विद्रोह कर दिया है?

'नहीं, किसान उठ खड़े हुए हैं।' स्कार्पोन ने ऐसी आवाज में उत्तर दिया मानो वह हँसी-मजाक के लिए तैयार नहीं है।

'तुम्हें किसने कहा?'

'वाल्डीसेरा ने?'

'वाल्डीसेरा को किसने कहा?'

'यह गुप्त है।'

'तब यह झूठ है।' बेरार्डो ने निर्णय दिया।

स्कापान ने बाहर जाकर बेनेर्डो सेण्टो से, जो प्रतीक्षा कर रहा था, मोची को बुला लाने के लिए कहा। इस बीच हममें से कोई कुछ न बोला।

काफी कुरेदने के बाद तब कहीं वाल्डीसेरा ने हमें यह बतलाया

'आज मैं चमड़ा खरीदने शहर गया था। वहाँ चौक में डोना क्लिोला से भेंट हो गई। वह गिर्जाघर से निकल रही थी। तुम जानते ही हो कि लड़कपन में मैं उसके बाप के घर काम करता था। इसलिए हमारी आपस में अच्छी जान पहिचान है, और जब कभी हम मिलते हैं तो ठहरकर थोड़ी देर तक अवश्य बातचीत करते हैं। डाना क्लिोला ने एक धीमी आवाज में मुझसे कहा। स्वयं सेण्ट एन्थोनी ने ही तुम्हें मेरे पास भेजा है। जरा मेरे घर चलो। मुझे तुमसे एक मामले में बात करनी है।

'चमड़ा खरीदने के बाद कर्तव्य समझकर मैं उससे मिलने गया, पर मुझे मालूम नहीं था कि उसने किसलिए बुलाया है। दरवाजा खोलते हुए उसने मुझसे पूछा 'क्या तुमने यह खुशखबर सुनी है? सल्मोना में विद्रोह हो गया है। यहाँ के और अड़ोस पड़ोस के सभी कड़ाबीनवाले वहाँ भेज दिये गये हैं।' डोना क्लिोला के अनुसार सल्मोना में भी एक ठेकेदार है, जिसने सभी को तबाह कर डाला है। विद्रोह तीन दिन पहले वहाँ के बाजार में आरम्भ हुआ था और अभी तक चल रहा है। 'क्या इसका यह मतलब नहीं है कि हमारे कुबेर के पाप का घड़ा भी भर चुका है?' उसका मतलब अवश्य ही हमारे ठेकेदार से था। लेकिन मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने मेरे कान में कहा दो महीने तक रात-दिन मैंने सेण्ट एन्थोनी की प्रतीमा के आगे मोमबत्तियाँ जलाई और प्रार्थना की कि उसे कुछ हो जाय, लेकिन उसका अभी तक बाल भी बाँका नहीं हुआ।' मुझे चुप देखकर वह अधिक खुलकर बोलने लगी। लड़ाई छेड़ने का ठीक समय यही है। कड़ाबीनवाले सभी सल्मोना में हैं। ठेकेदार के प्रति विद्वेष की लहर चारों ओर फैल रही है। हम केवल संकेत की प्रतीक्षा में हैं। फाण्टामारा के किसान ही हमें यह अवसर दे सकते हैं। ... गिर्जाघर के समीप देखकर ही मैं समझ गई थी कि तुम्हें स्वयं सेण्ट एन्थोनी ने भेजा है।' मैंने उसे कहा कि मैं तो चमड़ा खरीदने शहर आया

था, परन्तु उसका ध्यान किन्हीं दूसरी बातों पर था। वह बार-बार यही कहती रही—सेएट एन्थोनी ने ही तुम्हें भेजा है। आज सवेरे मेरी प्रार्थना के समय सेएट ने मुझे आदेश दिया कि 'मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता, केवल फाएटामारा के किसान ही इस डाकू को दुरुस्त कर सकते हैं।' और गिर्जाघर से निकलते ही तुम मुझे मिले।'

डॉन कार्लो माग्ना की पत्नी ने बूढे मोची से यह भी कहा कि यदि फाएटामारा के किसानों को पेट्रोल या हथियारों की आवश्यकता हो तो किसी विश्वासपात्र आदमी के मार्फत ये चीजें भी उन्हें मिल सकती हैं।

वाल्डीसेरा के समाप्त करते ही राफेल स्कार्पोन ने बेरार्डो की ओर मुड़कर कहा—अच्छा, तो बतलाओ कि अब क्या राय है?

बेरार्डो ने प्रत्युत्तर में पूछा—तुम्हारा अपना क्या ख्याल है?

'यहाँ आने से पहले मैं और लुइज़ी देल्लाक्रोस, एएटोनियो स्पावेएटा बेनेर्डी सेएटो, गस्पेरोन और एएटोनियो जापा आपस में मिल लिये हैं। वे बाहर खड़े हैं। उनकी ओर से मैं कह सकता हूँ कि हमें सल्मोनावालों का अनुसरण करना चाहिये। हमें किसी की मदद की अवज्ञा नहीं करनी चाहिये।' उसने ठेकेदार की कई इमारत तोड़ने से आरम्भ करके रात में आक्रमण करने की एक योजना भी बना ली थी।

बेरार्डो ने पूछा—लेकिन तुम यह सब करना किस लिए चाहते हो?

राफेल को गुस्सा आ गया, वह बिगड़ उठा।

'भले आदमी, तुम रहते किस दुनिया में हो? ठेकेदार ने हमारे साथ जो-जो बुराइयाँ कीं, क्या तुम उन्हें भूल गये? इसके सिवा हमारे आगे और रास्ता ही कौन-सा है? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि इस बार सर्दियों में खाने को खाक-पत्थर कुछ नहीं है?'

बेरार्डो ने उसे तो कुछ नहीं कहा, परन्तु वाल्डीसेरा की ओर मुड़कर वैसी ही शान्त और स्वाभाविक आवाज में बोला:

'यदि डॉना ज़िज़ोला ठेकेदार से घृणा करती है तो उसने सेएट एन्थोनी से प्रार्थना क्यों की? क्या उसका पति नहीं था? और यदि सेएट एन्थोनी डॉना ज़िज़ोला पर प्रसन्न हुए हैं तो उन्होंने हमें क्यों बतलाया?

क्या उनके पास कोई देवदूत तैयार नहीं था ?"

उसी आवाज में स्कार्पोन की ओर मुड़कर वह कहने लगा :

'ठेकेदार के कारखाने जलाकर क्या तुम यह सोचते हो कि सर्दियों में हम उनकी राख से पेट भर सकेंगे ? यदि उसके सीमेण्ट, ईंट-भट्टे और चमड़ा पकाने के कारखानों के कामगार बेकार हो जायेंगे तो तुम्हीं बताओ कि हमारा क्या कुछ ज्यादा फायदा हो जायेगा ?'

तब अपनी आवाज बदलकर वह अपने मन की सच्ची बात कहने लगा

'देखो, मेरा इन सब बातों से तिलभर भी सम्बन्ध नहीं। किसी तरह भी देखो हमारी अवस्था में कोई अन्तर नहीं पड़ता। प्रत्येक आदमी को अपने निजी काम की फिक्र करना चाहिये। पहले मैंने व्यर्थ के कामों में, जिनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था, काफी सिर खपाया। आज मैं तीस वर्ष का हूँ और मेरे पास अपना कहने को खाली एक पुवाल का बिछौना है। मैं अब बच्चा नहीं हूँ और अब मुझे भी अपना आगा-पीछा सोचना पड़ता है। इसलिए मुझे तंग मत करो।'

'हम तुम्हें तङ्ग कहाँ करते हैं ? ठेकेदार ने ही हम सबको परेशान कर रखा है।' स्कार्पोन ने जवाब दिया।

बाल्डोसेरा ने कहा—बिलकुल ठीक है। मुझसे अधिक शान्त और मौन-प्रिय दूसरा कोई नहीं मिलेगा। लेकिन अब न तो कानून है और न व्यवस्था, न सरकार है और न न्याय। अब निजी काम की फिक्र करने का समय नहीं रहा है, अब कोई भी शान्तिपूर्वक नहीं रह सकता। यदि न्याय की रक्षा करनेवाले रात में आकर तुम्हारे गाँव की औरतों के साथ बलात्कार करते हैं तो, क्या तुम खड़े रहकर यह कहोगे कि 'इनमें से एक भी मेरी बहू-बेटी नहीं है ? यदि न्याय के रक्षक तुम्हारी धरती और पानी छीन लेते हैं और तुम्हें काम करने से रोकते हैं तो क्या तुम यह कहोगे कि 'मेरा इनसे कोई मामला नहीं है' ?

बेरार्डो सिर हिलाता हुआ चुपचाप सुनता रहा। वह इन तर्कों को अच्छी तरह से जानता था। उसने स्वयं ही जनरल बाल्डोसेरा के सामने सैकड़ों बार इस तरह के तर्क रखे थे। लेकिन अब वह पहले की तरह बच्चा नहीं रहा था।

अब वह अकेला फक्कड़ नहीं रहा था और इसलिए पहले की तरह खुशी-खुशी अपना जीवन और अपनी आजादी दाँव पर नहीं लगा सकता था। अब उसे अपने साथ दूसरे के बारे में भी सोचना पड़ता था। एल्वीरा के साथ पहली रात बिताने के बाद से ही उसके विचारों में जबर्दस्त परिवर्तन हो गया था। जब कि सारा गाँव बेरार्डो के सिद्धान्तों का पक्षपाती हो गया था ऐन उसी समय उसने उनका परित्याग कर दिया।

'सुनो,' वह बोला। 'मैं बिलकुल साफ कह देना चाहता हूँ। तुम्हारे पानी और तुम्हारी जमीन के लिए जेल जाने की मेरी बिलकुल इच्छा नहीं है। मेरी अपनी समस्याएँ ही मुझे परेशान करने को काफी हैं।'

स्कार्पोन और बाल्डीसेरा उठकर चले गये।

'बेरार्डो डर गया है।' स्कार्पोन ने बाहर जाकर प्रतीक्षा म खड़े हुए युवकों से कहा। उसने यह इतनी जोर से कहा कि हम सब सुन ल।

बेरार्डो फाण्टामारा के युवकों का आदर्श था। और वे उसके साथ खुशी-खुशी मौत के मुँह मे भी जाने को तैयार हो जाते।

और यह स्पष्ट दीखता था कि उसके बिना कुछ भी नहीं हो सकेगा।

एल्वीरा इस बीच बिलकुल चुपचाप अपने बिस्तरे पर पड़ी रही। वह पहले से अधिक विवर्ण हो गई थी। इस झगड़े के समय उसने क्षण भर के लिए भी अपनी आँखें बेरार्डो पर से नहीं हटाई थीं। पहले तो इस सन्देह से कि बेरार्डो मजाक कर रहा है वह उसे कुतूहल से, तब विस्मय से और यह निश्चय हो जाने पर कि उसके कथन में सन्देह की कोई गुञ्जाइश नहीं है वह उसे भय और चिन्ता से देखने लगी थी। दूसरों की उपस्थिति में उसे उसको रोकने का साहस नहीं हुआ। लेकिन बाल्डीसेरा और स्कार्पोन के चले जाने पर वह अपने को अधिक न रोक सकी और उसे झिड़कने लगी

'यदि मेरी वजह से तुम ऐसा व्यवहार कर रहे हो तो तुम्हें याद होना चाहिये कि आज से कुछ वर्ष पहले मैं तुम्हारी ओर इसीलिए आकर्षित हुई थी कि तुम्हारा बहस करने का ढग दूसरों मे न्यारा था।'

जब उसने पाया कि एल्वीरा भी उसके विरुद्ध है तो बेरार्डो पूरी तरह से अपने क्रोध को दबा न सका और उसके मुँह से कोई बहुत कड़ी बात निकल

ही जाती, लेकिन उसी समय वह चुपचाप बिना विदा तक माँगे चला गया।

जब मैं घर पहुँचा तो आधी रात बीत चुकी होगी। मैंने अपने लडके से कहा—कुछ भी हो, कल सवेरा होने से पहले ही तुम रवाना हो रहे हो। इसलिए लेट जाओ और नींद ले लो।

हम सब सोने का प्रयत्न या आँखें मूँदकर सोने का बहाना करने लगे थे। लेकिन नींद किसी को भी नहीं आ रही थी। अभी हम सब जाग ही रहे थे कि कोई दो बजे एकाएक गिर्जाघर के घण्टे की आवाज सुनाई दी। घण्टे का पहला और दूसरा ठोका बिलकुल स्पष्ट था लेकिन उसके बादवाले पहले ठोकों की प्रतिध्वनि-से मालूम हुए।

मेरी घरवाली ने डरकर पूछा—क्यों तुमने सुना?

मैंने जवाब में कहा—देवी माता होंगी। चलो, सो जाओ।

वह कोई ठीक जवाब नहीं था। हम तीनों साँस रोके सुनते रहे, लेकिन और कुछ नहीं सुनाई दिया।

शायद आधे घण्टे बाद हमने दो या तीन ठोके और सुने, जो पहलेवालों से काफी धीमे थे।

मेरी घरवाली बिलकुल ही डर गई और उसने फिर पूछा—क्या तुमने सुना?

मैंने कहा—आँधी होनी चाहिये, चलो, सो जायें।

लेकिन हवा बिलकुल शान्त थी और आँधी नहीं हो सकती थी। इसके सिवा, तेज से तेज दक्खिणी आँधी ने भी कभी हमारे गिर्जाघर के घण्टे नहीं बजाये थे।

थोड़ी देर बाद हमने फिर एक ठोका सुना और वह इतना धीमा था कि यदि हम ध्यानपूर्वक सुनते न होते तो सुनाई नहीं पड़ता।

कुछ कहने की खातिर ही मैंने कहा—उल्लू होना चाहिये।

'उल्लू गिर्जाघर का घण्टा कैसे बजा सकता है?'

'यदि उल्लू नहीं है तो फिर नेवला होना चाहिये।'

'गिर्जाघर के मीनारे में नेवला कहाँ से आयेगा?'

'अगर नेवला नहीं है तो फिर कोई डाकिन होगी।' मैं और जवाब ही क्या देता?

फाएटामारा मे उस समय बहुत कम लोग सोये होंगे। और उन घण्टियों के अकारण बज उठने से जो पड़े-पड़े जाग रहे थे शायद हमारी ही तरह अट-कलें लगा कर मन समझा रहे होंगे। लेकिन सभी को अपनी अपनी फिक्र पड़ी थी और कोई भी उठकर यह देखने नहीं गया कि गिर्जाघर की मीनार में कौन है।

आगे जो कुछ हुआ वह तुम्हें मेरा लड़का कहेगा।

—नौ—

दूसरे दिन सवेरे चार बजे मैं और बेरार्डो फाएटामारा से शहर, रोम की गाड़ी पकड़ने निकले।

बेरार्डो उदास था। उसने मेरे अभिवादन तक का जवाब नहीं दिया। पर मैंने इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मैं यात्रा के ठीक प्रारम्भ मे ही किसी तरह की अप्रियता नहीं चाहता था।

'क्या तुमने रात मे घएटे की आवाज सुनी थी?' वार्तालाप आरम्भ करने के इरादे से मैंने उससे पूछा। मैं मानों हवा से बात कर रहा था। बाढ माता की देवरी के पास पहुँचने से पहले मैंने फिर प्रयत्न किया।

'क्यों क्या रोम में पानी बरस रहा होगा?' लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।

वह लम्बे डग भरता हुआ तेजी से चल रहा था और मुझे उसका साथ बनाये रखने के लिए भागना पड़ता था। शहर में घुसते ही हमने रेलगाड़ी की सीटी सुनी। हम उसे पकड़ने दौड़े, पर वह मालगाड़ी थी और हमारी गाड़ी आने में अभी काफी देर थी।

हम कोई आध घएटे मुसाफिरखाने में बैठे होंगे कि फाटक पर राफेल स्कार्पोन दिखाई दिया।

बेरार्डो ने उसे नहीं देखने का बहाना किया। वह उसकी ओर पीठ फिरा दीवाल पर टँगी हुई एक सूचना पढने लगा। लेकिन स्कार्पोन सीधा उसके पास आया। और बोला:

'त्योफिलो फाँसी लगाकर मर गया है।'

वेरार्डो ने उसकी ओर देखा भी नहीं।

स्कार्पोन कहता ही गया : 'जनरल बान्डीसेरा ने गले में रस्सी बाँधे उसे मीनार की सीढ़ियों पर पाया। उसका शरीर तब तक ठण्डा नहीं हुआ था। वह अवश्य ही रात भर रस्से में लटका रहा होगा।'

वेरार्डो ने अपना सिर बिना घुमाये ही कहा—ईश्वर उसकी आत्मा को शान्ति दे।

'मैं डॉन अबाक्च्यो के गया था।' मानो स्कार्पोन को वेरार्डो की उपेक्षा पर विश्वास नहीं हो रहा था। 'मैं डॉन अबाक्च्यो के घर से ही आया हूँ। पहले तो उसने मुझे इतना जल्दी जगा देने के लिए खूब गालियाँ दीं और तब साथ चलकर उसकी आत्मा को पाप-मुक्त करने से इन्कार कर दिया। मैंने उससे पूछा : "जिसने आजीवन गिर्जा की सेवा की ऐसे गिर्जाघर के रखवाले को तुम अन्तिम आशीर्वाद देने से मना ही कैसे कर सकते हो?" "फाँसी लगाकर आत्म-हत्या करनेवाला सीधा नर्क में जाता है और यदि वह गिर्जाघर का रखवाला है तो साक्षात् रौरव नर्क में।" डॉन अबाक्च्यो ने यह उत्तर दिया।'

वेरार्डो अविचलित ही रहा।

उसने एक बार और कहा—उसकी आत्मा को शान्ति मिले।

स्कार्पोन बोलता ही रहा : 'हम त्योफिलो को गिर्जाघर के ठीक बीच में रखनेवाले हैं। यदि पादरी नहीं आता है तो हम उसके बिना ही काम चला लेंगे। यदि वह कराबीनवालों को भेजता है तो हम उन्हें रोकेंगे। हम त्योफिलो को गिर्जाघर के ठीक बीच में चौबीस घण्टों तक रखा रहने देंगे, जिससे ईसा, देवी माता, सैन रोक्को, सेण्ट एन्थोनी, जोसेफ, सैन वेरार्डो और दूसरे देवी-देवता उसे देख सकें। वे देख लेंगे कि हम कैसी कठिनाइयों के बीच आ फँसे.।'

वेरार्डो ने दुहराया—उसकी आत्मा को शान्ति मिले।

हमारी गाड़ी आ पहुँची।

एकाएक स्कार्पोन ने कहा—मत जाओ!

वेरार्डो ने साश्चर्य पूछा—क्यों?

स्कार्पोन ने दुहराया—मत जाओ।

बेरार्डो गाड़ी की ओर बढा। मैं उसके पीछे और मेरे पीछे व्याकुलता मे सिर हिलाता हुआ स्कार्पोन आ रहा था। वह बोला :

'त्योफिलो के लिए कड़ाबीनवाले आ रहे होंगे। बेरार्डो, तुम मत जाओ।'

लेकिन हम नहीं रुके।

सारी यात्रा हमने चुपचाप ही की। कोई कुछ न बोला। बेरार्डो यात्रा भर मेरे सामने बैठा हुआ खिड़की के बाहर देखता रहा। मैं गौर से उसकी ओर देख रहा था। एकदम मेरी समझ में आ गया कि वह अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए कुछ भी उठा न रखेगा। कोई शका उसके मार्ग में बाधक नहीं हो सकती। अपनी कामना-सिद्धि के लिए बिना किसी हिचकिचाहट के वह मुझे खिड़की से बाहर भी फेंक देता। डराने को उसके जबड़े ही काफी थे। मैंने मन ही मन सोचा कि यदि इसे भूख लगी तो यह मुझे कच्चा ही चबा जायेगा।

रोम पहुँचकर हम पेनीटेण्ट थीफ (पश्चात्तापी चोर) की सराय में ठहरे। इस सराय पर कैलवेरी के तीन क्रासवाला एक चिन्ह बना हुआ था। खाली नाम पर से तुम यह मत समझ बैठना कि इस सराय के नाम का सम्बन्ध ईसा की दाहिनी ओर शूली पर चढाये जानेवाले उस सुप्रसिद्ध चोर से होगा जिसने मरने से पहले ईसा को पहिचान लिया था और जिसे यह वरदान मिला था कि 'आज तू मेरे साथ स्वर्ग में जायेगा।' वास्तव में सराय का यह नाम उसके स्वामी के कारण था। पोर्टोप्या के नायक की भाँति इसका स्वामी भी अनेकों बार सजा भुगत कर बुढापे में फैसिस्टों के हत्थे चढ गया था और नये शासन के विरोधियों पर प्युनिटिव हमलों में सम्मिलित हो होकर सहकारी भडार गृहों और ट्रेड-यूनियनों को लूटने में निष्णात हो गया था। उसकी सेवाएँ इतनी अधिक प्रशंसित हुईं कि एक राष्ट्रीय उत्सव पर स्वय पुलिस प्रधान ने उसे 'पेनीटेण्ट थीफ' (पश्चात्तापी चोर) की उपाधि प्रदान की थी।

दूसरे दिन बडे सवेरे हम वाया वेण्टी सेटेम्बर के एक दफ्तर में कड़ी मजदूरी का काम पाने की आशा से गये।

दरबान ने हमें तीसरी मंजिल पर जाने के लिए कहा। वहाँ पर बहुत-से आदमी खड़े प्रतीक्षा कर रहे थे। हम भी उनमें जा खड़े हुए। दोपहर को जब हमारी बारी आई तो हमें पता चला कि हम तीसरी नहीं चौथी मंजिल पर प्रतीक्षा कर रहे हैं।

दूसरे दिन फिर हम तीसरी मंजिल पर गये। वहाँ पर अकेले हम दोनो तीन घण्टे तक एक बेञ्च पर बैठे प्रतीक्षा करते रहे। कई लोग हमारे सामने होकर निकल गये पर किसी ने हमारी ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। अन्त में हम पाँचवीं मंजिल पर जाने के लिए कहा गया। वहाँ दो घण्टे प्रतीक्षा करने के बाद हमें कोर्सो वितोरिया में एक पता बतलाया गया। तीसरा दिन यों बीत गया।

कोर्सो वितोरिया के दफ्तर में उन्होंने हमसे हमारे परवानों के बारे में पूछा। हमने आश्चर्यचकित होकर जवाब दिया—कैसे परवाने ?

तब हमें एक खिड़की पर जाने के लिए कहा गया जहाँ पर एक क्लर्क ने हमारे परवाने तैयार किये और उनपर बारह महीनों के बारह टिकिट लगा दिये।

क्लर्क ने हमसे पैंतीस लीरा माँगे।

'पैसा, हमेशा पैसा,' बेराडों चिल्लाया। चाकू की पैंतीस चोटों से भी हमें इतनी अधिक वेदना न हुई होती। हमने पैंतीस लीरा दे दिये।

वहाँ से हम फिर उसी पहलेवाले दफ्तर में गये और बोले—ये हैं हमारे परवाने।

हमें जवाब मिला—बहुत ठीक। कल एम्प्लायमेण्ट एक्स्चेंज जाना और वहाँ नये काम निकालने की सरकारी योजनाओं पर काम पाने के लिए बेकार और उम्मेदवार बनकर नाम लिखाना और दस्तखत करना।

इस तरह चौथा दिन समाप्त हुआ।

इतना तो अवश्य कहना पड़ेगा कि बेराडों ने यह सब बड़ी शान्ति से लिया। उसे सफलता की पूरी-पूरी आशा थी।

वह मुझसे बार-बार कहता था—काम मिलने में जितनी ही अधिक कठिनाई होगी उसके मिल जाने पर हम उतना ही अधिक कमायेंगे।

दोपहर बाद जब सभी दफ्तर बन्द हो जाते, बेरार्डो मुझे शहर में घूमने ले जाता था।

पहली बार जब हम एक इमारत के पास से, जिसके ऊपर 'बैङ्क' लिखा था, निकले तो बेरार्डो उत्तेजित होकर चिल्ला पड़ा — देखो, देखो।

बेरार्डो मोहित-सा कुछ क्षणों तक उसकी ओर ताकता रहा। तब उसने धीरे-से मेरे कान में कहा :

'ठेकेदार को सब रुपए यहीं से मिलते हैं।'

परन्तु थोड़ी दूर आगे हमें दूसरी, और तब तीसरी और तब चौथी बैंक मिली। कुछ देर बाद हमने गिनना ही छोड़ दिया। यह बतलाना कठिन था कि उनमें से ठेकेदार की कौन सी थी? रोम के मध्य में जहाँ हमें सेण्टपीटर्स देखने की आशा थी सिवा बैङ्कों के और कुछ नहीं मिला।

हरएक नई बैङ्क के समीप पहुँचने पर बेरार्डो चिल्ला उठता था — देखो! देखो! एक-एक से बढकर और शानदार और बड़ी थी। हरएक के आस-पास आदमियों और मोटर-गाड़ियों के आवागमन का ताँता लग रहा था।

बेरार्डो आश्चर्य प्रकट करते थकता ही न था।

एक साँझ हमने हमारी सराय के बाहर एक बड़ा-सा झुण्ड जमा देखा। एक फौजी घास-गाड़ी उलट गई थी और दीवाल के सहारे बगल से पड़ी थी। बहुत-से लोग मिलकर उसे सीधी करने का प्रयत्न कर रहे थे। लेकिन जैसी कि अक्सर शहरी झुण्डों की आदत है वे लोग बिना कुछ काम किये शोर ही अधिक मचा रहे थे।

बेरार्डो भीड़ चीरता हुआ अन्दर घुसा, अपना कोट-टोपी उतारा, घुटनों के बल रेंगकर गाड़ी के नीचे गया और सारा वजन पीठ पर उठा लिया। सब लोगों के विस्मय और प्रशंसा के बीच उसने गाड़ी को धीरे-धीरे उठाकर फिर पहियों पर खड़ी कर दी।

इस घटना से बेरार्डो का पुराना बातूनीपन फिर कुछ हद तक लौट आया। उस साँझ वह मुझसे बोला 'बैंकों की शक्ति नष्ट करने के लिए डॉना ज़िनोला का सेण्ट एन्थोनी की प्रतिमा के आगे दो मोमबत्तियाँ रोज जलाना क्या एक बेहूदापन नहीं है?'

मैं समझ गया कि बेरार्डो स्कार्पोन के साथवाले वाद-विवाद को जो यात्रा के प्रारम्भ में हुआ था फिर शुरू करना चाहता है। लेकिन मेरी मनोदशा किसी तरह का वाद-विवाद करने जैसी नहीं थी। वह बोलता ही रहा।

'जब तक तुम जवान हो जान-जोखिम के काम ठीक हैं। आग में मूँगफलियाँ सेंकना तो खैर बुद्धिमानी है, परन्तु ठेकेदार का घर जला देने से आखिर क्या फायदा ?'

वह बोलना चाहता था, इसलिए मैंने उसे टोका नहीं। वह बोलता ही रहा।

'क्या तुम नहीं देखते कि इसमें वीरता की कोई आवश्यकता नहीं ? स्कार्पोन भले ही समझ ले कि मैं डर गया हूँ, लेकिन यह झूठ है। दूसरों से अधिक कमाई करने के लिए मैं अपने प्राणों की बाजी लगा दूँगा। मैं अनुभव करता हूँ कि मुझमें काम करने की वह शक्ति है जो अभी तक किसी में नहीं पाई गई होगी। वे कल हमें काम पर रख लेंगे, और जब हम आरम्भ करेंगे तो तुम चकित रह जाओगे, और दूसरे भी और खुद मुकादम भी चकित हो जायगा।'

उसकी बकझक रोकने के इरादे से मैंने कहा—मुझे आश्चर्य है कि पोतिनो का अन्तिम संस्कार कैसे हुआ होगा ? टोकने से वह खीझ गया और गुस्से में भरकर बोला :

'मैं तुमसे कहता हूँ कि वीरता की इसमें किसी तरह की कोई आवश्यकता नहीं, और न शक्ति ही आवश्यक है। क्या ठेकेदार ने हमारे विरुद्ध शक्ति का उपयोग किया था ? नहीं। उसने वीरता और शक्ति से नहीं अपने दिमाग से काम लिया था। अपनी अक्ल के जोर पर ही उसने हमसे नाला ले लिया। उसने भी कहाँ लिया फाल्टामारावालों ने स्वयं होकर दे दिया। पहले उन्होंने सरकार के नाम एक अर्जी पर दस्तखत करवाये, फिर प्रत्येक को तीन चौथाई रोटी तक दस लक्कड़वाली चालाकी बीच में घुसेड़ दी। ठेकेदार से और दूसरी आशा ही क्या की जा सकती थी ? उसने हर तरह से पूरी कानूनी कार्रवाई की और अपने स्वार्थों का पहले ख्याल रखा।'

बातों के दृष्टिकोण में इस हद तक परिवर्तन हो गया था।

वह अपने हार्दिक विचार प्रकट करता हुआ आगे बोला—जमीन की कीमतें अवश्य ही बहुत गिर जायेगी। नाले के बिना जमीन का दाम कम हो जायेगा। उस पर खेती करने का ढंग भी बदल देना पड़ेगा।

घर जाकर वह जो जमीन खरीदना चाहता था वह अभी से उसके ध्यान मे थी।

पाँचवें दिन हम काम पाने के लिए एम्प्लायमेण्ट एक्सचैंज गये।

हमसे पूछा गया कि तुम किस प्रान्त से आये हो?

'एक्विला से।' हमने जवाब दिया।

'तब तुम्हें एक्विला एक्सचैंज में नाम लिखाना चाहिये।'

'एक्विला एक्सचैंज कहाँ है?'

कारकून ठहाका मारकर हँस पड़ा। उसने हमारा प्रश्न दूसरों को सुनाया और तब सारा दफ्तर ठहाके लगाने लगा।

हँसी रुकने के बाद और इतनी हँसी से आँख में आये आँसू पोंछने के बाद वह कारकून हमसे बोला—एक्विला एम्प्लायमेंट एक्सचैंज एक्विला में है।

लेकिन इटली मे भ्रमण करने की हमारी जरा भर इच्छा नहीं थी।

बेरार्डो ने जोर देकर कहा—अब तक हम बहुत-से दफ्तरों में फिर आये हैं। हम रोम में काम की तलाश मे आये हैं, घूमने-फिरने नहीं।

परन्तु हमारा घूमना फिरना बाक़ायदा जारी रहा।

माननीय डॉन एचिली पाचीन्ज़ा नामक एब्रुजी का एक वकील पेनीटेण्ट थीफ की सराय मे रहता था। बिना समय गँवाये हमने उससे मदद माँगी। छठवें दिन उसने हमें अपने शयन-कक्ष मे, जो हमारे बराबरवाला और हमारे कमरे की ही तरह अँधेरा, सँकड़ा, गन्दा और अस्त-व्यस्त था मुलाकात के लिए बुलाया। डॉन एचिली पाचीन्जा बिस्तरे पर लेटा हुआ था। वह दमे का रोगी एक फटे हाल बूढा था। दस दिन से उसने हजामत नहीं बनवाई थी। हमसे मिलने के लिए वह एक पीली सूट, सफेद कपड़े के जूते, घास की एक टोप पहने छाती पर काँसे का तमगा लगाये, लकड़ी की दाँत कुरेदनी से दाँत खोद रहा था। बिस्तरे के नीचे ऊपर तक भरा हुआ एक उगालदान रखा था।

डोन पानीज्ला ने यह कहकर कि 'सलाह की फीस दस लीरा है।' वार्तालाप आरम्भ किया।

मैंने हताश होकर जवाब दिया—अच्छा, ठीक है।

'फीस पेशगी देना पड़ती है।' उसने कहा।

हमने दस लीरा दे दिये।

'प्रत्येक के लिए दस दस लीरा।'

हमने उसे दस लीरा और दिये।

तब वह बूढ़ा अपने बिस्तर पर से उठा और एक भी शब्द बोले बिना कमरे से बाहर चला गया। हमने उसे गलियारे में खाँसते हुए सुना। खाँसी और धीरे सीढ़ियाँ उतरते और ठेठ नीचे जहाँ पेनीटेण्ट थीफ़ बैठा था कुछ कहते सुनाई दी। और सड़क के पार सामनेवाली सराय में बूढ़े के घुसते ही खाँसी की आवाज आना बिलकुल बन्द हो गई।

कोई एक घण्टे तक प्रतीक्षा करने के बाद खाँसी की आवाज फिर सुनाई दी। हमने एक बार फिर उसे सड़क पार करते, क्लान्ति-पूर्वक सीढ़ियाँ रेंगते और हमारे दरवाजे के बाहर क्षणभर ठिठकते सुना। तब एक रोटी, लाल शराब की आधी बोतल और कबाब का एक आधा टुकड़ा लिये बूढ़ा भीतर आया। फिर बिस्तरे पर लेट जाने के बाद पानीज्ला हमसे बोला—तुम्हारा मामला बहुत ही बिगड़ा हुआ है। हमने अभी तक उसे यह भी नहीं बतलाया था कि हम किस लिए आये थे।

बहुत देर तक चुपचाप विचार करने के बाद उसने हमसे पूछा—तुम्हारे पास कितनी रकम बाकी बची है?

हमने पाई पैसा सब कुछ निकाल कर रख दिया। कुल चौदह लीरा निकले।

निराश होकर वकील ने कहा—तुम्हारा मामला निरर्थक ही नहीं, एकदम गया-बीता है। एक बार फिर गौर से विचार करने के बाद उसने हमसे कहा—क्या तुम फान्टामारा से कुछ और रुपए मँगा सकते हो?

'कभी नहीं।' बेरार्डो ने जवाब दिया, यद्यपि वह खूब जानता था यह बिलकुल असत्य है।

'और क्यों एक मुर्गी या बच्चा? कम एक या दो?' और थोड़ी सी फली?

और मेरी खाँसी के लिए थोड़ा-सा शहद ? क्यों ?' बूढे ने कहा।

'हाँ, हाँ, अवश्य।' वेराडों ने शीघ्रता से उत्तर दिया, यद्यपि उसने अपनी उम्र भर शहद नहीं देखा था।

वकील ने कोई चालीसेक पीले गन्दे दाँत दिखाकर हँसते हुए कहा—तुम्हारा मामला बिलकुल साफ है।

तब वेराडों ने उसे हमारी परिस्थिति समझाई।

डॉन पार्जीना उठा, अपनी छड़ी जो किसी पुरानी छतरी का निकाला हुआ हत्था था, तलाश की और उसे हवा में हिलाते हुए बोला—मेरे साथ चलो।

हम उसके साथ हो लिये। पहला मुकाम डाकघर पर हुआ।

डॉन पार्जीना ने यह तार लिखा !

'दो सौ लीरा, सात पौण्ड पनीर, दो पौंड शहद, कुछ मुर्गियों के बच्चे भेजो।'

उसने पूछा—तुम दोनों में से ज्यादा मालदार कौन है ? किस पते पर भेजूँ ?

वेराडों ने जिसका पिता उसके बचपन में ही मर गया था जवाब दिया—मेरे पिता विन्सेञ्जो वॉयला के पते पर।

डॉन पार्जीना तार देने ही वाला था कि वेराडों ने उसका कन्धा थपथपाकर पूछा—क्यों साहब, आपको शफतालू पसन्द नहीं हैं, क्या ?

'खूब पसन्द हैं। वे खाँसी में बहुत मुफीद होते हैं।'

इसलिए तार में सात पौण्ड शफ़तालू और जोड़े गये। वकील ने तार की नकल कर ली। तब हमसे बोला—तार का महसूल चुका कर मेरे साथ चलो।

तार का महसूल चुका कर हम उसके साथ हो लिए। दूसरा मुकाम फैसिस्ट एम्प्लायमेण्ट एक्स्चैञ्ज पर हुआ जहाँ से हम पहले दिन बेरंग लौटा दिये गये थे। डॉन पार्जीना हमें गलियारे में खड़ा छोड़ कर भीतर चला गया। एक खिडकी की राह वह हमें अन्दर एक अफ़सर से बोलता और जोर-जोर से हाथ हिलाता हुआ दिखाई दिया। उसने अफ़सर को वह तार दिखलाया जो फाएटामारा भेजा गया था और उसमें अँगुली से महत्त्व की बातें दिखलाईं। अफ्सर को तार में कुछ आपत्ति दिखाई दी क्योंकि हमारा वकील एकदम

पीला पड़ गया था। भागे भागे आकर उसने हमसे पूछा :

'फ़ाण्टामारा का पनीर खाने का होता है या पकाने का ?'

'ताजा खाने के और बासी हो जाने पर पकाने के काम आता है।' बेराडों के इस उत्तर से वकील को पूर्ण सन्तोष हो गया और उसने जाकर अफ़सर के सामने यही बात दुहराई।

अब कोई बाधा नहीं थी, क्योंकि डॉन पालीज़ा ने बाहर आकर हमसे कहा :

'सिलसिला लग गया है। एम्प्लायमेण्ट एक्सचेञ्ज को आवश्यक कागज-पत्र, जन्म का प्रमाण-पत्र, पुलिस रेकार्ड और तुम्हारे अच्छे चाल-चलन के प्रमाण-पत्र लगेंगे। उनके आते ही तुम्हारा नाम बेकारों के रजिस्टर में दर्ज कर लिया जायेगा। उसके बाद काम मिलेगा। एम्प्लायमेण्ट एक्स्चेञ्जवाले स्वयं तुम्हें बुला भेजेंगे।'

रोम में आने के सातवें दिन हमारी जेब में केवल चार लीरा बचे थे।

दो रोटियाँ ख़रीदने के बाद हमारे पास कानी कौड़ी भी नहीं बची।

बेराडों अपनी हिम्मत बनाये रखने के लिए मुझसे कहता रहता था—एम्प्लायमेण्ट एक्स्चेञ्ज से समाचार आने में अब अधिक देर नहीं हो सकती।

हम अब सराय से भी बाहर नहीं निकलते थे कि कहीं हमारी अनुपस्थिति में एम्प्लायमेण्ट एक्सचेञ्ज का बुलावा नहीं आ जाय। और फिर भूख के मारे हममें घूमने-फिरने की शक्ति भी नहीं रही थी।

ज़रा-सा खटका होते ही हम दरवाजे की ओर झपटते थे।

डाकिये को देखते ही हम झपटकर नीचे भागते जहाँ पेनीटेंट्र पीक़ बैठा था।

मानसीय पालीज़ा भी हमारी तरह ही उत्सुक था। अन्तर केवल इतना था कि हम जहाँ काम की प्रतीक्षा में उत्सुक थे वह बेराडों के पिता की ओर से आनेवाले मनीआर्डर और सामान की प्रतीक्षा में। दिन भर हम तीनों कमरे में पड़े रहते थे और ज़रा-सी आवाज होते ही झपट कर नीचे भागते थे। खाली हाथ ऊपर आते समय एक दूसरे को कोसना प्रति-दिन बढ़ता जाता था।

डॉन पालीज़ा बेराडों से कहता—तुम्हारा बाप बहुत ही हृदयहीन है। कुछ पैसा न दो सौ लीरा भेजने में ही उसने इतना समय लेने लगा दिया।'

बेरार्डो जवाब देता—कुछ काम है भी या नहीं ? यदि काम है तो हमें बुलाते क्यों नहीं ? यदि काम है तो फिर इतनी रस्में किस लिए ?

'सामान के मामले में तो देर होना स्वाभाविक है और यह समझ में भी आता है। पार्सलें, और खासकर जब उनमें बिगड़ सकनेवाला माल हो, तो हमेशा देर मे पहुँचती हैं। लेकिन मनीआर्डर तो उसी दिन आ जाना चाहिये था। बेरार्डो तुम्हारा बाप महास्वार्थी सूअर है।'

बेरार्डो अपनी हाँकता—

'जन्म-पत्री का काम से भला क्या सम्बन्ध ? यदि एक आदमी काम तलाश करता है तो बिलकुल साफ है कि वह पैदा हुआ है। पैदा होने से पहले, नहीं तो भला काम ढूँढेगा ही कौन ?'

तीन दिन तक उपवास और प्रतीक्षा करने के बाद मैंने और बेरार्डो ने डाकिये के आने पर नीचे भागना भी छोड़ दिया।

हम सवेरे से साँझ तक बिस्तरे में पड़े रहते थे और खाली स्नान गृह में जाकर नल से पानी पीने के लिए उठते थे।

डॉन पानीज्जा हमसे कहीं अधिक धैर्यवान और आशावादी था। दिन में तीन बार प्रत्येक डाक पर हम उसकी खाँसी बिस्तरे से उठते, कमरा छोड़ते, धीरे-धीरे उतरकर ठेठ नीचे जाते और थोड़ी देर बाद थककर ऊपर चढ़ते और दरवाजे के छेद के आगे आकर रुकते हुए सुनते थे। तब वह बूढ़ा फाण्टामारा को गालियाँ देता सुनाई पड़ता था। काँपती हुई आवाज में वह कहता

'बेरार्डो वॉयला, तुम्हारा बाप सूअर है। तुम्हारा बाप मेरे विनाश का कारण है। तुम्हारे बाप के कारण मुझे मरना पड़ेगा। तुम्हारे बाप की वजह से ही मुझे खाना खाये आज तीन दिन हो गये। सब उसी का दोष है।'

बेरार्डो जवाब नहीं देता था। उसने वही पहलेवाली चुप्पी साध ली थी। वह एक भी शब्द बोले बिना घण्टों छत की ओर ताका करता था।

मैं कहता—हम क्या करेंगे ? बिना कुछ खाये तो हम अधिक दिन तक रह नहीं सकते।

लेकिन बेरार्डो जवाब नहीं देता था।

उपवास के चौथे दिन हमारे लिए एक अप्रत्याशित रोमांचकारी घटना हुई। कोई पाँच बजे का समय होगा। हमने डॉन पानीज्ञा और पेनीटेण्ट थीफ़ को खुशी से चिल्लाते हुए सीढ़ियाँ चढ़ते सुना।

वकील गा रहा था :

> 'कहाँ हैं विजय के स्वर्णिम पंख ?
> रोम का दास वह है नियति से ..'

वे हमारे कमरे के द्वार को बिना खटखटाये ही धक्का देकर अन्दर चले आये। पेनीटेण्ट थीफ़ बेरार्डो के नाम का एक तार उछाल रहा था, और डॉन पानीज्ञा मदिरा की दो बोतलें लिये था।

वकील ने शोर मचाया—बेरार्डो वॉयला, तुम्हारा बाप बहुत अच्छा आदमी है। मनीआर्डर आ गया है!

बेरार्डो खुशी से बावला होकर विस्मयपूर्वक बोला—सचमुच! उसे यद्यपि यह विश्वास नहीं हुआ कि मनीआर्डर उसके बाप ने जिसे मरे बीस वर्ष हुए, भेजा है लेकिन चार दिन तक उपवास करने के बाद तुम किसी भी बात पर विश्वास करने को तैयार हो जाओगे।

उधर वकील मदिरा की बोतल खोलने में लगा था इधर बेरार्डो ने तार लिया, खोला, पढ़ा, हमारी ओर देखा और उसे मोड़कर चुपचाप जेब में रख लिया।

मैंने पूछा—क्या है ?

बेरार्डो ने जवाब नहीं दिया। उसका चेहरा एकदम बदल गया। आँखें लाल हो आईं। फान्टामारा से रवाना होने के बाद मेरी जान में प्रथम बार ही भावावेग का उस पर इतना स्पष्ट असर हुआ था।

जहाँ तक हो सकता था मित्रतापूर्ण ढंग से मैंने एक बार फिर पूछा—कहो क्या है ?

बेरार्डो एक भी शब्द नहीं बोला और बिस्तरे पर लम्बा हो गया। डॉन पानीज्ञा और पेनीटेण्ट थीफ़ हैरान होकर वापिस चले गये। लेकिन वे अपने साथ मदिरा की दोनों बोतलें ले जाना नहीं भूले थे। मैं बेरार्डो का विश्वास प्राप्त करने उसी बिस्तर पर उसकी बगल में लेट गया और बड़ी देर तक प्रती-

चाप पड़ा रहा। तब मैंने उससे एक बार फिर पूछा :

'क्यों क्या है ? क्या हो गया है ? क्या कोई मर गया है ?'

लेकिन उसने बिलकुल ही जवाब नहीं दिया। मैं समझ गया कि फाण्टा-मारा में कोई न कोई मर गया है।

उसी साँझ आठ बजे हमारे बगलवाले कमरे में—मैं तुमसे कह चुका हूँ कि उसमें डॉन पालीझा रहता था—एकाएक कुछ गोल-माल हुआ। साथ ही हमारे कमरे का दरवाजा खुला और डॉन पाजीज्जा दीख पड़ा। वह भीतर नहीं आया, वहीं खड़े खड़े चिल्लाया :

'फैसिस्ट एम्प्लायमेण्ट एक्स्चेंज के प्रधान अधिकारी अभी मुझसे मिलने आये थे। तुम्हारे कागज़ात आ गये हैं। पॉडेस्टा के दस्तखतोंवाले तुम्हारे प्रमाण पत्रों में लिखा है 'राष्ट्रीय दृष्टिकोण से चाल-चलन बिलकुल ही बुरा।' ऐसे प्रमाण-पत्र की सिफारिश से तुम्हें काम नहीं मिल सकता। ऐसा प्रमाण-पत्र होने से तुम्हें कभी भी काम नहीं मिल सकता। इसके सिवा, पुलिस को सूचना दे दी गई है।'

वह जोर से किवाड़ ठेलकर चला गया।

पाँच मिनट बाद दरवाजा फिर खुला। इस बार पेनीटेण्ट थीफ था। वह बोला—तुम्हारे कमरे में दूसरा किरायेदार आनेवाला है। बस, आधे घण्टे में चले जाओ।

जब हमने सराय छोड़ी तो अँधेरा हो गया था।

'अब हम क्या करेंगे ?' मैंने बेरार्डो से पूछा। लेकिन वह भी क्या जवाब देता ?

भूख से मेरे पाँव बहुत कमजोर हो गये थे और सिर दर्द करने लगा था। प्रतिक्षण मुझे लगता था कि मैं बेहोश हो जाऊँगा। सड़क पर आने-जानेवाले हमें घूरते थे। हमें देखकर इस तरह कतराकर एक ओर हट जाते थे मानो हमसे डरते हों। बेरार्डो का दिखावा भी सचमुच ही डरावना था।

अनजाने ही हम स्टेशन के समीप तक निकल आये। वहाँ पर बहुत-सी पुलिस और सैनिक और कड़ाबीनवाले थे जो चौक में प्रत्येक आने-जानेवाले को रोककर पूछ-ताछ कर रहे थे। वे मोटरें रोककर उनकी भी तलाशी ले

रहे थे। विस्मयपूर्वक हमारी ओर देखने के बाद एक युवक हमारे सामने आ खड़ा हुआ।

'नमस्ते।' उसने वेराडो से कहा।

वेराडो ने सशंकित होकर उसकी ओर देखा और कोई उत्तर नहीं दिया।

युवक बोलने लगा—मैं तुम्हारे ही बारे में सोच रहा था। यदि तुम मुझे यहाँ नहीं मिल जाते तो कल तुम्हारे लिए मैं फाएटामारा जाने ही वाला था।

वेराडो ने कहा—मेरे पास एक कानी कौड़ी भी नहीं है। यदि तुम धोखा देना चाहते हो तो किसी और को तलाशो।

युवक हँसने लगा। वह आधा विद्यार्थी और आधा कमकर लगता था। वह लम्बा और दुबला था। उसके कपड़े साफ-सुथरे पर तड़क-भड़कवाले नहीं थे। उसके बोल चाल और दिखावे में सन्देह की कोई गुञ्जाइश नहीं थी।

उसने वेराडो से पूछा—पिछली बार जब तुम अवेजानो गये थे तो उसकी तुम्हें याद है न? लाल बालोंवाला एक पुलिस जासूस, जिसकी दाढ़ी पर घाव का निशान था तुम्हें और फाएटामारा के दूसरे लोगों को एक आमोद-गृह में ले गया था? याद है न? जिसने तुम्हें उससे सावधान किया था उसे भूल गये?

वेराडो ने उसे खूब अच्छी तरह देखा और तब पहिचान लिया।

जब मैंने देखा कि वेराडो अवसर निकल जाने दे रहा है तो मैंने उस युवक से कहा—हम भोजन करने के लिए कुछ पैसे दो।

अवेजानोवाला वह युवक हमें एक काफी घर में ले गया और सूअर का गोश्त तथा अण्डे लाने को कहा।

वेराडो ने शंकित होकर पूछा—क्या यह हमारे लिए है? दाम कौन देगा? हमारे पास तो कुछ भी नहीं है।

उसे विश्वास दिलाने के लिए युवक ने गल्ले पर जाकर पेशगी दाम चुकाए। इस बीच वेराडो ने मेरी ओर देखा, मानो कहना चाहता हो : 'यह आदमी अवश्य ही पागल होना चाहिये।'

कुछ खा चुकने के बाद वेराडो ने उस युवक से पूछा : 'ये सैनिक और [illegible] सब क्या करने में लगे हुए हैं?'

'भेदी आदमी को पकड़ने की आये दिन की धूम-धमाल है।' युवक ने उत्तर दिया, परन्तु हम कुछ समझ नहीं सके।

उस युवक ने हमें समझाया—कुछ समय से भेदी आदमी के नाम से पुकारे जानेवाले एक अज्ञात व्यक्ति ने सार्वजनिक शान्ति और सुरक्षा खतरे में डाल रखी है। विशेष न्यायालय के सामने प्रत्येक मुक़दमे में भेदी आदमी का उल्लेख हुआ है। वह गुप्त रूप मे पैम्फ़लेट—पर्चे—छापता और बाँटता है। गैरक़ानूनी पर्चे और पत्रिकाएँ रखने के अपराध में जो-जो भी पकड़े गये सभी ने स्वीकार किया है कि ये उन्हें भेदी आदमी से मिले थे। शुरू-शुरू में भेदी आदमी थोड़े-से बड़े कारखानों में ही काम करता था, तब शहर के उपनगरों और बारकों में। तब एक बार वह विश्वविद्यालय में भी दीख पड़ा था। एक सवेरे एक ही साथ वह कई विभिन्न स्थानों पर देखा गया था और उसी दिन उसके सीमा-प्रान्त पर भी देखे जाने की रिपोर्ट है। इटली के दक्ष जासूस उसके पीछे छोड़े गये हैं, लेकिन वह अभी तक उनके हाथ नहीं आया। वे छः हज़ार गिरफ़्तारियाँ कर चुके हैं और बार-बार सरकार ने विश्वास किया कि भेदी आदमी पकड़ लिया गया है। लेकिन थोड़े से व्यव-धान के बाद गुप्त छापाखाना फिर से अपना काम शुरू कर देता है और विशेष न्यायालय के काग़ज़ों में पुनः भेदी आदमी दिखाई देने लगता है। इधर कुछ समय से ऐसा मालूम पड़ता है कि वह एब्रुज़ी में ही है।

'एब्रुज़ी में?' बेरार्डो ने उत्सुकता से पूछा।

'सल्मोना, प्रेना, अवेज़ानो और दूसरे-दूसरे स्थानों में भी। जहाँ कहीं वह दिखाई पड़ता है वहाँ के किसान विद्रोह करते हैं, और जहाँ कहीं किसान विद्रोह करते हैं वहाँ वह अवश्य पहुँचता है।'

'लेकिन वह है कौन? क्या वह शैतान तो नहीं है?' बेरार्डो ने पूछा।

अवेज़ानोवाले युवक ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—शैतान भी हो सकता है।

'अगर कोई उसे केवल फाण्टामारा का रास्ता भर बतला दे।' बेरार्डो बोला।

उस आदमी ने शान्तिपूर्वक जवाब दिया—वह पहले से ही जानता है।

उसी क्षण एक पुलिस सार्जेण्ट और सैनिकों के एक दस्ते ने काफ़ी-घर में प्रवेश किया और हमारे पास आये।

उन्होंने परवाने और परिचय पत्र माँगे।

सैनिक काफी-घर की तलाशी लेने लगे और पुलिस सार्जेण्ट एम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज से मिले हमारे कागज-पत्र और हमारे साथवाले युवक के कागजात और परिचय-पत्र और दूसरे बहुत से कागज-पत्र देखने लगा।

हमारे कागजात बराबर थे और पुलिस सार्जेण्ट जा ही रहा था कि सैनिक कपड़े में लपेटी हुई एक पार्सल लिये दौड़े आये, जो उन्हें 'हैट स्टैंड' के नीचे पड़ी मिली थी। पार्सल के अन्दर की चीजों ने सिपाही और सैनिकों को क्रोधोन्मत्त कर दिया। वे चिल्लाते हुए हमारी ओर झपटे, 'यह पार्सल किसकी है? इसे यहाँ किसने पटका?'

हमारी सफाई की प्रतीक्षा किये बिना ही वे लोग हमें गिरफ्तार कर पुलिस थाने ले गये।

बेराडों यह सोचकर कि पार्सल में चोरी की चीजें थीं और वे हमें चोर समझकर थाने ले जा रहे थे रास्ते भर चिल्लाता गया

'हम चोर नहीं हैं। तुम्हें शर्म आनी चाहिये! चोर तुम हो! हम लुटे हुए गरीब लोग हैं, चोर नहीं। फैसिस्ट एम्प्लायमेण्ट एक्सचेंज वाले चोर हैं, उन्होंने हमारे पैंतीस लीरा चुरा लिये। डॉन पालीनो चोर है—उसने हमारे बीस लीरा ले लिये। हम चोर नहीं हैं। ठेकेदार चोर है!'

कोतवाली पर शहर भर में हुई गिरफ्तारियों का ताँता लग रहा था।

अयेत्सानोवाले युवक ने बेराडों को कान में समझाया—भेदी आदमी की तलाश अभी तक चल रही है। तब बेराडो की समझ में आ गया कि हम चोरी के लिए नहीं पकड़े गये हैं और वह चुप हो गया।

कुछ घण्टों के बाद हम एक कोठरी में जिसमें पहले से ही दो और कैदी थे बन्द कर दिये गये। मैंने और बेराडों ने एक दूसरे को सन्तोष की दृष्टि से देखा। कम से कम हमारे सिर पर एक छत तो थी और दूसरे दिन खाने को भी कुछ न कुछ तो मिलने ही वाला था। बाकी भविष्य के बारे में सोचने को काफी समय पड़ा था।

कोठरी के आधे हिस्से में जमीन से थोड़ा ऊँचा कंक्रीट का एक चबूतरा बना हुआ था, जो बिस्तरे के काम आता था। कोने में एक छेद भी था,

जिसका उपयोग बिलकुल उजागर था।

दोनो क़ैदी जो पहले से ही कोठरी में थे अपने घड़ी किये हुए कोटों का सिरहाने लगाये दूसरे कोने में हाथ-पाँव फैलाये पड़े थे। मैंने तत्काल ही उनका अनुसरण किया और अपना कोट सिरहाने लगा कंक्रीट पर लेट गया। अवेजानोवाला युवक और बेरार्डो कोठरी में चहल-क़दमी करते हुए उत्सुकता-पूर्वक बातें करने लगे। अवेजानोवाला युवक उन दो आदमियों की उपस्थिति के कारण फुस-फुसाहट में बोल रहा था, लेकिन काफी उत्तेजित होने के कारण बेरार्डो उतना धीमे नहीं बोल सक रहा था। इसलिए मैं जो कुछ बेरार्डो बोलता था वही सुन सका।

'यह भेदी आदमी वाला किस्सा मेरी समझ में नहीं आता। क्या भेदी आदमी शहर का रहनेवाला है या किसान? यदि वह शहराती होकर एब्रुजी जाता है तो अवश्य ही उसका कोई दूसरा मतलब होना चाहिये

'लेकिन शहरवाले खुशहाल होते हैं। क्योंकि वे किसानों का शोषण करते हैं। हाँ, मैं जानता हूँ कि शहर मे भी ग़रीब लोग हैं। पेपिनो गोरियाना को बहुत मुसीबतें उठाना पड़ीं और पानीजा वकील भी कुछ मखमली गद्दों पर नहीं लोट रहा है। लेकिन वास्तव में ये एब्रुजी से आकर शहर म बसनेवाले लोग हैं।'

कई बार बेरार्डो भी जब फुसफुसाने का प्रयत्न करता तो मेरा सुनने का सिलसिला टूट जाता था, पर उनके हाव-भाव से मैं समझ जाता कि उसका और अवेजानोवाले युवक का मतैक्य नहीं हो रहा है। बेरार्डो यद्यपि कई बार अपनी आवाज निस्सन्देह धीमी कर देता था, परन्तु कभी-कभी उत्तेजित होकर इतने जोर से बोलने लगता था कि हमारी कोठरी में के दोनो क़ैदी ही नहीं, पास-पड़ोस की कोठरियों में बन्द दूसरे लोग भी शायद सुन लेते होंगे।

'तुम कहते हो कि काफी-घर मे मिली पार्सल के अन्दर समाचार-पत्र थे? क्या छपे हुए पर्चे? काग़ज़ों की एक ऐसी पार्सल है ही किस योग्य?'

युवक भला ही नहीं धैर्यवान भी था। वह बेरार्डो को धीरे-धीरे बोलने के लिए कहता, और बेरार्डो स्वीकार भी कर लेता परन्तु शीघ्र ही वह फिर जोर-जोर से बोलने लग जाता था।

'लेकिन शहरवाले सम्पन्न हैं, और किसान नहीं। शहरवाले अच्छा खाते-पीते हैं और उन्हें कर भी नहीं देने पड़ते। शहरवाले बिना कुछ काम किये ही काफी पैसा कमा लेते हैं। लोगों को पीटने के लिए बीस लीरा रोज और पीटे जाने का कोई डर नहीं। वे हमसे कपड़ों, जूतों और टोपियों के लिए कितना दाम वसूल करते हैं, जरा इसी ओर देखो। हम किसान कीड़ों की तरह हैं। सब हमारा शिकार करते हैं। सब हमें पाँवों तले रौंदते हैं। सब हमें धोखा देते हैं। डॉन सर्कोस्टान्ज़ा तक हमारे विरुद्ध हो गया है, डॉन सर्कोस्टान्ज़ा तक!'

अवेज़ानोवाला युवक मन लगाकर सुन रहा था।

वह बड़बड़ाया—यह तो बहुत ही बुरा है। क्या सचमुच ही ऐसा है? क्या सभी किसान तुम्हारी ही तरह सोचते हैं?

थोड़ी देर बाद बेराडों फिर कहने लगा—मेरी समझ में नहीं आता कि शहरवाले अकारण ही पर्चे छापकर किसानों को क्यों देने लगे? न मेरी यह समझ में आता है कि भेदी आदमी अपना काम छोड़ कर दूसरों की समस्याओं में क्यों सिर खपाता है? या वह कागजी तो नहीं है और अपना कागज बेचने के लिए तो अखबार नहीं न छापता है?

'और ये जेल जानेवाले जिनके बारे में तुम मुझे कह रहे हो, क्या सब के सब पागल तो नहीं हैं? यदि नहीं, तो उनका उद्देश्य क्या है? और वे जिनके बारे में तुमने कहा कि सरकार द्वारा गोलियों से उड़ा दिये गये—उनका उद्देश्य क्या था? क्या गोलियाँ खाना ही उनका उद्देश्य और उनका काम था?'

अवेज़ानोवाला युवक समझ चुका था कि बेराडों ये सब शंकाएँ स्वयं अपने आपसे कर रहा है। अकेले अपने बारे में सोचने और काम पाने और ज़मीन खरीदने की बेराडों की सभी आशाएँ लुप्त हो गई थीं। सब मार्ग अवरुद्ध थे। पादेस्टा ने इसे राष्ट्रीय दृष्टिकोण से बहुत बुरा करार दिया था और इसलिए सब रास्ते रुक गये थे। यही कारण होना चाहिये कि बेराडों फिर अपने पुराने तरीके से और इस बार अधिक दृढ़ता से सोचने लगा था। अवेज़ानोवाले युवक के सामने वह जो शंकाएँ रख रहा था वे उसकी अन्तिम शंकाएँ थीं।

धीरे-धीरे दूसरे देशों और रूस के बारे में बातें होने लगीं और मैंने बेरार्डो को कहते सुना :

'रूस ? मुझे सच-सच बतलाओ। क्या सचमुच रूस नाम की ऐसी कोई जगह भी है जिसके बारे में लोग-बाग इतनी सारी बातें करते हैं ? रूस के बारे मे बातें तो सभी करते हैं, लेकिन अभी तक वहाँ गया कोई नहीं। किसान अमेरिका, अफ्रिका, फ्रान्स सर्वत्र जाते हैं, लेकिन रूस अभी तक कोई नहीं गया।'

बेरार्डो कुछ मामलों में बिलकुल अडिग था—जैसे, जब आजादी की बात छिड़ी तो उसने पूछा :

'बोलने की आजादी ? हम वकील नहीं है। छपने (प्रेस) की आजादी ? हम मुद्रक नहीं हैं ! तुम काम मिलने की आजादी के बारे में, सबको खेत मिलने की आजादी के बारे में बात क्यों नहीं करते ?'

इस समय मुझे अनजाने ही नींद आ गई होगी। मैं कुछ घण्टों तक सोता रहा हूँगा कि बेरार्डो ने मुझे जगाया। वह मेरे पैनाने युवक की बगल में बैठा हुआ था।

उन्हें तब तक जागते और बातें करते हुए देखकर मुझे आश्चर्य हुआ।

बेरार्डो ने मुझसे कहा—क्षमा करना, लेकिन मैं तुम्हें अधिक समय तक जागता नहीं रखूँगा। क्या तुम्हें प्रिन्स टोर्लोनिया के बारे में सच्ची कहानी मालूम है ?

मैंने जवाब दिया—मेरा मन नहीं है। राजकुमारों के बारे में सब सच्ची कहानियाँ मेरे लिए एक सी हैं। मुझे सोने दो।

'मुझे तुम्हें कह देना चाहिये कि तथाकथित राजकुमार टोर्लोनिया न तो एक राजकुमार ही है और न उसका नाम टोलानिया है।'

'तुम सपना तो नहीं देख रहे हो ?'

'मैं तुम्हें बतला देना चाहता हूँ कि जिस कथित राजकुमार टोर्लोनिया को किसान भूस्वामी समझकर पूजते हैं, वह एक फ्रान्सिसी रेजीमेण्ट के साथ सौ वर्ष पहले इटली आया था। वह राजकुमार तो नहीं ही था परन्तु उसके नाम के आगे पीछे डॉन पाजीझा की तरह कोई सींग पूँछ तक नहीं थी।

करवाना । बाक़ी बेरार्डो जानता है ।

आठ बजे पुलिसवाले हमारे लिए एक टीन काफी लाये। बेरार्डो ने अपनी चहल-क़दमी रोककर वार्डर से कहा :

'मैं इसी समय पुलिस-अधिकारी से बात करना चाहता हूँ।'

'तुम्हारी बारी आने तक प्रतीक्षा करो।' वह जवाब देकर चला गया।

अवेज़ानोवाले युवक ने भी ये शब्द सुने और बेरार्डो की ओर डरी हुई आँखों से देखने लगा। उसे उससे कुछ पूछने की हिम्मत न हुई, परन्तु विश्वासघात का डर उसकी आँखों में बना हुआ था।

नौ बजे हम तीनों पुलिस अधिकारी के सामने पेश किये गये।

बेरार्डो ने आगे बढ़कर कहा .

'साहब, मैं सब कुछ बता देने को तैयार हूँ।'

पुलिस अधिकारी ने कहा—शुरू करो।

'स्टेशन के पासवाले काफी-घर में मिली वर्जित पर्चों की पार्सल मेरी थी। वे पर्चे मैंने किसानों में बँटवाने के लिए छपवाये थे। भेदी आदमी मैं ही हूँ।'

—दस—

तो भेदी आदमी आखिर पकड़ ही लिया गया।

उसकी गिरफ़्तारी के समाचार सुनकर पत्रकारों, फैसिस्ट प्रधानों और ऊँचे सरकारी अफसरों की भीड़ थाने पर जहाँ वह बन्द था इकट्ठी होने लगी। तो भेदी आदमी किसान था।

पुलिस उसे शहर में ढूँढ रही थी, पर शहर का एक भी निवासी क्या उनसे छिपा था? एक एक के सही-सिक्कोंवाली सूची, निगरानी और जानकारी उनके पास थी। खासकर सरकार के विरोधियों की तो पूरी तरह से सही-सिक्कों वाली सूची, निगरानी और जानकारी थी। पर किसान? किसानों को कौन जानता है! किसानों को जाननेवाली सरकार इटली में भी कोई हुई भी है? और भला वे एक-एक किसान के नाम की सही-सिक्कोंवाली सूची, निगरानी और जानकारी रख ही कैसे सकते थे?

तो भेदी आदमी एक किसान निकला। जब-तब बेरार्डो कोठरी से बाहर

इस या उस अफ़सर के सामने ले जाने को निकाला जाता था, जो उससे कुछ पूछना या उसे देखना मात्र चाहता था। सतर्कता के लिए बेराडों, मैं और अवेलानोवाला युवक रात के समय तीन कोठरियों में अलग-अलग बन्द कर दिये जाते थे लेकिन कुछ दिनों तक दिन के समय विशेष पूछ-ताछ करने के लिए वे हम तीनों को एक साथ लाते थे।

पुलिस अधिकारी बेराडों से बहुत-सी बातें मालूम करना चाहता था। वह गुप्त छापाखाने का ठिकाना, मुद्रक का नाम, पता और यदि हों तो, इस काम में उसके अन्य साथियों की पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करना चाहता था। लेकिन बेराडों कोई जवाब नहीं देता था। बेराडों यह बतलाने को कि मैं कुछ भी बोलने को तैयार नहीं हूँ इतनी जोर से ओठ काटता कि खून निकल आता था।

एक-एक तफ्तीश पर उसकी हालत बुरी होती गई। पहली तफ्तीश के समय उसकी दाहिनी आँख के नीचे केवल एक नीला निशान था, लेकिन बाद-बाद में तो चोटों के कारण उसे पहिचान सकना भी मुश्किल हो गया था। ओठ, नाक, कान, भौंह सर्वत्र चोट के निशान थे। लेकिन वह फिर भी नहीं बोलता था। वह पुलिस अधिकारी के एक भी सवाल का जवाब नहीं देता था। जब वह अपने फटे हुए ओठ अधिक समय तक बन्द नहीं रख सकता था तो पुलिस अधिकारी को अपनी चुप्पी का निश्चय बतलाने के लिए जोर से दाँत भींच लेता था।

एक दिन मैं भी 'विशेष तफ्तीश' के लिए ले जाया गया। एक तहखाने में ले जाकर मेरे दोनों हाथ चमड़े के पट्टे से पीठ पीछे बाँधकर मुझे लकड़ी की एक मेज़ पर पटक दिया। तब मानो मेरी पीठ पर आग-सी बरसने लगी, मानो मेरी पीठ में छेद बनाकर अंगारे उँडेले जाने लगे, मानो मेरी पीठ खोदकर एक अथाह गड्ढा बनाया जाने लगा।

जब मुझे होश आया तो मेरे मुँह से खून निकलकर मेज़ पर बह रहा था। मेरा गला सूख रहा था इसलिए मैं उसे ज़बान से चाट गया।

दूसरे दिन अवेलानोवाला वह आदमी छोड़ दिया गया।

मैं और बेराडों एक ही काल-कोठरी में एक और आदमी के साथ, जो

पुलिस के भेदिये-सा लगता था बन्द कर दिये गये। मैंने अपना सन्देह बेराडों के कान में कहा, लेकिन उसने जवाब दिया

'कोई हर्ज नहीं। मुझे जो कुछ कहना था मैं पहले ही कह चुका हूँ।'

लेकिन जब मैंने यह कहा कि अवेजानोवाला आदमी रिहा कर दिया गया है तो वह बोला :

'हमें भी छुटकारे का कोई उपाय सोचना चाहिये। यदि जल्दी ही समाप्त हो जाय तो यह खेल बुरा नहीं है।'

खेल शुरू करना बहुत सरल था लेकिन उसे समाप्त करना इतना सरल नहीं था।

बेराडों के कहने पर कि उसका पहलेवाला बयान झूठा था पुलिस अधिकारी ने हँसते हुए यह कहकर उसे फिर काल-कोठरी में बन्द कर दिया कि या तो तुम जो कुछ जानते हो सच-सच बतला दो नहीं तो काफी तकलीफ उठाना पड़ेगी।

उसी साँझ बेराडों फिर दूसरी तरह की विशेष तफतीश के लिए बुलाया गया। बेराडों की विशेष तफतीश बहुत आतंकमयी होती थी। बेराडों सामना करता था। वह बिना मारे मार खाने को तैयार नहीं था। उसके हाथ पाँव बाँधने को आठ-नौ वार्डर लगते थे। उस साँझ उसने ऐसा बहाना किया मानो बिना मुक़ाबला किये ही यन्त्रणा सह लेगा। लेकिन जब एक वार्डर झुका हुआ रस्सी से उसके घुटने बाँध रहा था तो उसने उछलकर इतने जोर से उसकी गुद्दी में दाँत गड़ा दिये कि छुड़ाने के लिए बेराडों के जबड़ों पर दूसरे वार्डरों को हथौड़े चलाने पड़े। अन्त में वे उसे हाथ-पाँव टाँगकर इस तरह कोठरी में लाये जैसे सलीब पर से उतारने के बाद ईसा को ले गये थे।

दूसरे दिन सवेरे बेराडों ने मुझसे कहा—वह बाहर है और मैं यहाँ भीतर। आखिर तो, वह हृदय से भी शहरवाला ही है। वह बाहर गुलछर्रे उड़ा रहा है और मैं उसके लिए यहाँ अपनी जान दे रहा हूँ। मैं सब कुछ क्यों न कह दूँ? सब कुछ, जो मैं जानता हूँ और जो मैं नहीं जानता और केवल ख्याल कर सकता हूँ और इसके सिवा जिसका मैं ख़याल तक नहीं कर सकता वह भी क्यों न कह दूँ?

(जिस क़ैदी को हम भेदिया समझते थे उसने अपने कान खड़े किये।) दूसरी बार जब हम पुलिस अधिकारी के सामने बुलाये गये तो मैंने सोचा कि बेरार्डो जेल से छूटने के लिए अचेतानोवाले आदमी ने उससे जो कुछ कहा था सब कह देगा। मैं तै नहीं कर पाया था कि उसका ऐसा करना उसके हक़ में बुद्धिमानी होगी या नहीं।

'तुम सच-सच बतलाने को तैयार हो?' पुलिस अधिकारी ने उससे पूछा।

'हाँ,' बेरार्डो ने जवाब दिया।

पुलिस अधिकारी ने उसके सामने एक अखबार किया, जिसमें बड़े बड़े अक्षरों में यह शीर्षक था

"बेरार्डो वॉयला ज़िन्दाबाद!"

'गिरफ्तार होने के दिन से आज तक पुलिस की ओर से तुम्हारे साथ जो बर्ताव हुआ उसकी अच्छी जानकारी गुप्त रूप से छपे हुए इस समाचार पत्र में दी हुई है। जब कि तुम सब कुछ स्वीकार करने को तैयार हुए हो तो पहले यहीं से शुरू करो कि तुमने काल-कोठरी से इस गुप्त अखबार को समाचार कैसे भेजे।'

बेरार्डो ने कोई जवाब नहीं दिया।

'इस अखबार में फाण्टामारा के बारे में बहुत कुछ है। एक नाले का बहाव बदलने का ज़िक्र है, एक चरागाह का उल्लेख है, फ्युसिनो-समस्या का उल्लेख है, किसी त्योफिलो की आत्महत्या का उल्लेख है, और किसी एल्वीरा की मृत्यु का और दूसरी बहुत सी बातों का उल्लेख है। इससे प्रकट होता है कि फाण्टामारा के निवासी के सिवा इसे और कोई नहीं लिख सकता। 'अच्छा तो अब यह बतलाओ कि तुमने काल-कोठरी में से इस गुप्त अखबार को समाचार कैसे भेजे?'

बेरार्डो ने जवाब नहीं दिया। वह पुलिस अधिकारी के हाथवाले उस अखबार की ओर, जिसमें उसका और एल्वीरा का नाम और बड़े शीर्षकों में 'बेरार्डो ज़िन्दाबाद!' था स्तब्ध होकर ताकने लगा।

अधिकारी ने बारम्बार कहा—'कुछ तो बोलो, भले आदमी!'

बेरार्डो ने कहा—'मैं नहीं बतला सकता। मर भले ही जाऊँ।'

पुलिस अधिकारी उसे समझाने-बुझाने लगा। लेकिन बेरार्डो का मन कहीं और था। वह न तो पुलिस अधिकारी को ही देख रहा था और न सुन ही रहा था। वह उस आदमी की तरह जिसने दान-पत्र लिख दिया हो और मरने को तैयार हो फिर अपनी काल-कोठरी में भेज दिया गया।

उस रात हम दोनो में से कोई न सोया।

बेरार्डो ने हाथों से इस तरह सिर थाम रखा था मानो फटा ही जाता हो। वह सब कुछ बतला देने का निर्णय करता। तब बदल देता। फिर इरादा करता फिर बदल देता। वह हाथों में इस तरह सिर थामे था कि कहीं फट न जाय। मैं जेल मे क्यों सड़ूँ? जेल में तीस वर्ष की उम्र में प्राण क्यों दूँ? विश्वास के लिए? एक आदर्श के लिए? लेकिन मैंने राजनीति में भाग लिया ही कब था? इसी तरह कई घण्टे बीत गये। बेरार्डो वॉयला अपने आप से और मुझसे बोलता रहा जब कि कोठरी मे का तीसरा आदमी कान लगाकर प्रत्येक शब्द सुनता रहा। उसके अन्दर एक सघर्ष हो रहा था।

वह कहने लगा—मेरे विश्वासघात करने से सब कुछ नष्ट हो जायेगा। मेरे विश्वासघात से फाएटामारा का सदा के लिए सर्वनाश हो जायेगा। यदि मैं विश्वासघात करता हूँ तो फिर से ऐसा अवसर आने के लिए शताब्दियाँ लग जायेंगी। और यदि मुझे मरना पड़े? . तो अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए मरनेवाला मैं पहला किसान हूँगा। दूसरे किसानों के लिए, किसानों की एकता के लिए, मरनेवाला पहला किसान!

यह उसकी सबसे बड़ी खोज थी। इस शब्द ने मानो उसकी आँखों पर से पट्टी हटा दी,। ऐसा लगा कि मानो हमारी कोठरी में एकाएक प्रकाश भर गया हो।

'एकता', वह कहने लगा। 'एकता क्या है? क्या तुमने कभी यह शब्द सुना था? यह एक नया शब्द है। एकता। यह है—मिल जुलकर रहना, सोचना और काम करना। यह है—शक्ति। यह है—स्वाधीनता। यह है—जमीन (बिना लगान की)। तुमने कभी यह शब्द सुना था? कैसी सीधी-सी बात है? तुम यह शब्द अवश्य ही फाएटामारा ले जाना। यदि मैं मर जाऊँ'—उसने मुझसे कहा—'तो तुम्हीं यह शब्द फाएटामारा ले जाना। एकता। वहाँ

तुम सबसे कहना—सबसे पहले राफेल स्कार्पोन से और तब दूसरे लोगों से, माइकेल जोम्पा, जनरल बाल्डीसेरा पाञ्जियो पिलाटो, एण्टोनियो रनाक्यो और बाकी सबसे कहना। एकता। किसानों के आपसी द्वेष का अन्त होना चाहिये। किसानों और मजदूरों के बीच द्वेष का अन्त हो। हममें केवल एक ही चीज की कमी है, वह है—एकता। बाकी सब अपने आप आ जायेगा।'

दो दिन बाद मैं पुलिस अधिकारी के सामने बुलाया गया, जो असाधारणतया नम्र था।

उसने मुझसे कहा—कल रात बेरार्डो वीयला ने आत्म हत्या कर ली। निराशा में उसने अपनी कोठरी के जंगले से लटककर फाँसी लगा ली। इसकी सत्यता में तो सन्देह नहीं, परन्तु कोई गवाह नहीं है। एक गवाह नितान्त आवश्यक है। क्या तुम इस आशय के लेखी बयान पर हस्ताक्षर करने को तैयार हो कि कल रात बेरार्डो ने खुद फाँसी लगा ली? अगर हस्ताक्षर कर दोगे तो तुम अविलम्ब रिहा कर दिये जाओगे।

बेरार्डो के मरने का सुनते ही मैं फूट-फूट कर रोने लगा।

अधिकारी ने एक लेखी बयान तैयार किया और मैंने बिना पढ़े ही उस पर दस्तखत कर दिये। तब मुझे पुलिस प्रधान के दफ्तर में ले गये।

'क्या मरा हुआ बेरार्डो वीयला तुम्हारा मित्र था?' उसने मुझसे पूछा।

'जी हाँ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि मृतक अक्सर आत्म हत्या करने की सोचा करता था?'

'जी हाँ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि हाल ही मृतक को प्रेम-सम्बन्धी एक गहरी निराशा का सामना करना पड़ा था?'

'जी हाँ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि मृतक और तुम एक ही कोठरी में मुँदे थे और जब तुम सो रहे थे वह जंगले की एक छड़ से फाँसी लटक गया?'

'जी हाँ।'

तब उसने मुझसे एक लेखी बयान पर दस्तखत करवाये और मुझे जाने दिया।

वहाँ से मैं 'न्याय महल' में न्याय मूर्ति के समक्ष पहुँचाया गया।

न्याय-मूर्ति ने मुझसे पूछा .

'क्या मृतक बेरार्डो वॉयला तुम्हारा मित्र था ?'

'जी हाँ ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि हाल ही मृतक को प्रेम सम्बन्धी भयकर निराशा का सामना करना पड़ा था ?'

'जी हाँ ।'

'क्या तुम स्वीकार करते हो कि मृतक और तुम एक ही कोठरी में मुँदे गये थे और जब तुम सो रहे थे वह जगले की एक छड़ से फाँसी लटक गया।'

'जी हाँ।'

उसने भी मुझसे एक लिखित बयान पर हस्ताक्षर करवाये और तब मुझे जाने दिया।

दोपहर को मेरी रिहाई हुई। मैं पहरे में स्टेशन लाया गया और यात्रा करने के अनिवार्य परवाने देकर अवेज़ानोवाली रेलगाड़ी मे बैठा दिया गया। अब बाक़ी का हाल तुम्हें मेरे पिताजी कहेंगे।

अभी मेरे लड़के ने तुम्हें जो कहा उसमें से बहुत कुछ हम उसके फाण्टा-मारा आने से पहले ही भेदी आदमी से मालूम कर चुके थे।

किसानों का अपना पत्र—किसानों का अपना पहला पत्र छापने के लिए भेदी आदमी से हमें मिले हुए छापने के पत्थर और दूसरे सामान के आस-पास हम कोई पन्द्रह-बीस आदमी जमा हुए ही थे कि ठीक उसी समय मेरा लड़का आ पहुँचा। एक लकड़ी की पेटी में, ढक्कन के नीचे लीथोग्राफ जैसा एक छापे का पत्थर और तेजाब और स्याही थी, जिनसे तुम सफेद कोरे काग़ज पर कोई-सी भी हाथ की लिखावट लिखकर छाप सकते थे और मन चाही प्रतियाँ निकाल सकते थे।

सड़क के बीच, सार्सानेरा की टेबल पर यह छापे का पत्थर रखे, जैसा कि मैंने तुम्हें बतलाया, हम कोई पन्द्रह-एक उसके आस पास जमा होकर पत्र की रूप रेखा के बारे में बहस कर रहे थे।

वहाँ पोंटाप्पिया का नायक था। उसकी लिखावट हम सब में साफ थी और वही सफ़ेद कोरे कागज पर लिखनेवाला था। जनरल बाल्डीसेरा भी, जो व्याकरण और हिज्जे जानता था, वहाँ था। राफेल स्कार्पोन भी वहाँ था, जिसे भेदी आदमी ने छापे के पत्थर का उपयोग करना समझाया था। और वहाँ मेरे और सार्रानेरा के सिवा एण्टोनियो ब्रास्योला, पास्केल छिपोला, ग्रिगोलि रोच्छा, विन्सेन्जो स्कॉर्जा, ग्यासिण्टो वालेंटा, ग्योवानी टेस्टोन, एनाक्लेटो दर्जा, एल्बर्टो सेकोन और माइकेल जोम्पा थे।

हमारी पहली बहस पत्र के नाम के बारे में थी।

पोंटाप्पिया का नायक शहर के पत्रों का-सा नाम जैसे 'सन्देश', 'जागृति' या ऐसा ही और कुछ चाहता था; लेकिन राफेल स्कार्पोन ने, जिसका बोलने और बहस करने का ढंग बिलकुल बेराहों जैसा था, उसे चुप कर दिया।

उसने कहा—हमारे पत्र में हम किसी की नक़ल नहीं करेंगे। यह अपने ढंग का पहला पत्र होगा।

माइकेल जोम्पा ने एक बहुत ही अच्छा अर्थ-गम्भीर नाम सुझाया, 'सत्य'।

लेकिन स्कार्पोन ने उसे भी नहीं माना।

उसने कहा—सत्य? सत्य को कौन कम्बख्त जानता है?

माइकेल ने जवाब दिया—हम नहीं जानते, पर हम जानना चाहते हैं।

स्कार्पोन ने पूछा—और जब जान लोगे तो उसका क्या करोगे—भाजी पकाओगे या शहद लगाकर चाटोगे?

यह था उसके बहस करने का ढंग।

जनरल बाल्डीसेरा को दूसरा अच्छा विचार सूझा: 'न्याय'।

स्कार्पोन ने कहा—तुम तो पागल हो। क्या न्याय सदा हमारे विरुद्ध नहीं रहा है?

उसके कहने का मतलब समझने के लिए तुम्हें ध्यान में रखना चाहिये कि हमारे लिए हमेशा 'न्याय' का मतलब था कफ़ायोनवाले। न्याय के हाथों पड़ने का मतलब था, कफ़ायोनवालों के हाथों पड़ना। न्याय के हक़ में फ़ैसला करने का अर्थ था कफ़ायोनवालों को मदद देनेवाले और उनके [illegible] रहना।

बूढ़े मोची ने अधीर होकर कहा—मेरा मतलब सच्चे न्याय से है। सबके लिए समान न्याय।

राफेल स्कार्पोन ने जवाब दिया—वह तुम्हें स्वर्ग में मिलेगा।

इसका कोई जवाब नहीं था पत्र के नाम के लिए बार्सानेरा का प्रस्ताव था 'किसानों का शंखनाद', लेकिन किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

स्कार्पोन ने कहा—हम क्या करें ?

नायक ने कहा—हमें एक अच्छा-सा नाम खोज निकालना चाहिये। तुम्हीं कुछ सुझाओ।

'मैं तो पहले ही कह चुका हूँ : 'हम क्या करें ?' '

उसके तीन बार दुहराने पर तब हमारी समझ मे आया कि स्कार्पोन का पत्र के नाम के लिए प्रस्ताव ही वास्तव म 'हम क्या करे ?' था ; हम विस्मय से एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

नायक ने कहा—लेकिन यह कोई नाम नहीं है। हमे पत्र के ऊपर ख़ूबसूरत लिखावट मे लिखने के लिए एक नाम चाहिये। समझे न ?

'बहुत अच्छा, तो तुम्हारी ख़ूबसूरत लिखावट में पत्र के ऊपर की ओर लिखो 'हम क्या करें ?' और यह हो जायगा तुम्हारा नाम।' स्कार्पोन ने कहा।

नायक ने आपत्ति की—लेकिन यह एक हास्यास्पद नाम है। यदि हमारे पत्र की एक प्रति रोम जायेगी तो वे लोग हँसेंगे।

राफेल स्कार्पोन का मिजाज बिगड़ गया। यह पत्र किसानों का पहला पत्र होनेवाला था, किसानों के लिए और किसानों द्वारा लिखा जानेवाला पहला किसान-पत्र। रोमवाले इसके बारे में कुछ भी सोचें, इस बात की उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी।

बाल्डीसेरा स्कार्पोन के विचारों से सहमत हो गया, इसलिए उसका प्रस्ताव मंजूर कर लिया गया।

इस बीच नायक अनिच्छापूर्वक बैठकर पत्र का नाम लिखने लगा और हम बाक़ी के लोग पहले लेख के बारे में बहस करने लगे।

माइकेल ज़ोम्पा ने कहा—पहला लेख होना चाहिये • 'उन्होंने बेराड़ो

वोयला को मार डाला।' इसे तुम सभी मंजूर करोगे।

स्कार्पोन ने इसे मंजूर कर लिया, लेकिन वह इसे यों चाहता था :

'उन्होंने बेरार्डो वोयला को मार डाला। हम क्या करें?'

माइकेल ने बतलाया—'हम क्या करें?' तो पहले ही अखबार के नाम में आ गया है।

स्कार्पोन ने कहा—एक बार काफी नहीं है। हमें इसे हर बार दुहराना चाहिये। यदि हम इसे नहीं दुहराते हैं तो नाम व्यर्थ है। 'हम क्या करें?' प्रत्येक लेख में दुहराया जाना चाहिये। 'उन्होंने हमारा पानी छीन लिया। हम क्या करें?' आया तुम्हारी समझ में? 'पादरी हमारे मुर्दे नहीं दफनाता। हम क्या करें?' 'वे क़ानून के नाम पर हमारी औरतों के साथ बलात्कार करते हैं। हम क्या करें?' 'डान सर्कोंस्टाञ्ज़ा दोगला है। हम क्या करें?'

तब स्कार्पोन का भाव हमारी समझ में आया और हम राजी हो गये।

बेरार्डो के नाम के बारे में भी एक छोटी-सी बहस हुई। बाल्डीसेरा का कहना था कि वोयला दो 'ल' से लिखा जाना चाहिये, पर माइकेल जोम्पा के विचार से एक ही 'ल' काफी था। लेकिन नायके ने यह कहकर बहस समाप्त कर दी कि वह इस ढंग से लिख सकता है जिसमें पढ़नेवालों की समझ में न आयेगा कि एक 'ल' है या दो।

जैसे ही मैंने देखा कि अब किसी चीज पर बहस करना बाकी नहीं है तो मैं अपने लड़के के साथ एकान्त में समय बिताने चला गया, क्योंकि मैं उसे खो ही चुका था और वह एक तरह से नया जन्म लेकर ही मेरे पास लौट आया था।

जब स्कार्पोन मेरे पास हमारे पत्र 'हम क्या करें?' की कोई तीस-एक प्रतियाँ लेकर आया तो रात काफी बीत चुकी थी। वह चाहता था कि मैं उन्हें सैन बेनेदेत्तो जाकर जहाँ मेरे कई परिचित थे बाँट आऊँ। दूसरे लोग भी उसी दिन दूसरे-दूसरे गाँवों में पत्र बाँटने जा रहे थे। कुल मिलाकर पाँच सौ प्रतियाँ छापी गई थीं।

मेरी घरवाली का परिवार सैन बेनेदेत्तो में रहता है, और हम तीनों ने

वहाँ जाकर जेल से मेरे पुत्र की रिहाई का उत्सव मनाना तै किया। वहाँ जाकर ही हमारी रक्षा हुई।

दूसरे दिन दोपहर बाद हम सैन वेनेदेतो के लिए रवाना हुए। पत्र बाँटने में मुझे आधा घण्टा लगा। उस रात हमने हमारा ब्यालू सैन वेनेदेतो में ही किया और नौ बजते-बजते फाण्टामारा की ओर चल दिये। हम आधी दूर आये होंगे कि हमे दूर से गोलियों की आवाज सुनाई दी।

'आज कौन से सन्त का दिन है?' मेरी घरवाली ने यह जानने के लिए कि गोलियों की आवाज कौन से गाँव से आ रही है पूछा।

वह कौन से सन्त का दिन था यह अनुमान करना कठिन था। सन्त लुई का दिन कभी से बीत गया था और सन्त एन के दिन को अभी काफी देर थी।

मैंने कहा—अरे, आवाज तो फाण्टामारा से आ रही है।

स्थानीय शहर की ओर से आता हुआ मैनाफोर्नो का एक गाड़ीवान उसी क्षण उधर से गुजरा।

'हेई, तुम फाण्टामारावासी!' वह बिना रुके ही चिल्लाया। 'फाण्टामारा में लड़ाई हो रही है।'

हम चलते ही गये।

'लड़ाई? लड़ाई क्यों?' हमने एक दूसरे से पूछा।

'फाण्टामारा के लोगों की आपस मे एक दूसरे से लड़ाई? यह असम्भव है।' हमने एक दूसरे से कहा।

तो क्या ठेकेदार फाण्टामारा के लोगों से युद्ध कर रहा है? पर क्यों?

जब तब गोलियाँ रुक जाती थीं और फिर चलने लगती थीं। जैसे-जैसे हम समीप पहुँचते गये साफ मालूम पड़ने लगा कि गोलियों की आवाज़ फाण्टामारा से आ रही है और वह आवाज राइफलों की थी।

'हम क्या करें?' हमने एक दूसरे से पूछा।

यही प्रश्न स्कार्पोन ने पूछा था। 'हम क्या करें?'

प्रश्न पूछने की अपेक्षा उत्तर देना कहीं कठिन था। साथ ही साथ हम चलते भी गये।

और न हमने किन्हीं दूसरों के बारे में ही—जो मर गये थे या जो भाग निकले थे, और न हमने हमारे मकान और न हमारी जमीन के बारे मे ही कुछ सुना।

अब हम यहाँ हैं। भेदी आदमी ने देश से निकलने में हमारी सहायता की। लेकिन हम अधिक समय तक विदेश में भी नहीं रह सकते। हम क्या करें!

इतने लम्बे संघर्ष और व्यथा और आँसुओं के बाद, चोटों और रक्त-पातों, घृणा और निराशा के बाद हम क्या करें? आखिर क्या करें?